धन्य कृष्न, धनि उरग, जानि जन कृपा करी हरि ।
धन्य[1] -धन्य दिन आजु, दरस तैं पाप गए जरि ॥
धन्य कंस, धनि कमल ये, धन्य कृष्न अवतार ।
बड़ी कृपा उरगहिँ करी, फन-प्रति चरन-बिहार ॥
सेस करत जिय गर्ब, अंड कौ भार सीस धरि ।
पूरन ब्रह्म अनंत, नाम को सकै पार करि ॥
फन-फन-प्रति अति भार भरि, अमित अंड-मय गात ।
उरग-नारि कर जोरि कै, कहति कृष्न सौँ बात ॥
देखत ब्रज-नर-नारि, नंद जसुदा समेत सब ।
संकर्षन सौँ कहत, सुनहु सुत कान्ह नहीं अब ॥
इहिँ अंतर जल कमल बिच, उठ्यौ कछुक अकुलाइ ।
रोवत तैँ बरजे सबै, मोहन अग्रज भाइ ॥
आवत हैँ वे स्याम, पुहुप काली-सिर लीन्हे ।
मात-पिता, ब्रज दुखित, जानि हरि दरसन दीन्हे ॥
निरतत काली-फननि पर, दिवि दुंदुभी बजाइ ।
नटवर बपु काछे रहे, सब देखे वह भाइ ॥
आवत देखे स्याम, हरष कीन्हौ ब्रजबासी ।
सोक[2] -सिंधु गयौ उतरि, सिंधु आनंद प्रकासी ॥
जल बूड़त नौका मिलैँ, ज्यौँ तनु होत अनंद ।
त्यौँ ब्रज-जन हुलसे सबै, आवत हैँ नँद-नंद ॥
सुत देखत पितु-मातु-रोम गदगद पुलकित भए ।

(१) धनि यह पावन नीर धन्य ब्रजवासि नर—६, १६, १८ । (२) सोक सिंधु बहि गयौ सुखै (सुख) को सिंधु प्रकासी—१, ११ ।

उर उपज्यौ आनंद, प्रेम-जल लोचन दुहुँ स्रवए ॥
दिवि दुंदुभी बजावहीँ, फन-प्रति निरतत स्याम ।
ब्रजबासी सब कहत हैँ, धन्य-धन्य बलराम ॥
उरग-नारि कर जोरि, करति अस्तुति सुख ठाढ़ो ।
गोपी जन अवलोकि, रूप वह अति रुचि बाढ़ो ॥
सुर अंबर ललना सहित, जै जै धुनि मुख गाइ ।
बड़ो कृपा इहिँ उरग कौं, ऐसी काहु न पाइ ॥
कृपा करी प्रहलाद, खंभ तैँ प्रगट भए तब ।
कृपा करी गज-काज, गरुड़ तजि धाइ गए जब ॥
द्रुपद-सुता कौं करी कृपा, बसन-समुद्र बढ़ाइ ।
नंद जसोदा जो कृपा, सोइ कृपा इहिँ पाइ ॥
तब काली कर जोरि, कह्यौ प्रभु गरुड़-त्रास मोहिँ ।
अब करिहै दंडवत, नैन भरि जब देखै तोहिँ ॥
चरन-चिन्ह दरसन करत, गहि रहिहै तुव पाइ ।
उरग-द्वीप कौँ करि बिदा, कह्यौ करौ सुख जाइ ॥
प्रभु यातैँ सुख कहा, चरन ते फन-फन परसे ।
रमा-हृदय जे बसत, सुरसरी सिव-सिर बरसे[1] ॥
जन्म-जन्म पावन भयौ, फन पद-चिन्ह धराइ ।
पाइ पर्‌यौ उरगिनि सहित, चल्यौ द्वीप समुहाइ ॥
काली पठयौ द्वीप, सुरनि सुर-लोक पठाए ।
आपुन आए निकसि, कमल सब तटहिँ धराए ॥

---

(१) हरषे—१, ३, ११ ।

जल तैं आए स्याम तब, मिले सखा सब धाइ।
मातु पिता दोउ धाइ कै, लीन्हौ कंठ लगाइ ॥
फेरि जन्म भयौ कान्ह, कहत लोचन भरि आए।
जहाँ तहाँ ब्रज-नारि-गोप आतुर ह्वै धाए ॥
अंकम भरि-भरि मिलत हैं, मनु निधनी धन पाइ।
मिली धाइ रोहिनि जननि, चूमति लेति बलाइ ॥
सखा दौरि कै मिले, गए हरि हम पर रिस करि।
धनि माता, धनि पिता, धन्य सो दिन जिहिं अवतरि ॥
तुम ब्रज-जीवन-प्रान हौ, यह सुनि हँसे गुपाल।
कूदि परे चढ़ि कदम तैं, तुम खेलत ये ख्याल ॥
काली ल्याए नाथि, कमल ताही पर ल्याए।
जैसी कहि गए स्याम, प्रगट सो हमहिं दिखाए ॥
कंस मर्‍यौ निहचय भई, हम जानी ब्रजराज।
सिंहिनि कौ छौना भलौ, कहा बड़ौ गजराज ॥
हरि हलधर तब मिले, हँसे मनहीं मन दोऊ।
बंधु मिलत सब कहत, भेद नहिं जानै कोऊ ॥
मातु पिता ब्रज-लोग सौं, हरषि कह्यौ नँदलाल।
आजु रहहु सब बसि इहाँ, मेटहु दुख जंजाल ॥
सुनि सबहिनि सुख कियौ, आजु रहियै जमुना-तट।
सीतल सलिल, सुगंध पवन, सुख-तरु बंसी बट ॥
नँद घर तैं मिष्टान्न बहु, षट्‌रस लिए मँगाइ।
महर गोप उपनंद जे, सब कौं दिए बँटाइ ॥
दुख कीन्हौ सब दूरि, तुरत सुख दियौ कन्हाई।

हरष भए ब्रज-लोग, कंस कौ डर बिसराई ॥
कमल-काज ब्रज मारतौ, कितने लेइ गनाइ ।
नृप-गज कौ अब डर कहा, प्रगट्यौ सिंह कन्हाइ ॥
नंद कह्यौ करि गर्ब, कंस कौं कमल पठावहु ।
और कमल जल धरहु, कमल कोटिक दै आवहु ॥
यह कहियौ मेरी कही, कमल पठाए कोटि ।
कोटि द्वै क जलहीँ धरे, यह बिनती इक छोटि ॥
अपनैं सम जे गोप, कमल तिन साथ चलाए ।
मन सबकैं आनंद, कान्ह जल तैं बचि आए ॥
खेलत-खात-अन्हात ही, बासर गयौ बिहाइ ।
सूर स्याम ब्रज-लोग कौं, [1]जहाँ तहाँ सुखदाइ ॥५८६॥१२०७॥

दावान-लपान-लीला राग मारू

† कमल सकटनि भरे ब्याल मानौ ।
स्याम के बचन सुनि, मनहिँ मन रह्यौ गुनि,
काठ ज्यौं गयौ[2] घुनि, तनु भुलानौ ॥
भयौ बेहाल, नँदलाल कैं ख्याल इहिँ,
उरग तैं बाँचि फिरि ब्रजहिँ आयौ ।
कह्यौ दावानलहिँ देखौं तेरे बलहिँ,
भस्म करि ब्रज[3] पलहिँ, कहि पठायौ ॥

---

(१) जहँ तहँ होत सहाइ—६, १७ ।

† यह पद कई प्रतियों में बड़ी "काली-दमन-लीला" के पहले रखा हुआ है और कई में "दावानल-पान-लीला" के आरभ में । हमें यह स्थान इसके लिये विशेष उपयुक्त प्रतीत होता है ।

(२) भयौ कहुँ—१६ । (३) घोप यह—१६ ।

चल्यौ रिस पाइ अतुराइ तब धाइ कै,
ब्रज-जननि[1] बन सहित जारि आऊँ ।
नृपति के लै पान, मन कियौ अभिमान,
करत अनुमान चहुँ पास धाऊँ ॥
बृंदाबन आदि, ब्रज आदि, गोकुल आदि[2],
आदि बुन्यादि सब अहिर जारौं ।
चल्यौ मग जात, कहि बात इतरात अति,
सूर-प्रभु सहित संघारि डारौं ॥५६०॥१२०८॥

* राग कान्हरौ

† दसहुँ दिसा तैं बरत-दवानल, आवत[3] है ब्रज-जन पर धायौ ।
ज्वाला उठी अकास बराबरि, घात आपनी सब करि पायौ ॥
बीरा लै आयौ सन्मुख तैं, आदर करि नृप कंस पठायौ ।
जारि करौं परलय छिन भीतर, ब्रज बपुरौ केतिक कहवायौ ॥
धरनि अकास भयौ परिपूरन, नैंकु नहीं कहुँ संधि बचायौ ।
सूर स्याम बलरामहिं मारन, गर्ब-सहित आतुर ह्वै आयौ ॥५६१॥
॥१२०९॥

⊛ राग कान्हरौ

दावानल ब्रज-जन पर धायौ ।
गोकुल ब्रज बृंदाबन तृन द्रुम, चहुँघा चहत जरायौ ॥
घेरत आवत दसहुँ दिसा तैं, अति कीन्हे तनु क्रोध ।

---

(१) लोग—१, ३, ६, ११ । (२) सहित नंद उपनंद सब ग्वार जारौं—१६ ।

* (ना) सारग । (का) मारू कर्का । † यह पद (पू) में नहीं है ।

(३) आतुर है—१८ । ⊛ (ना) मारू । (रा) गूजरी ।

नारी नर सब देखि चकित भए, दवा लग्यौ चहुँ कोद ॥
वह तौ असुर घात किए आवत, धावत बनहिँ[1] समाज ।
सूरदास ब्रज-लोग कहत यह, उठ्यौ दवानल आज ॥५६२॥१२१०॥

* राग कान्हरौ

आइ गई दव अतिहिँ निकटहीँ ।
यह जानत अब ब्रज न बाँचिहै, कहत चलौ जल-तटहीँ ॥
करि बिचार उठि चलन चहत हैँ, जो देखैँ चहुँ पास ।
चकित भए नरनारि जहाँ-तहँ, भरि-भरि लेत उसास ॥
झरझराति, भहराति लपट अति, देखियत नहीँ उबार ।
देखत सूर अग्नि अधिकानी, नभ लौँ पहुँची झार ॥५६३॥१२११॥

* राग कान्हरौ

† ब्रज के लोग उठे अकुलाइ ।
ज्वाला देखि अकास बराबरि, दसहुँ दिसा कहुँ पार न पाइ ॥
झरहरात बन-पात, गिरत तरु, धरनी तरकि तराकि सुनाइ ।
जल बरषत गिरिवर-तर बाँचे, अब कैसैँ गिरि[2] होत सहाइ ॥

---

(१) पवन समाज—१,२,३,११, १६,१८, १६ । बचन समाज—६ ।

* (ना) सारग । (का) सोरठ । (रा) सूहो बिलावल ।

* (ना) नट नाराइनी । (का) सोरठ ।

† इस तथा इसके पश्चात् के कई पदोँ मेँ गोवर्धन-धारण लीला का उल्लेख मिलता है । किंतु भागवत तथा सूरसागर की प्राप्त प्रतियोँ मेँ वह लीला दावानल-पान के पश्चात् कई लीलाओँ के अनतर आई है । अतः यहाँ काल-विरुद्ध दोष पड़ता है । सभव है, कवि ने गोवर्धन-धारण के पद प्रस्तुत प्रसग के पूर्व ही रचे होँ और सग्रहकारोँ ने श्रीमद्भागवत का अनुसरण करते हुए उन पदोँ को पीछे ला रखा हो । यह भी सभव है कि प्रकृति-वश कवि ने लीलाओँ के पूर्वापर-क्रम पर ध्यान ही न दिया हो ।

(२) करि—२,३ ।

लटकि जात जरि-जरि[1] द्रुम-बेली, पटकत बाँस, काँस, कुस, ताल।
उचटत भरि[2] अंगार गगन लौं, सूर निरखि ब्रज-जन बेहाल ॥५६४॥
॥१२१२॥

* राग कान्हरा

नंद-घरनि यह कहति पुकारे।
कोउ बरषत, कोउ अगिनि जरावत, दई परचौ है खोज हमारे ॥
तब गिरिवर कर धरचौ कन्हैया, अब न बाँचिहैं मारत जारे।
जेँवन करन चली जब भीतर, छीँक परी तो[3] आजु सबारे ॥
ताकौ फल तुरतहिँ इक पायौ, सो उबरचौ भयौ धर्म सहारे।
अब सबकौं[4] संहार होत है, छीँक[5] किए ये काज बिचारे ॥
कैसेहुँ ये बालक दोउ उबरैँ, पुनि-पुनि सोचति परी खभारे।
सूर स्याम यह कहत जननि सौं, रहि[6] री मा धीरज उर धारे ॥५६५॥
॥१२१३॥

* राग गौंड

भहरात भहरात दवा(नल) आयौ।
घेरि चहुँ ओर, करि सोर अंदोर बन, धरनि आकास चहुँ पास छायौ ॥
बरत बन-बाँस, थरहरत कुस काँस, जरि, उड़त है[7] भाँस, अति प्रबल धायौ।

---

① जरि बरि बेली जर—२। ज़र जर बेली जर—३, १४। ② फर—१, ६, ११, १७। फिरि—२। कर—१४।
* (ना) नट। (का) सोरठ।

③ तिय—१, ११। बिटिया जु—२। है—३। ही—१४। ④ इनकौ—३। ⑤ छीक किए यक काज विचारे—१, ११। ⑥ रहु री मइया धीरज धारो—१६।

* (ना) मारू। (का) सारंग। (रा) कान्हरा।
⑦ है बाँस—१ ... ११। ... —२। लै फॉम ...

झपटि[1] झपटत लपट, फूल-फल चट-चटकि, फटत, लटलटकि द्रुम द्रुमनवायौ
अति अगिनि-झार, भंभार धुंधार करि, उचटि अंगार झंझार छायौ[2]।
बरत बन पात, भहरात झहरात अररात तरु महा, धरनी[3] गिरायौ ॥
भए बेहाल सब ग्वाल ब्रज-बाल तब, सरन गोपाल कहिकै पुकारयौ ।
तृना केसी सकट बकी बक अघासुर, बाम कर राखि गिरि ज्यौं उबारयौ ॥
नैंकु धीरज करौ, जियहिँ कोउ जिनि डरौ, कहा[4] इहिँ सरौ, लोचन मुँदाए।
मुठो भरि लियौ, सब नाइ मुखहीँ दियौ, सूर प्रभु पियौ ब्रज-जन बचाए ॥
॥५६६॥१२१४॥

* राग गुं[illegible]

[5]दवानल अँचै ब्रज-जन बचायौ ।
धरनि आकास लौं ज्वाल-माला प्रबल घेरि चहुँपास ब्रजबास आयौ ॥
भए बेहाल सब देखि नँदलाल तब, हँसत ही ख्याल ततकाल कीन्हौ ।
सबनि मूँदे नैन, ताहि चितये सैन, तृषा ज्यौं नीर दव अँचै लीन्हौ ॥
लखौ अब नैन भरि, बुझि गई अगिनि-झरि, चितै नरनारि आनंद भारी ।
सूर प्रभु सुख दियौ, दवानल पी लियौ, कहत सब ग्वाल धनि-धनि मुरारी ॥
॥५६७॥१२१५॥

---

(१) झपटि झपटत लपट पटकि फूल फूटत फटि चटकि-लट लटकि द्रुमन बायौ—१ ।
झपटि झपटत पटचटकि कि चटकत चटकि लपटि लटकत [illegible]कि द्रुम नवायौ—२ ।
[illegible]टि झपय्त लपटि पटक फल फू[illegible] [illegible] लटक द्रुम ब[illegible] [illegible]चटक लट [illegible]
झपटि झपटत लपट पटकि फल फटत फटि चटचटकि लट लटकि द्रुम नवायो—६,१७ ।
झपटि झपटत लपट लपटति फूल फूटत फटि चट चटकि लट लटकि द्रुम दव नवायौ—११ ।
झपटि तलपट पटकि फल फुटत फटि चटकि चटकि द्रुम द्रुम नवायौ—१४ ।

(२) झार्‌यौ—२ । धायौ—३,१४ । बचायौ—६ । (३) धरि मान गार्‌यौ—२ । (४) कही यही टेरि लोचन मुँदाए—२ । कहौ यह सरै—१४ ।
* (न) मारू । (का,का, श्या) गुंडमलार । (रा) नट ।
(५) दावानल अँचयौ ब्रजराज ब्रजजन जरत बचायौ—१ ।

* राग बिहागरा

चकित देखि यह कहैं नर-नारी ।

धरनि अकास बराबरि ज्वाला, झपटति लपट करारो ॥

नहिं बरष्यौ, नहिं छिरक्यो काहू, कहँ धौं गई बिलाइ।

अति आघात करति बन-भीतर, कैसैं गई बुझाइ ॥

|| तृन को आगि बरतही बुझि गई, हँसि-हँसि कहत गोपाल ।

|| सुनहु सूर वह करनि कहनि यह, ऐसे प्रभु के ख्याल ॥५६८॥१२१६॥

⊛ राग बिलावल

जाकैं सदा सहाइ कन्हाई । ताहि कहौ काकौ डर भाई ॥

बन घर जहाँ तहाँ सँग डोलैं । खेलत खात सबनि सौं बोलैं ॥

जाकौ ध्यान न पावैं जोगी । सो ब्रज मैं माखन कौ भोगी ॥

जाकी माया त्रिभुवन छावे । सो जसुमति कैं प्रेम बँधावे ॥

मुनि जन जाकौ ध्यान न पावैं । ब्रज-जन लै-लै नाम बुलावैं ॥

सूर[1] ताहि सुर अंबर देखैं । जीवन जन्म सुफल करि लेखैं ॥५६९॥

॥१२१७॥

× राग कान्हरा

ब्रज-बनिता सब कहतिं परस्पर, नंद महर को सुत बड़ बीर ।

देखौ धौं पुरुषारथ इहिं को, अति कोमल है, स्याम सरीर ॥

---

* (ना) नट । (का) सोरठ । (रा) गूजरी ।

|| इन दो चरणों के स्थान पर (के) में ये चार चार हैं ।

तृन की आगि बरत ही बुझ गइ नहिं जानत ब्रज लोग ।
कहाँ बसे इक दिवस रैनि भरि भयौ इहै सजोग ।
इहिं जानत हम ऐसेहि ब्रज मैं वैसेहि करत बिहार ।
सूर स्याम जननी सौं माँगत माखन बारंबार ॥

⊛ (रा) गौरी ।

① सूरज ताहि अमर सुर देखे—६, १७ ।

× (ना) सकरा भरन। (का) आसावरी ।

गयौ पताल उरग गहि आन्यौ, ल्यायौ तापर कमल लदाइ ।
कमल-काज नृप ब्रज-मारत हो, कोटि जलज तिहिँ दिए पठाइ ॥
दावागिनि नभ-धरनि-बराबरि, दसहुँ दिसा तैँ लीन्हौ घेरि ।
नैन मुँदाइ कहा तिहिँ कीन्हौ, कहूँ नहीँ जो देखैँ हेरि ।
ये उतपात मिटत इनहीँ पैँ, कंस कहा बपुरौ है छार ।
सूर स्याम अवतार बड़ौ ब्रज, येई हैँ कर्त्ता संसार ॥६००॥१२१८॥

* राग सोरठ

अति सुंदर नँद महर-ढुटौना ।
निरखि-निरखि ब्रज-नारि कहतिँ सब, यह जानत कछु टौना ॥
कपट रूप की त्रिया निपाती, तबहिँ रह्यौ अति छौना ।
द्वार सिला पर पटकि तृना कौँ, ह्वै आयौ जो[1] पौना ॥
अघा बकासुर तबहिँ सँहारयौ, प्रथम कियौ बन-गौना ।
सूर प्रगट गिरि धरयौ बाम कर, हम जानतिँ बलि बौना ॥
॥६०१॥१२१६॥

* राग मारू

दवा तैँ जरत ब्रज-जन उबारे ।
पैठि जल गए गहि उरग आने नाथि, प्रगट फन-फननि-प्रति चरन धारे ॥
देखि मुनि-लोक, सुर-लोक, सिव-लोक के, नंद-जसुमति-हेत-बस मुरारी ।
जहाँ तहँ करत अस्तुति मुखनि देव-नर, धन्य-जै-सब्द तिहुँ भुवन भारी ॥

---

*(ना) सुघराई । (रा) कान्हरा ।

(१) अब—१ । वह—२,३, ६,११, १४ ।

*(का) मारुकर्का । (रा) कान्हरा ।

सुख कियौ जमुन-तट एक दिन-रैनि बसि, प्रातहीँ ब्रज गईं गोप-नारी ।
सूर प्रभु स्याम-बलराम नँद-धाम गए, मातु-पितु घोष-जननि सुखकारी ॥
॥६०२॥१२२०॥

* राग रामकली

† हरि ब्रज-जन के दुख-बिसरावन ।
कहाँ कंस, कब कमल मँगाए, कहाँ दवानल-दावन ॥
जल कब गिरे, उरग कब नाथ्यौ, नहिँ जानत ब्रज-लोग ।
कहाँ बसे इक दिवस रैनि भरि, कबहिँ भयौ यह सोग ॥
यह जानत हम ऐसेहिँ ब्रज मैँ, वैसेहिँ करत बिहार ।
सूर स्याम जननी सौँ माँगत, माखन बारंबार ॥
॥६०३॥१२२१॥

प्रलंब-वध

❀ राग आसावरी

‡ एक दिवस दानव प्रलंब कौँ, लीन्हौ कंस बुलाइ ।
कह्यौ जाइ मारौ नँद-ढोटा, दैहौँ बहुत बड़ाइ ॥
माया-बपु धरि गोप-पुत्र ह्वै, चल्यौ सु ब्रज-समुहाइ ।
बल-मोहन खेलत ग्वालनि सँग, देख्यौ तिनकौँ आइ ॥
ग्वाल-रूप ह्वै मिल्यौ निसाचर, हलधर सैन बताई ।

---

* (ना) मालकौस । (का) सोरठ । (रा) गूजरी ।

† यह पद (द्व, काँ, श्या) मेँ नहीँ है ।

❀ (काँ, रा, श्या) भैरव ।

‡ यह पद (ना, स, काँ, रा, श्या) मेँ है । भागवत में प्रलंब का वध बलराम ने किया है। परंतु सूरदासजी ने कृष्ण के द्वारा उसका वध कराया है। (वे, शा, द्व, गो, जौ) मेँ भी प्रलंबवध शीर्षक एक पद मिलता है, परंतु उसकी प्रथम दो पंक्तियों को छोड़कर शेष पद में केशी-वध का वर्णन पाया जाता है। इस संस्करण मेँ प्रलंब-वध का पाठ (ना, स, काँ, रा, श्या) के अनुसार रखा गया है और (वे, शा, द्व, गो, जौ) के पाठ को केशी-वध के प्रसंग में रख दिया गया है ।

मनमोहन मन मैं मुसुक्याने, खेलत भलैं[1] जनाई ॥
द्वै बालक बैठारि सयाने, खेल रच्यौ ब्रज-खोरी ।
और सखा सब जुरि-जुरि ठाढ़े, आपु दनुज-सँग जोरी ॥
तबहिं प्रलंब बड़ौ बपु धारयौ[2], लै गयौ पीठि चढ़ाइ ।
उतरि परे हरि ता ऊपर तैं, कीन्हौ जुद्ध बनाइ ॥
और सखा सब रोवत धाए, आइ गए नरनारि ।
धाए नंद, जसोदा धाई, नित प्रति कहा गुहारि ॥
ग्वाल-रूप इक खेलत हो सँग, लै गयौ काँधैं डारि ।
ना जानियै आहि धौं को वह, ग्वाल-रूप-बपु धारि ॥
जसुमति तब अकुलाइ परी, धर तन की सुधि बिसराई ।
नंद पुकारत आरत, ब्याकुल, टेरत फिरत[3] कन्हाई ॥
दैत्य[4] सँहारि कृष्न तहँ आए, ब्रज-जन दिए[5] जिवाइ ।
दौरि नंद उर लाइ लए[6] हरि, मिली जसोमति माइ ॥
खेलत रह्यौ संग मिलि मेरैं, लै उड़ि गयौ अकास ।
आपुन ही गिरि परयौ धरनि पर, मैं उबरयौ तिहिं पास ॥
उर डरात जिय बात कहत हरि, आए हैं उठि पास ।
सूर स्याम जसुमति घर[7] लै गई, ब्रज-जन-मनहि हुलास ॥

॥६०४॥१२२२॥

* राग सारंग

जसुमति बूझति फिरति गोपालहिं ।
साँझ की बिरियाँ भई सखी री, मैं डरपति जंजालहिं ॥

---

(१) भलैं बताई--२। भली जनाई--३,१६। (२) काछ्यौ--२, १६। (३) कुँवर--३। (४) असुर--२। (५) मरत--२, १६। (६) मिले सुत--२, १६। (७) गहि--२।

* (ना) जैतश्री। (के) नट। (कॉ, रा, श्या) धनाश्री।

जब तैं तृनावर्त्त ब्रज आयौ, तब तैं मो जिय संक।
नैननि ओट होत पल एकौ, मे[1] मन भरति अतंक[2]॥
इहिँ अंतर बालक सब आए, नंदहिँ करत गुहारि।
सूर स्याम कौं आइ कौन धौं, लै गयौ काँधै डारि॥६०५॥१२२३॥

* राग कान्हरा

आजु कन्हैया बहुत बच्यौ री।
खेलत रह्यौ घोष कैं बाहर, कोउ आयौ सिसु-रूप रच्यौ री॥
मिलि गयौ आइ[3] सखा की नाईं, लै चढ़ाइ हरि कंध[4] सच्यौ री।
गगन उड़ाइ गयौ लै स्यामहिँ, आनि धरनि पर आप दच्यौ री॥
धर्म सहाइ होत है जहँ तहँ, स्रम करी पूरब पुन्य पच्यौ[5] री।
सूर स्याम अब कैं बचि आए, ब्रज-घर-घर सुख[6]-सिंधु मच्यौ री॥
॥६०६॥१२२४॥

* राग कान्हरा

बड़े भाग्य हैं महर महरि के।
लै गयौ पीठि चढ़ाइ असुर इक, कहा कहौं उबरन[7] या हरि के॥
नंदघरनि कुल-देव मनावति, तुम हीँ[8] रच्छक घरी-पहर के।
जहँ-तहँ तुमहिँ सहाइ सदा हौ, जीवन हैं ये स्याम सहर के॥
हरष भए नँद करत बधाई, दान देन कहा कहौं महर[9] के।

---

(१) मो—२। मम—३। (२) अदक—१, ११।
* (ना) बिलावल। (रा) धनाश्री।
(३) मनहिँ—१, ११, १७। मनौ—२। (४) पीठि—२।
(५) वच्यौ—१, २, ११, १७। (६) सब सुखहिँ—१, ११।
* (ना) गूजरी। (रा) आसावरी।
(७) उबरनि या हरि की (के)—१,२,३,११,१४। (८) तुमहि लाज सुत घरी पहर की (के)—१, २, ३, ६, ११, १५, १८, १६। तुमहि सुरति नहिँ घरी पहर की—६, १७। (९) बहर—३, ६, १७।

पंच-सब्द-धुनि बाजत, नाचत, गावत मंगलचार-चहर के ॥
अंकम भरि-भरि लेत स्याम कौं, ब्रज-नर-नारि अतिहिँ मन हरषे ।
सूर स्याम संतनि सुखदायक, दुष्टनि कै उर सालक करषे ।
॥६०७॥१२२५॥

* राग सारंग

खेलन दूरि जात कत प्यारे ।
जब तैं जनम भयौ है तेरौ, तबही तैं यह भाँति ललारे ॥
कोउ आवति जुवती मिस[1] करि कै, कोउ लै जात बतास-कला रे ।
अब लगि बचे कृपा देवनि की, बहुत गए मरि सत्रु तुम्हारे ॥
हा हा करति पाइ तेरे लागति, अब जनि दूरि जाहु मेरे बारे[2] ।
सुनहु सूर जसुमति सुत बोधति, बिधि के चरित सबै हैं न्यारे ॥
॥६०८॥१२२६॥

* राग कल्यान

† कब की टेरति कुँवर कन्हाई ।
ग्वाल सखा सब टेरत ठाढ़े, अरु अग्रज बल भाई ॥
दाऊ जू तुम ह्याँ नहिँ आवत, करौ मुखारी आइ ।
माता दुहुँनि दतौनी कर दै, जलझारी भरि ल्याइ ॥
उत्तम बिधि सौँ मुख पखरायौ, ओदे[3] बसन अँगौछि ।
दोउ भैया कछु करौ कलेऊ, लई बलाइ कर औँछि ॥

---

*(ना) ललित ।
① रिस—१६ । ② प्यारे —१ ।

* (ना) देवगिरि । (के, गो, क, जौ, कॉ, पू, रा, श्या) रामकली ।

† यह पद (का) में नहीं है ।
③ पुनि लै—१६,१८,१६

सद माखन दधि तुरत जमायौ, मधु मेवा मिष्टान्न ।
सूर स्याम बलराम संग मिलि, रुचि करि लागे खान ॥
॥६०६॥१२२७॥

* राग नट

† चले बन धेनु चारन कान्ह ।
गोप-बालक कछु सयाने, नंद के सुत नान्ह ॥
हरष सौं जसुमति पठाए, स्याम-मन आनंद ।
गाइ गो-सुत गोप बालक, मध्य श्री नँद-नंद ॥
सखा हरि कौं यह सिखावत, छाँड़ि जिनि कहुँ जाहु ।
सघन बृंदाबन अगम अति, जाइ कहुँ[1] न भुलाहु ॥
सूर के प्रभु हँसत मन मैं, सुनत हीं यह बात ।
मैं[2] कहूँ नहिं संग छाँड़ौं, बनहिं बहुत डरात ॥६१०॥१२२८॥

* राग धनाश्री

हेरी देत चले सब बालक ।
आनँद सहित जात हरि खेलत, संग मिले[3] पशु-पालक ॥
कोउ गावत, कोउ बेनु बजावत, कोउ नाचत, कोउ धावत ।
किलकत कान्ह देखि यह कौतुक, हरषि सखा उर लावत ॥
भली करी तुम मोकौं ल्याए, मैया हरषि पठाए ।
गोधन-बृंद लिए ब्रज - बालक, जमुना - तट पहुँचाए ॥

---

* (ना) आसावरी । (क, रा) सारंग ।
† यह पद (का) में नहीं है ।
① कहूँ भुलाहु—१,११,१६ ।
② नैकहूँ—२, १६ ।
* (ना) जोगिया आसावरी । (रा) आसावरी ।
③—चले—१४ ।

चरतिँ धेनु अपनैँ-अपनैँ रँग, अतिहिँ[1] सघन बन[2] चारौ ।
सूर संग मिलि गाइ चरावत, जसुमति कौ सुत बारौ ॥६११॥१२२९॥

* राग देवगंधार

† द्रुम चढ़ि काहे न टेरौ कान्हा, गैयाँ दूरि गईँ ।
धाई जातिँ सबनि के आगैँ, जे बृषभानु दईँ ॥
घेरे घिरतिँ न तुम बिनु माधौ, मिलतिँ न[3] बेगि दईं ।
बिडरतिँ फिरतिँ सकल बन महियाँ, एकै एक भईँ ॥
छाँड़ि खेड़[4] सब दौरि जात हैँ, बोलौ ज्यौँ सिखईँ ।
सूरदास प्रभु-प्रेम समुझि कै, मुरली सुनि आइ गईँ ॥६१२॥१२३०॥

* राग मारू

‡ कहि-कहि टेरत धौरी कारी ।
देखौ धन्य भाग गाइनि के, प्रीति करत बनवारी ॥
मोटी भईँ चरत बृंदाबन, नंद-कुँवर की पालीँ ।
काहे न दूध देहिँ ब्रज-पोषन[5], हस्त-कमल की लालीँ ॥
बेनु स्रवन सुनि, गोबर्धन तैँ, तृन[6] दंतनि धरि चालीँ ।
आईँ[7] बेगि सूर के प्रभु पै, ते क्यौँ भजैँ[8] जे पालीँ ॥
॥६१३॥१२३१॥

---

(१) बननि सघन तृन चारौ—६ । (२) द्रुम—२ । तृन—३, ६ ।

*(ना) सारंग वृंदावनी । (रा) नट केदारा ।

† यह पद (का, के, पू) में नहीँ है ।

(३) नहीँ बगदईँ—१, २, ३, ११ । (४) खेल सब दुरी—१, ११ । गैल—३ ।

*(ना) मालकौश । (गो) नट । (रा) केदारा ।

‡ यह पद (ल, का, के, पू) में नहीँ है ।

(५) पोषी—३ । पोषैँ—१६ । (६) तृन दीन्हौ धरि चाली—१, २, ११ । (७) बेगि आई तब सूरज प्रभु पै—२ । (८) रहैँ—१६ ।

* राग कल्यान

† जब सब गाइ भईं इक ठाईं । ग्वालनि घर कौं घेरि चलाईं ॥
मारग मैं तब उपजी आगि । दसहूँ दिसा जरन सब लागि ॥
ग्वाल डरपि हरि पैं कह्यौ आइ । सूर राखि अब त्रिभुवन-राइ ॥

॥६१४॥१२३२॥

● राग कान्हरौ

‡ अब कैं राखि लेहु गोपाल ।
दसहूँ दिसा दुसह दवागिनि, उपजी है इहिं काल ॥
पटकत बाँस, काँस कुस चटकत, लटकत ताल तमाल ।
उचटत अति अंगार, फुटत फर, झपटत लपट कराल ॥
धूम धूँधि बाढ़ी धर अंबर, चमकत बिच[1]-बिच ज्वाल ।
हरिन, बराह, मोर, चातक[2], पिक, जरत जीव बेहाल ॥
जनि जिय डरहु, नैन मूँदहु सब, हँसि बोले नँदलाल[3] ।
सूर अगिनि सब बदन समानी, अभय किए ब्रज-बाल ॥६१५॥१२३३॥

× राग गौरी

साँवरौ मनमोहन माई ।
देखि सखी बन तैं ब्रज आवत, सुंदर नंद-कुमार कन्हाई ॥

---

* (ना) सारग । (गो) गौरी । (रा) मारू ।

† यह पद (स, ल, का, के, पू) में नहीं है ।

● (ना) गौरी जैती । (कॉ, श्या) सारग । (रा) आसावरी ।

‡ यह पद अनेक प्रतियों में "प्रथम दावानल-पान" के प्रसग में प्राप्त होता है । किंतु (ना) में यह यहीं रखा गया है । इसका यहीं होना समीचीन है, क्योंकि इसके यहाँ न रहने से द्वितीय 'दावानल-पान" का कोई विवरण न मिल सकेगा । श्रीमद्भागवत में यह प्रसग इसी रूप में यहाँ मिलता है । अत. इस सस्करण में यहीं रखा गया है ।

① उलमुख ज्वाल—६, १७, १६ । ② सारस—२, १६ । ③ गोपाल—१ ।

× (रा) आसावरी ।

मोर-पंख[1] सिर मुकुट बिराजत, मुख मुरली-धुनि सुभग सुहाई।
कुंडल लोल, कपोलनि की छबि, मधुरी बोलनि बरनि न जाई॥
लोचन ललित, ललाट भृकुटि बिच तकि मृगमद की रेख बनाई।
मनु मरजाद उलंघि अधिक बल[2] उमँगि चली अति[3] सुंदरताई॥
कुंचित केस सुदेस, कमल[4] पर मनु मधुपनि-माला पहिराई।
मंद-मंद मुसुक्यानि, मनौ घन, दामिनि दुरि-दुरि देति दिखाई॥
सोभित सूर निकट नासा के अनुपम अधरनि की अरुनाई।
मनु सुक सुरँग बिलोकि बिंब-फल चाखन कारन चोंच चलाई॥

॥६१६॥१२३४॥

राग गौरी

† देखौ री नँद-नंदन आवत।
बृंदाबन तैं धेनु-बृंद मैं बेनु अधर धरे गावत॥
तन घन स्याम कमल-दल-लोचन अंग अंग छबि पावत।
कारी गोरी धौरी धूमरि लै लै नाम बुलावत॥

---

(१) चद—२, १६। पच्छ—१७। (२) छबि—६, १७। (३) इह—६, १७। (४) बदन—१, ६, ८, ११, १५, १७।

† यह पद (वे, स, ल, शा, का, के, गो, जौ, पू) में है। इनमें (वे, का, गो, जौ) के पाठ प्रायः मिलते हैं। पर (स, के, पू) के पाठ सर्वथा भिन्न हैं। अतः (वे, का, गो, जौ) के अनुसार पाठ शुद्ध करके ऊपर दिया गया है। और (स, के, पू) के पाठ ज्यों के त्यों यहाँ दे दिए जाते हैं—

(स) का पाठ

वै देखौ नद के नँद आवत।
बृदाबन में गऊ चरावत,
कर धरि बेन बजावत॥
सु दर स्याम कमल-दल लोचन,
जसुमति के जिय भावत।
कारी गोरी धौरी धूमरि,
लै लै, नाव बुलावत॥
बाल गुपाल सखा सब लीन्हे,
दूध पतूखनि प्यावत।
सूरदास प्रभु मिलौ कृपा करि,
धीरज प्रेम बढावत॥

(के, पू) का पाठ

देखौ माई नदनदन आवत।
बृदाबन ते धेनु-बृद मैं,
बेनु अधर धरे गावत॥
घन तन स्याम कमल दल लोचन,
अग अग छबि पावत।
बाल गुपाल सखा सब सोभित,
मिलि कै जत्र बजावत॥
गोप बधू मिलि निरखत ही मुख,
गोपी प्रेम बढावत।
सूरत कारी गोरी धूमरि,
लै लै नाम बुलावत॥

बाल गोपाल संग सब सोभित मिलि कर-पत्र बजावत ।
सूरदास मुख निरखतहीं सुख गोपी प्रेम बढ़ावत ॥६१७॥१२३५॥

* राग गौरी

† रजनी-मुख बन तैं बने[1] आवत, भावति मंद[2] गयंद की लटकनि ।
बालक-बृंद बिनोद-हँसावत, करतल लकुट धेनु की हटकनि ॥
बिगसित गोपी मनौ कुमुद सर, रूप-सुधा लोचन-पुट घटकनि ।
पूरन कला उदित मनु उड़पति, तिहिं छन बिरह-तिमिर[3] की झटकनि[4] ॥
लज्जित मनमथ निरखि बिमल छबि, रसिक रंग भौंहनि की मटकनि ।
मोहनलाल, छबीलौ गिरिधर, सूरदास बलि नागर नटकनि ॥
॥६१८॥१२३६॥

⊛ राग बिलावल

‡ जागिये गोपाल लाल, प्रगट भई अंसु[5]-माल,
मिट्यौ अंधकाल, उठौ जननी[6] - सुखदाई ।
मुकुलित भए कमल-जाल, कुमुद-बृंद-बन बिहाल,
मेटहु जंजाल, त्रिबिध ताप तन नसाई ॥
ठाढ़े सब सखा द्वार, कहत नंद के कुमार,
टेरत हैं बार बार, आइये कन्हाई ।

---

४. (ना) श्री । (रा) कल्यान । † यह पद (का) में नहीं है । ① बनि—३, ६ । चले–११ । ② मत्त—१४ । ③ व्यथा— १, ११, १७ । ④ चटकनि— १, ६, ११, १४, १५, १७ । * (ना) चर्चरी । (क) रामकली । (जौ) गौरी । (रा) भैरव । ‡ यह पद (का) में नहीं है । ⑤ हंस—१, ३, ६, ११, १५, १७ । ⑥ जननि मुख दिखाई—१, ६, ११, १४ ।

गैयनि भई बड़ी बार, भरि-भरि पय थननि भार,

बछरा-गन करैं पुकार, तुम बिनु जदुराई ॥

तातैं यह अटक परी, दुहन-काज सौंह करी,

आवहु उठि क्यौं न हरी, बोलत बल-भाई ।

मुख तैं पट झटकि डारि, चंद-बदन दियौ उघारि,

जसुमति बलिहारि वारि, लोचन-सुखदाई ॥

धेनु दुहन चले धाइ, रोहिनी[1] लई बुलाइ,

दोहनि मोहिं दै मँगाइ, तबहीं लै आई ।

बछरा दियौ थन लगाइ, दुहत बैठि कै कन्हाइ,

हँसत नंदराइ, तहाँ मातु दोउ आई ॥

दोहनि कहुँ दूध-धार, सिखवत नँद बार-बार,

यह छबि नहिं वार-पार, नंद-घर बधाई ।

हलधर तब कह्यौ सुनाइ, धेनु[2] बन चलौ लिवाइ,

मेवा लीन्हौ मँगाइ, बिबिध-रस मिठाई ॥

जेँवत बलराम-स्याम, संतनि के सुखद धाम,

धेनु-काज नहिं बिराम, जसुदा जल ल्याई ।

स्याम-राम मुख पखारि, ग्वाल-बाल लिए हँकारि,

जमुना-तट मन बिचारि, गाइनि हँकराई ॥

|| स्टृंग-बेनु-नाद करत, मुरली[3] मधु अधर धरत,

जननी-मन हरत, ग्वाल गावत सुघराई ।

---

(१) तब लै—१, ११ । (२) गाइनि—१, ११ ।

|| यह चरण (के,पू) में नहीं है । २, ३, १४, १६ ।

(३) मुरली सुर मधुर धरत—

वृंदावन तुरत जाइ, धेनु चरतिँ तृन अघाइ,
स्याम हरष पाइ, निरखि सूरज बलि जाई ॥
॥६१६॥१२३७॥

मुरली-स्तुति

❋ राग सारंग

† जब हरि मुरली अधर धरत ।
‖ थिर चर, चर थिर, पवन थकित रहैँ, जमुना-जल न बहत ॥
खग मोहैँ, मृग-जूथ भुलाहीँ, निरखि मदन-छबि छरत ।
पसु मोहैँ, सुरभी बिथकित, तृन दंतनि टेकि रहत ॥
सुक सनकादि सकल मुनि मोहैँ, ध्यान[1] न तनक गहत ।
सूरजदास भाग हैं तिनके, जे या सुखहिँ लहत ॥६२०॥१२३८॥

⊛ राग बिहागरा

‡ (कहाँ कहा) अंगनि की सुधि बिसरि गईँ ।
स्याम-अधर मृदु सुनत मुरलिका, चक्रित नारि भईँ ॥
जो जैसैँ सो तैसैँ रहि गईँ, सुख-दुख कह्यौ न जाइ ।
लिखी चित्र सी सूर सु ह्वै रहिँ, इकटक पल बिसराइ ॥६२१॥१२३९॥

× राग मलार

सुनत बन मुरली-धुनि की बाजन ।
पपिहा गुंज, कोकिल बन कूँजत, अरु मोरनि कियौ गाजन ॥
यहै सब्द सुनियत गोकुल मैँ, मोहन-रूप बिराजन ।
सूरदास प्रभु मिली[2] राधिका, अंग अंग करि साजन ॥६२२॥१२४०॥

❋ (ना) सुघराई ।
† यह पद (का, के, पू) मेँ नहीँ है ।
‖ यह चरण (वे, ना, गो, जी, काँ, रा, श्या) मेँ नहीँ है ।
(1) ध्यानिउ ध्यान यहत—१ । ध्यान न तनक रहत—३, १६ । ध्यानिउ ध्यान नवत—११ ।
⊛ (ना) सारग ब्रिंदावनी । (गो) बिहागरा । (रा) आसावरी ।
‡ यह पद (वे, ना, स, शा, गो, जी, श्या) मेँ है ।
× (ना) नट नाराइनी ।
§ यह पद (वे, ना, शा, वृ, गो, जो, काँ, ग, श्या) मेँ है ।
(2) पगी—२ ।

* राग मारू

† मेरे साँवरे जब मुरली अधर धरी। सुनि सिध-समाधि टरी।
सुनि थके देव बिमान। सुर-बधू चित्र-समान।
ग्रह-नखत तजत न रास। बाहन बँधे धुनि-पास।
चल थाके, अचल टरे। सुनि आनँद-उमँग भरे।
चर-अचर-गति बिपरीति। सुनि बेनु-कल्पित गीति।
झरना न झरत पषान। गंधर्ब मोहे गान।
सुनि खग मृग मौन धरे। फल-तृन की सुधि बिसरे।
सुनि धेनु धुनि थकि रहति। तृन दंतहू नहिं गहति।
बछरा न पीवैं छीर। पंछी न मन मैं धीर।
बेलीद्रुम चपल भए। सुनि पल्लव प्रगटि नए।
सुनि बिटप चंचल पात। अति निकट कौं अकुलात।
आकुलित पुलकित गात। अनुराग नैन चुचात।
सुनि चंचल पौन थक्यौ। सरिता जल चलि न सक्यौ।
सुनि धुनि चलीं ब्रजनारि। सुत-देह-गेह बिसारि।
अति थकित भयौ समीर। उलट्यौ जु जमुना-नीर।
मन मोह्यौ मदन गुपाल। तन स्याम, नैन बिसाल।
नवनील-तन-घनस्याम। नव पीत पट अभिराम।
नव मुकुट नव बन-दाम। लावन्य कोटिक काम।
मनमोहन रूप धर्‍यौ। तब गरब अनंग हर्‍यौ।
श्री मदन मोहन लाल। सँग नागरी ब्रज-बाल।
नव कुंज जमुना-कूल। जन सूर देखत फूल ॥६२३॥१२४१॥

* (ना) कामोद। (कृ, जौ) य सासूहौ। (पू) सूहो।
† यह पद (का) में नहीं है। इसके पाठ और छंद में विभिन्न प्रतियों में कुछ व्यतिक्रम पाया जाता है। इस संस्करण में शुद्ध पाठ रखने की चेष्टा की गई है।

* राग पूर्वी

† तरु तमाल तरे त्रिभंगी कान्ह कुँवर, ठाढ़े हैं साँवरे सुबरन ।
मोर-मुकुट, पीतांबर, बनमाला, राजत उर, ब्रज-जन-मन-हरन ॥
सखा-अंसु पर भुज दीन्हे, लीन्हे, मुरलि, अधर मधुर, बिस्व-भरन ।
सूरदास कमल-नयन को न किए, बस, बिलोकि गोबर्धन-धरन ॥
॥६२४॥१२४२॥

* राग बिलावल

‡ स्याम-हृदय बर मोतिनि-माला । बिथकित भईं निरखि ब्रज-बाला ॥
स्रवन थके सुनि बचन रसाला । नैन थके दरसन नँद-लाला ॥
कंबु-कंठ, भुज नैन[1] बिसाला । कर केयुर कंचन नग-जाला[2] ॥
पल्लव हस्त मुद्रिका भ्राजै । कौस्तुभ मनि हृदयस्थल छाजै ॥
रोमावली बरनि नहिं जाई । नाभिस्थल की सुंदरताई ॥
कटि किंकिनी चंद्रमनि-संजुत । पीतांबर, कटि-तट छबि अद्भुत ॥
जुगल जंघ की पटतर को है । तरुनी-मन धीरज कौं जोहै ॥
जानि जानु की छबि न सम्हारै[3] । नारि-निकर मन बुद्धि बिचारै ॥
रतन जटित कंचन कल नूपुर । मंद-मंद गति चलत मधुर सुर ॥
जुगल कमल-पद नख मनि-आभा[4] । संतनि-मन संतत[5] यह लाभा ॥
जो जिहिं अंग सु तहाँ भुलानी । सूर स्याम-गति काहु न जानी ॥
॥६२५॥१२४३॥

---

* (ना) सकराभरन। (काँ) मारू।

† यह पद (का) में नहीं है। इसके पाठ भिन्न-भिन्न प्रतियों में वडे अनमिल हैं। सब प्रतियों का मिलान कर तथा छद पर ध्यान रखते हुए ऊपर लिखा पाठ निर्धारित किया गया है।

* (ना, सोरठि। (रा)आसावरी।

‡ यह पद (का) में नहीं है।

(१) दढ—२, ३, ६, १४, १६। (२) छाला—२। झाला—३, ६, १४ १६। (३) निहारै—६। (४) सोभा—१४। (५) सपति जिहिं लाभा—२। सतति जो लाभा—३। सतत जहँ लाभा—६। सतत जहँ लोभा—१४।

* राग गौरी

† नंद-नँदन मुख देखौ माई ।

अंग-अंग-छबि मनहुँ उये रबि, ससि[1] अरु समर लजाई ॥
खंजन[2] मीन, भृंग, बारिज, मृग-पर दृग अति रुचि पाई ।
स्रुति[3] -मंडल कुंडल मकराकृत, बिलसत मदन[4] सदाई ॥
नासा[5] कीर, कपोत ग्रीव, छबि, दाड़िम दसन चुराई ।
द्वै[6] सारँग-बाहन पर मुरली, आई देति दुहाई ॥
मोहे थिर, चर, बिटप[7] ,बिहंगम, ब्योम बिमान थकाई ।
कुसुमांजलि बरषत सुर[8] ऊपर, सूरदास बलि जाई ॥६२६॥१२४४॥

* राग केदार

‡ देखि री देखि आनँद-कंद ।

चित्त-चातक प्रेम-घन, लोचन चकोरनि[9] चंद ॥
चलित कुंडल गंड-मंडल झलक ललित कपोल ।
सुधा[10]सर जनु मकर क्रीड़त, इंदु डह[11]डह डोल ॥
सुभग कर आनन समीपै, मुरलिका इहिं भाइ ।

---

* (ना) गौड । (कॉ, श्या) गूजरी । (रा) शुद्ध कल्यान ।

† यह पद (का) मे नहीं है ।

① ससि गन सुमिरि लजाई—३ । ② खजरा गज कुरग बारिज बर निरखत अति रुचि पाई—२ । ③ कुडिल करन कपोल किरिनि छबि बिलसत बदन सुधाई—२, १६, १८, १९ । ④ सदन—१,९,११ । ⑤ कठ कपोत कीर विद्रुम पर दाड़िम कननि चुनाई—१,११ । बिद्रुम कीर कपोत ग्रीव छबि दारिम कननि चुगाइ—२,१८ । ⑥ दोउ सारॅग बाहन चढि आए मुरली देति दुहाई—१९ । ⑦ बिपुल—२ । बिपिन—९ । ⑧ इद्रादिक—२,१६,१८, १९ । सुर मुनि सब—१४ ।

* (रा) नट ।

‡ यह पद (ना, का) में नहीं है ।

⑨ चकोर को—१, ९, ११ । चकोर सु—१४ । ⑩ मकर सर क्रीडत सखी मनु हौ बिविध गवि डोल—३ । ⑪ दहदह—१, ११

मनु[1] उभै[2] अंभोज-भाजन, लेत सुधा भराइ ॥
स्याम-देह दुकूल-दुति मिलि, लसति तुलसी-माल ।
तड़ित घन संजोग मानौ, स्रेनिका[3] सुक-जाल ॥
अलक अबिरल, चारु हास-बिलास, भृकुटी भंग ।
सूर हरि की निरखि सोभा, भई मनसा पंग ॥६२७॥१२४५॥

* राग मलार

देखौ माई सुंदरता कौ सागर ।
बुधि-बिबेक-बल पार न पावत, मगन होत मन-नागर ॥
तनु अति स्याम अगाध अंबु-निधि, कटि पट पीत तरंग ।
चितवत चलत अधिक रुचि[4] उपजति, भँवर परति सब अंग ॥
नैन-मीन, मकराकृत कुंडल, भुज सरि[5] सुभग भुजंग ।
मुक्ता -माल मिलीँ मानौ, द्वै सुरसरि एकै संग ॥
|| कनक खचित मनिमय आभूषण, मुख, स्रम-कन सुख देत ।
|| जनु जल-निधि मथि प्रगट कियौ ससि, श्री अरु सुधा समेत ॥
देखि सरूप सकल गोपी जन, रहीँ बिचारि-बिचारि ।
तदपि सूर तरि सकीँ न सोभा, रहीँ प्रेम पचि हारि ॥६२८॥१२४६॥

---

(१) मनो सखि री अबु भाजन देत सुधा भराइ—३ । (२) इनै—१ । (३) सेनिका—१,६,११,१४ । सैन कियौ सुकुचाल—३ ।

* (ना) अड़ानो । (का) रामकली । (के, पू) केदारो । (कॉ, श्या) सारग । (रा) धनाश्री ।

(४) छवि उपजति—२,३,१४ । छवि लागत—६ । (५) वल—१, ११, १५ । भरि—१६ । मुकुत-माल मिलि मानौ सुरसरि द्वै सरिता लिए सग—१ । मुक्ता-माल मिली मनु सुरसरि द्वै सरिता लिए सग—२,३,११,१४ ।

|| (वे, गो, जौ) मे इस चरण के स्थान पर ये तीन चरण हैं—
मोर मुकुट मनिगन आभूषन,
कटि किंकिनि नख चंद ।
मनु अडोल वारिधि मै बिंबित,
राका उड़गन वृद ॥
वदन चद मडल की सोभा,
अवलोकनि सुख देत ॥

* राग भैरवी

† जैसी[1]-जैसी बातैं करैं कहत न आवै री।
स्यामरौ[2] सुंदर कान्ह अति मन भावै री॥
मदन मोहन बेनु मृदु, मृदुल बजावै री।
तान की तरंग रस, रसिक रिझावै री॥
जंगम थावर करै, थावर चलावै री।
लहरि भुअंग, त्यागि सनमुख आवै री॥
ब्योम-जान फूल, अति गति बरसावै री।
कामिनि धीरज धरै, को सो कहावै री॥
नंदलाल ललना ललचि, ललचावै री।
सूरदास प्रेम हरि, हियैं न समावै री॥६२९॥१२४७॥

* राग कल्यान

‡ बने बिसाल अति लोचन लोल।
चितै-चितै हरि चारु बिलोकनि, मानौ माँगत हैं मन ओल॥
अधर अनूप, नासिका सुंदर, कुंडल ललित[3] सुदेस कपोल।
मुख मुसुक्यात महा छबि लागति, स्रवन सुनत[4] सुठि मीठे बोल।
चितवति रहतिं चकोर चंद ज्यौं, नैंकु न पलक लगावतिं डोल।
सूरदास[5] प्रभु कैं बस ऐसैं, दासी सकल भईं बिनु मोल॥
॥६३०॥१२४८॥

---

* (ना, काँ, श्या) केदारा।
† यह पद (का) में नहीं है।
(1) कैसी कैसी—१९। (2) स्याम सुंदर अति—१।

* (काँ, श्या) सारंग।
‡ यह पद (का) में नहीं है।
(3) मिलित—२, ३, ९, १७। बलित—१९। (4) सुनत अति मीठे बोल—३। सुनावत मीठे बोल—९। (5) सूरदास हरि दरसन कारन दासी भई सबै बिनु मोल—२,६,१८,१९।

* राग धनाश्री

† ब्रज-जुवती हरि-चरन मनावैँ ।
जे पद-कमल महा-मुनि-दुर्लभ, सपनेहूँ नहिँ पावैँ ॥
तनु त्रिभंग, जुग जानु एक पग, ठाढ़े इक दरसाए ।
अंकुस-कुलिस-बज्र-ध्वज परगट, तरुनी-मन भरमाए ॥
वह छबि देखि रहीँ इकटक हीँ, मन[1] -मन करत विचार ।
सूरदास मनु अरुन कमल पर, सुषमा करति बिहार ॥६३१॥१२४९॥

⊛ राग बिलावल ।

‡ देखि सखी हरि-अंग अनूप ।
जानु जुगल जुग जंघ बिराजत, को बरनै यह रूप ॥
लकुट लपेटि लटकि भए ठाढ़े, एक चरन धर धारे ।
मनहुँ नील-मनि-खंभ काम रचि, एक[2] लपेटि सुधारे ॥
कबहुँ लकुट तैँ जानु फेरि[3] लै, अपने सहज चलावत ।
सूरदास मानहुँ कर भा[4] , कर बारंबार डुलावत[5] ॥६३२॥१२५०॥

× राग नटनारायन

§ कटि तट पीत बसन सुदेस ।
मनौ नव घन दामिनी, तजि[6] रही सहज, सुबेस ॥

---

* (जौ, पू) बिलावल ।
† यह पद (वे, स, ल, शा, के, गो, का, जौ, पू) मे ँ है ।
① यह मन—३, ६,१७ ।
⊛ (ना) ईमन । (रा) गौरी ।
‡ यह पद (का) मे ँ नही ँ है ।
② अग—२,१६ । ③ हेरि लै—१, ३, ६, ११, १५, १७ । बहुरि लै—२ । लैाँ हरि—१४ । ④ कर ठाकुर—२ । करुणाकर बारबार बुलावत—१६ । ⑤ झुला-वत—६, १७ ।
× (ना) सोरठि । (काँ, श्या) नट ।
§ यह पद (का) मे ँ नही ँ है ।
⑥ बिच रहे—२,१६ ।

कनक मनि मेखला राजत, सुभग स्यामल अंग ।
मनौ हंस-अकास[1]-पंगति, नारि-बालक-संग ॥
सुभग कटि काछनी राजति, जलज-केसरि-खंड ।
सूर प्रभु-अँग निरखि माधुरि, मदन-तन परयौ दंड ॥
॥६२३॥१२५१॥

* राग नट

† तरुनी निरखि हरि-प्रतिअंग ।
कोउ निरखि नख[2]-इंदु भूली कोउ चरन-जुग-रंग ॥
कोउ निरखि नूपुर[3] रही थकि कोउ निरखि जुग जानु ।
कोउ[4] निरखि जुग जंघ सोभा करति मन अनुमान ॥
कोउ निरखि कटि पीत कछनी मेखला रुचि कारि ।
कोउ निरखि हृद-नाभि की छबि डारयौ तन मन वारि ॥
रुचिर[5] रोमावली हरि[6] कैं चारु उदर सुदेस ।
मनौ अलि-स्रेनी बिराजति बनो एकहिँ भेस ॥
रहीँ इक टक नारि ठाढ़ी करतिँ बुद्धि विचार ।
सूर आगम कियौ नभ तैं जमुन-सूच्छम-धार ॥६२४॥१२५२॥

---

(१) रसाल—१,२,३,११,१६ ।
* (ना) सोरठि । (के, पू) नट नारायन ।
† यह पद (का) में नहीं है ।
(२) मुख चारु—२ । (३) जुग करन सोभा करति मन अनुमान—२ । (४) मनौ भुजग गगन तैं उतरत रहे उर्द्ध मुख आनि—२ ।
(५) चारु—२, ३,६,११,१४,१६ ।
(६) की छबि—१६ ।

* राग नट

† राजते रोम-राजी रेष ।

नील घन मनु धूम-धारा, रही सूच्छम सेष ॥

निरखि सुंदर हृदय पर, भृगु-पाद परम[1] सुलेख ।

मनहुँ सोभित अभ्र-अंतर, संभु-भूषन बेष ॥

मुक्त-माल नछत्र-गन सम, अर्द्ध चंद्र बिसेष ।

सजल उज्वल जलद मलयज, प्रबल बलिनि अलेष ॥

केकि कच सुर-चाप की छबि, दसन[2] तडित सुपेख ।

सूर प्रभु[3] की निरखि सोभा, तजे नैन निमेष ॥६३५॥१२५३॥

* राग गौरी

‡ हरि-प्रति-अंग नागरि निरखि ।

दृष्टि रोमावली पर रही, बनत नाहीँ परखि ॥

कोउ कहति यह काम-सरनी[4], कोउ कहति नहिँ जोग ।

कोउ कहति अलि-बाल-पंगति, जुरी एक सँजोग ॥

कोउ कहति अहि काम पठयौ, डसै जिनि यह काहु ।

स्याम-रोमावली की छबि, सूर नाहिँ निबाहु ॥६३६॥१२५४॥

---

* (ना) केदारौ। (के, पू) नटनारायन।

† यह पद (वे, ना, ल, शा, के, गो, क, जौ, पू) मेँ है।

(१) परस सुपेख—२। परस सलेख—६, १७। (२) बसन—२,१६। (३) अवलोकि आतुर—१,११,१७।

* (ना) केदारौ।

‡ यह पद (का) मेँ नहीँ है।

(४) श्रेनी—१, ३, ११, १६। अहिनी—२।

* राग आसावरी

† चतुर नारि सब कहतिँ बिचारि ।

रोमावली अनूप बिराजति, जमुना की अनुहारि ॥

उर-कलिंद तैँ धँसि जल-धारा, उदर-धरनि परबाह ।

जाति चली धारा ह्वै अध कौँ, नाभी-ह्रद अवगाह ॥

भुजा दंड तट, सुभग घाट घट, बनमाला तरु कूल ।

मोतिनि-माल दुहूँघा मानौ, फेन लहरि रस-फूल ॥

सूर स्याम-रोमावलि की छबि, देखत करतिँ बिचार ।

बुद्धि रचतिँ तरि सकतिँ न सोभा, प्रेम बिबस ब्रजनार ॥

॥६३७॥१२५५॥

❀ राग कल्यान

‡ रोमावली-रेख अति राजति ।

सूच्छम बेष धूम की धारा, नव घन ऊपर भ्राजति ॥

भृगु-पद-रेख स्याम-उर सजनी, कहा कहौँ ज्यौँ छाजति ।

मनहुँ मेघ-भीतर दुतिया[1] -ससि, कोटि-काम-दुति[2] लाजति ॥

मुक्ता-माल नंद-नंदन-उर, अर्द्ध सुधा-घट[3] भ्राजति[4] ।

तनु श्रीखंड मेघ उज्ज्वल अति, देखि महाबलि[5] साजति[6] ॥

बरही-मुकुट इंद्र-धनु मानहुँ, तड़ित दसन-छबि लाजति ।

इकटक रहीँ बिलोकि सूर प्रभु, निमिषनि[7] की कह हाजति ॥

॥६३८॥१२५६॥

---

* (ना) अडानो । (जौ) कल्यान ।

† यह पद (का) मेँ नहीँ है ।

❀ (ना) अडानो ।

‡ यह पद (का) मेँ नहीँ है ।

① ससि की द्युति—१,२,३, ६,११,१६ । ② तनु—१,३,११, १७,१६ । ③ निधि—१६,१६ । ④ काति—१, ३,६, ११,१७,१८, १६ । ⑤ महाबल—१,३,६,११, १७,१८,१६ । ⑥ भाँति—१,३, ६,११,१७,१८,१६ । ⑦ गोपी प्रेम भरी गाजति—२ । को तन की कह हाजत—१७ ।

* राग सारंग

† मुख[१] -छबि कहौं कहाँ लगि माई ।
भानु[२] उदै ज्यौं कमल प्रकासित, रबि ससि दोऊ जोति छपाई ॥
अधर बिंब, नासा ऊपर, मनु सुक चाखन कौं चोंच चलाई ।
बिकसत बदन दसन अति चमकत, दामिनि-दुति दुरि देति दिखाई ॥
सोभित अति कुंडल की डोलनि, मकराकृत श्री सरस बनाई ।
निसि-दिन रटति सूर के स्वामिहिं, ब्रज-बनिता देहैं[३] बिसराई ॥
॥६३९॥१२५७॥

❀ राग केदार

‡ सखी री[४] सुंदरता कौ रंग ।
छिन-छिन माँहिं परति छबि औरै, कमल-नैन कैं अंग ॥
परमिति करि राख्यौ चाहति हैं, लागी डोलतिं संग ।
चलत निमेष बिसेष जानियत[५], भूलि भई[६] मति-भंग ॥
स्याम सुभग[७] कैं ऊपर वारौं, आली कोटि अनंग ।
सूरदास कछु कहत न आवै, भई गिरा-गति[८] पंग ॥६४०॥१२५८॥

× राग बिहागरा

§ स्याम भुजनि[९] की सुंदरताई ।
चंदन खौरि अनूपम राजति, सो छबि कही न जाई ॥

---

* (ना) देवगधार ।
† यह पद (ल, का, पू) में नहीं है ।
① मुख-छबि कहा कहौं री माई—२ । मोहन मुख छवि वरनौ माई—६ । ② मानौ कंज प्रकाश प्रात भए रवि ससि दोऊ जात छपाई—१,२,३,११,१५,१६,१८,१९ । ③ मति गति—१९ ।
* (ना) धनाश्री । (रा) गूजरी ।
‡ यह पद (का, पू) में नहीं है ।
④ सखी (री) सुंदरता की तरग—२, ३, १९ । सुंदर माई ताक तरंग—६ । ⑤ देखियत—१० । ⑥ गई—३ । ⑦ तन—२ । ⑧ मति—२,३ ।
× (ना) केदारौ । (रा) गौरी ।
§ यह पद (का) में नहीं है ।
⑨ भुजा—१, २, ३, ६, ११, १४, १९ ।

बड़े बिसाल जानु लौं परसत, इक उपमा मन आई।
मनौ भुजंग गगन तैं उतरत, अधमुख रह्यौ झुलाई॥
रत्न-जटित पहुँची कर राजति, अँगुरी सुंदर भारो।
सूर मनौ फनि-सिर मनि सोभित, फन-फन की छबि न्यारो॥
॥६४१॥१२५६॥

* राग धनाश्री

† गोपी[1] तजि लाज, संग स्याम-रंग भूलीं।
पूरन मुख-चंद देखि, नैन-कोइ[2] फूलीं॥
कैधौं नव जलद स्वाति, चातक मन लाए।
किधौं बारि-बूँद सीप हृदय हरष पाए॥
रबि-छबि कैधौं निहारि, पंकज बिकसाने।
किधौं चक्रवाकि निरखि, पतिहीं रति माने॥
कैधौं मृग-जूथ जुरे, मुरली-धुनि रीझे।
सूर स्याम-मुख-मंडल-छबि, के रस भीजे॥६४२॥१२६०॥

* राग सोरठ

‡ बड़ौ निठुर बिधना यह देख्यौ।
जब तैं आजु नंदनंदन-छबि, बार-बार करि पेख्यौ[3]॥
नख, अँगुरी, पग, जानु, जंघ, कटि, रचि कीन्हौ निरमान।
हृदय, बाहु, कर, अंस, अंग अँग, मुख सुंदर[4] अति बान॥

---

* (ना) बिहागरौ।
† यह पद (का) में नहीं है।
(१) गोपी स्याम रंग भूली—२,३,६,११,१४,१६। (२) कमल—१,३,६,१४। कुमुद—१६।
* (ना) धनाश्री।
‡ यह पद (का) में नहीं है।
(३) अवरेख्यौ—२,१६। (४) अति सुंदर पान—२।

अधर, दसन, रसना, रस बानी[1], स्रवन, नैन अरु भाल ।
सूर रोम प्रति लोचन देत्यौ, देखत बनत गुपाल ॥६४३॥१२

* राग गूजरी

† स्याम-अँग जुवती निरखि भुलानीं ।
कोउ निरखति कुंडल की आभा, इतनेहिं माँझ बिकानीं ॥
ललित कपोल निरखि कोउ[2] अटकी, सिथिल भई ज्यौं पानी ।
देह-गेह की सुधि नहिं काहू, हरषति[3] कोउ पछितानी ॥
कोउ निरखति रही ललित नासिका, यह काहू नहिं जानी ।
कोउ निरखति अधरनि की सोभा, फुरति नहीं मुख बानी ।
कोउ चकित भई दसन-चमक पर, चकचौंधी अकुलानी ॥
कोउ निरखति दुति चिबुक चारु की, सूर तरुनि बिततानी ॥
॥६४४॥१२६२॥

* राग नट

स्याम कर मुरली अतिहिं बिराजति ।
परसति[4] अधर सुधारस बरसति, मधुर मधुर सुर बाजति ॥
लटकत मुकुट, भौंह-छबि मटकति, नैन-सैन अति राजति ।
ग्रीव नवाइ अटकि बंसी पर कोटि मदन-छबि लाजति ॥

---

(१) बातैं—२ ।
* (ना) ललित ।
† यह पद (का) में नहीं है ।

(२) कोऊ इक—२ । (३) हरष न को पछितानी—१, ११ । हरष न कोउ पछितानी—३, ६, १६ । हरष निरषि कोऊ पछितानी—१६ ।

* (ना) सारग ।
(४) प्रगटत—१,६,११,१४ ।

लोल कपोल झलक कुंडल की, यह उपमा कछु लागत।
मानहुँ[1] मकर सुधा-सर क्रीड़त, आपु[2]-आपु अनुरागत॥
बृंदाबन बिहरत नँद-नंदन, ग्वाल सखा सँग सोहत।
सूरदास प्रभु की छबि निरखत, सुर-नर-मुनि सब मोहत॥
॥६४५॥१२६३॥

* राग धनाश्री

† तब लगि सबै सयान रहैं।
जब लगि नवल[3] किसोर न मुरली, बदन-समीर बहैं॥
तबहीं लौं अभिमान, चातुरी, पतिब्रत, कुलहिं चहैं।
जब लगि स्रवन-रंध्र-मग, मिलि[4] कै, नाहिँन मनहिं महैं॥
तब लगि तरुनि तरल-चंचलता, बुधि-बल सकुचि[5] रहैं।
सूरदास जब लगि वह धुनि सुनि नाहिँन[6] धोर ढहैं॥
६४६॥१२६४॥

* राग गौरी

‡ ब्रज-ललना देखत गिरिधर कौं।
एक एक अँग अँग पर रीझीं, अरुझीं मुरलीधर कौं॥

---

(१) मानौ गिरत सुधा सुर गुरु पुनि—२। (२) आसपास—१६।
* (ना, जा) नट। (के, पू) केदारो। (कॉ) सारंग।
† यह पद (का) में नहीं है।
(३) नवल किसोरी मुरली बदन समीर बही—१,११। नवल किसोरी मुरली बदन समीर बहै—३। (४) मिलि कै नाहीँ इहै बही—१। (५) सबै अहै—१४। (६) नाहिन बनत कही—१,११। नाही कछू कही—२। नाहिँन कछू कहै—३। नाहिँन बनत कह्यौ—६। नाही कचहि गहै—१६।
* (ना) ललित। (गो) धनाश्री।
‡ यह पद (का, पू) में नहीं है।

मनौ चित्र की सी लिखि काढ़ीँ, सुधि नाहीँ मन घर कौँ।
लोक-लाज, कुल-कानि भुलानी, लुबधीँ स्याम सुँदर कौँ॥
कोउ रिसाइ कोउ कहै जाइ कछु, डरैँ न काहूँ डर कौँ।
सूरदास प्रभु सौँ मन मान्यौ, जन्म-जन्म परतर कौँ॥६४७॥१२६५॥

* राग सारंग

† बंसी री बन कान्ह बजावत।
आनि[1] सुनौ स्रवननि मधुरे सुर, राग[2] मध्य लै नाम बुलावत॥
सुर स्रुति तान बँधान अमित[3] अति, सप्त[4] अतीत अनागत-आवत।
जुरि[5] जुग भुज सिर, सेष सैल, मथि बदन-पयोधि, अमृत उपजावत॥
मनौ[6] मोहिनी बेष धारि कै, मन मोहत मधु पान करावत।
सुर[7] नर मुनि बस किए[8] राग-रस, अधर-सुधा-रस मदन[9] जगावत॥
महा[10] मनोहर नाद, सूर, थिर चर मोहे, कोउ मरम न पावत।
मानहुँ मूक मिठाई के गुन, कहि न सकत मुख, सीस डुलावत॥
॥६४८॥१२६६॥

---

* (के, क, कॉ, पू) विहागरौ।

† यह पद (शा, का, वृ, रा, श्या) मेँ नहीँ है।

(१) सुनि री सखी स्रवन सुख मगल रागरागिनी गावत—२। (२) राग रागिनी ल्यावत—१,११। नाद—१४। (३) मपित अति अतित अनागत लावत—२, १४, १६। मपित मति असुर अतीत अनागत ल्यावत—३,६,१७। (४) सरस—११। (५) जनु जुग जुरि वर बेष सजल (सैल) मथि—१, २। (६) मनौ मोहनी भेष धरे धर मुरली मोहत मुख मधु प्यावत—१, २,११। (७) षग मृग मुनि बस भए नाद रस मगन हुते मदनहिँ जग ज्यावत—३, ६, १४। (८) भए—२। (९) मदनहिँ ज्यावत—२। (१०) और कहाँ लगि कहौँ सूर थिर चर मोहे—३, ६, १४।

राग बिलावल

† बाँसुरी बजाइ आछे, रंग सौं मुरारी।
सुनि कै धुनि छूटि गई, संकर की तारी ॥
बेद पढ़न भूलि गए, ब्रह्मा ब्रह्मचारी।
|| रसना गुन कहि न सकै, ऐसी सुधि बिसारी ॥
इंद्र-सभा थकित भई, लगी जब करारी।
रंभा कौ मान मिट्यौ, भूली नृत कारी ॥
जमुना जू थकित भईं नहीं सुधि सँभारी।
सूरदास मुरली है तीन-लोक-प्यारी ॥६४६॥१२६७॥

* राग केदारा

बंसी बनराज आजु आई रन जीति।
मेटति है अपनै बल, सबहिनि की रीति ॥
बिडरे गज-जूथ सील, सैन-लाज भाजी।
घूँघट[1] पट कोट टूटे, छूटे दृग ताजी ॥
काहूँ पति गेह तजे, काहू तन-प्रान।
काहूँ सुख सरन लयौ, सुनत सुजस गान[2] ॥

---

† यह पद केवल (शा) मे है।

|| इस चरण के पश्चात् पद मे यह एक चरण अधिक मिलता है—"मथत दही नीर भई बावरि मनधारी"। किंतु इसकी यहाँ कोई सार्थकता न होने के कारण यह प्रक्षिप्त प्रतीत होता है।

* (ना) अड़ानो। (का, के, क, पू, रा) बिहागरौ।

(१) घूँघट पट कवच कटै छूटे मनौ ताजी—२। घूँघट पट कवच टूटि छूटे सब ताजी—६,१४, १७। (२) कान—१, ११।

कोऊ पग परसि गए, अपने-अपने[1] देस।
कोऊ[2] रस रंक भए, हुते जे नरेस॥
देत मदन[3] मारुत मिलि, दसौं दिसि दुहाई।
सूर[4] श्रीगुपाल लाल, बंसी-बस माई॥६५०॥१२६८॥

* राग सारंग

† जब तैं बंसी स्रवन परी।
तबहीं तैं मन और भयौ सखि, मो[5] तन-सुधि बिसरी॥
हौं अपनैं अभिमान, रूप, जोबन[6] कैं गर्ब भरी।
नैंकु न कह्यौ कियौ सुनि[7] सजनी, बादिहिं[8] आइ ढरी॥
बिनु देखैं अब स्याम मनोहर, जुग भरि जात घरी।
सूरदास सुनि आरज-पथ तैं, कछू[9] न चाड़ सरी॥६५१॥२६६॥

* राग सारंग

‡ मुरली-धुनि स्रवन सुनत, भवन रहि न परै।
ऐसी को चतुर नारि, धीरज मन धरै॥

---

(१) मन—३, ६, १४, १७। (२) कोऊ बलि रंक भए—१, ११। कोऊ रस दह भरे—२। (३) सवनि—३, ६, १४, १७। (४) सूर स्याम श्री गुपाल बसी वस माई—१, ११। सूरदास श्री गुपाल कीन्हे बस माई—२।

* (ना, रा) बिहागरौ। (पू) आसावरी।

† यह पद (का) में नहीं है। (के, पू) में इस पद के दो चरण तो और प्रतियों से मिलते जुलते हैं जिसका पाठातर दे दिया गया है। पर शेष छः चरण सर्वथा भिन्न हैं जो 'मोहन मुरली अधर धरी' इत्यादि पद से सबद्ध हैं।

(५) उलटो पलट खरी—६, १७। तन सुधि सब विसरी—१४। (६) गुन—३, १४, १६। (७) दूती कौ—२, ३, १४, १६। (८) बादिहिं आयु ढरी—१, ११। बादि रही अमरी—२। बादिहिं रही इतरी—३। (९) कबहुँ—३।

* (ना) पूर्वी।

‡ यह पद (का) में नहीं है। भिन्न-भिन्न प्रतियों में इस पद के पाठ में बड़ी भिन्नता है। अर्थ तथा छंद पर ध्यान रखकर सब पाठों के मिलान से यह पाठ निर्धारित किया गया है।

सुर[1] नर मुनि सुनत सुधि[2] न, सिव-समाधि टरै।
अपनी गति तजत पवन, सरिता नहिँ ढरै॥
मोहन[3] -मुख-मुरली, मन, मोहिनि बस करै।
सूरदास सुनत स्रवन सुधा-सिंधु भरै॥६५२॥१२७०॥

*राग कान्हरा

† (माई री) मुरली अति गर्व काहुँ, बदति नाहिँ आजु।
हरि कैँ मुख-कमल-देस, पायौ सुख-राजु॥
बैठति कर-पीठि ढीठि, अधर-छत्र-छाँहि।
राजति[4] अति चँवर चिकुर, सुरद, सभा माँहि॥
जमुना के जलहिँ नाहिँ, जलधि जान देति।
सुरपुर तैँ सुर-बिमान, यह बुलाइ लेति॥
स्थावर चर, जंगम जड़, करति जीति[5] -जीति।
बिधि[6] की बिधि मेटि, करति अपनी नई रीति॥
बंसी बस सकल सूर, सुर-नर-मुनि-नाग।
श्रीपति हूँ की बिसारी, याही अनुराग॥६५३॥१२७१॥

---

(१) खग मृग पशु सुर नर मुनि सिव समाधि टरै—१६। (२) सु धुनि—३,१०। (३) मोहन के मन कौ को अपने बस—१,२,११।
* (ना, के, क, पू) केदारो। (कॉ) सारग।

† यह पद (का) में नहीं है।
(४) चमर चिकुर राजत तहाँ सु दर सभा माही—१,११। चौर चिहुर राजत अति सुरभि सभा माह—१६। (५) जात जीति—२। (६) बेद की बिधि मेटि चलत आपनही रीति—१, ११। बिधि हूँ कौ मेटि चलत सखी अपनी रीति—२।

* राग गौरी

† मुरली मोहे कुँवर कन्हाई ।

अँचवति अधर-सुधा बस कीन्हे, अब हम कहा करैं री[1] माई ॥
सरबस[2] लै हरि धरयौ सबनि कौ, औसर देति न होति अघाई ।
गाजति[3], बाजति, चढ़ी[4] दुहूँ कर, अपनैं सब्द[5] न सुनत पराई ॥
जिहिं तन अनल दह्यौ अपनौ कुल, तासौं कैसैं होत भलाई ।
अब सुनि सूर कौन बिधि कीजै, बन की ब्याधि माँझ घर आई ॥

॥६५४॥१२७२॥

* राग मलार

‡ मुरली तऊ गुपालहिं भावति ।

सुनि री सखी जदपि नँदलालहिं[6], नाना भाँति[7] नचावति ॥
राखति एक पाइ ठाढ़ौ करि, अति अधिकार जनावति ।
कोमल[8] तन आज्ञा करवावति, कटि टेढ़ी ह्वै आवति ॥
अति आधीन सुजान कनौड़े, गिरिधर नार नवावति ।
आपुन पौंढ़ि अधर सज्जा पर, कर-पल्लव पलुटावति[9] ॥

---

* (गो) बरारी । (कॉ) कान्हरा ।

† यह पद (का) में नहीं है ।

(१) कहि—१ । (२) सर्बस हरयौ-धरयौ कबहूँ औसरहु न देति अघाई—१ । सर्बस हरयौ-धरयौ कबहूँ (सबहुनि) कौ और न या सम देति दिखाई—२,१६,१८,१६ । सर्बस हरयौ देति नहिं कबहूँ ऐसे रहति अघाई—११ । (३) बाजति गाजति चढी अनै करि सौह न सुनति पराई—२ । (४) बैठि—३, ६, ११ । (५) कान—३, ६ ।

* (के, पू) धनाश्री । (गो) जैतश्री । (कॉ) कान्हरा ।

‡ यह पद (ल, का) में नहीं है ।

(६) नद-नदन—१ । (७) नाच—६ । (८) कोमल अग आपु, आज्ञा गुरु कटि टेढी ह्वै आवति—१,११ । अग अग कोमल अगुलिका गति टेढी ह्वै आवै—२ । (९) चटकावै—२,१६ ।

भृकुटी[1] कुटिल, नैन नासा-पुट, हम पर कोप करावति[2]।
सूर प्रसन्न जानि एकौ छिन, धर[3] तैं सीस डुलावति ॥६५५॥१२७३॥

* राग मलार

† स्याम[4] तुम्हारी मदन-मुरलिका, नैंसुक सी जग मोह्यौ।
जे[5] ते जीव जंतु जल थल के, नाद स्वाद सब[6] पोह्यौ॥
|| जे[7] तप ब्रत किए तरनि-सुता-तट, पन गहि पीठि न दीन्ही।
|| ता तीरथ-तप के फल लैकै, स्याम सोहागिनि कीन्ही॥
¶ धरनि धरी, गोबर्धन[8] राख्यौ, कोमल-पानि-अधार।
¶ अब हरि लटकि रहत टेढ़े ह्वै, तनक मुरलि के भार॥
% धन्य[9] सुघरो सील कुल छाँड़े, राँची वा अनुराग।
% अब[10] हरि सींचि सुधा-रस, मेटत तन के पहिले दाग॥
निदरि[11] हमैं अधरनि रस पीवति, पढ़ी दूतिका भाइ।
सूरदास[12] कुंजनि तैं प्रगटी, चेरि सौति भई आइ ॥६५६॥१२७४॥

---

(१) भृकुटी कुटिल कोप नासा पुट—१,११। भृकुटी नैन अधर नासा पुट—६। (२) कुपावति—१, ११, १७। दिखावति—२। (३) अधर सु सीस डोलावति—१, १५। धरि पर सीस न लावै—२। अधर अरु सीस डुलावति—११।

* (ना) सारंग। (कॉ) कान्हरा।

† यह पद (ल, का, पू) में नहीं है।

(४) देखहु री इन मदन मुरलिका नैंसुक सी सब जग मोह्यौ—१४। (५) जे सब—१, ११। (६) रस—६। (७) स्रम करि—२। प्रण कै—१४।

|| ये चरण (के) में नहीं हैं।

¶ ये दो चरण (ना, क) में नहीं हैं।

(८) श्रिधि वेद उधारयौ—२।

(९) सुदिन सुघरी सील कुल छाँड्यौ अस रचि कै अनुराग—१४। (१०) सुंदर स्याम सुधा रस सींच मेटत पहिले दाग—१४।

% ये दो चरण केवल (ना, जौ) में हैं।

(११) निदरै हमैं अधर रस पीवति; करति न रंचक कानि—२। मुरली अधर मधुर गहि पावति, पढि दूती अति माई—६।

(१२) सूरदास प्रभु निकसि कुंज तैं, चतुर सौति भइ आई—२॥

† सखी री, मुरली लीजै चोरि ।
जिनि गुपाल कीन्हे अपनैं बस, प्रीति सबनि की तोरि ॥
छिन इक घर-भीतर, निसि-बासर, धरत न कबहूँ छोरि ।
कबहूँ कर, कबहूँ अधरनि, कटि कबहूँ खोँसत जोरि ॥
ना जानौं कछु मेलि मोहिनी, राखे अँग-अँग भोरि ।
सूरदास प्रभु कौ मन सजनी, बँध्यौ राग की डोरि । ६५७॥१२७५॥

※ राग केदार

‡ मुरली अधर सजी[1] बलबीर ।
नाद सुनि[2] बनिता बिमोहीं, बिसारे उर[3] -चीर ॥
धेनु मृग तृन तजि रहे, बछरा न पीवत छीर ।
नैन[4] मूँदे खग रहे ज्यौं, करत तप मुनि-धीर ॥
डुलत[5] नहिं द्रुमपत्र बेली, थकित मंदसमीर ।
सूर मुरली-सब्द[6] सुनि, थकि रहत जमुना-नीर ॥६५८॥१२७६

× राग मलार

§ जब हरि मुरली अधर धरी ।
गृह[7] -ब्यौहार तजे आरज-पथ, चलत न संक करी ॥

---

* (ना) नट । (के, पू) गौरी ।
† यह पद (का) में नहीं है ।
※ (कों) धनाश्री ।
‡ यह पद (का, पू) में नहीं है ।
① धरी—२,१६ । ② प्रति—१,११ । ③ तन—३ । ④ खग नैन मूदि समाधि धरि मनु करत तप मुनि धीर—१६ । ⑤ डोलत नहीं द्रुमलता बिथकी मद गध समीर—१,११ । ⑥ नाद—१, ११ । राग—३ ।
× (ना) बिलावल । (ना, के, पू) केदारो । (कों) सोरठ ।
§ यह पद (शा, का, रा) में नहीं है ।
⑦ ग्रह ब्यौहार तजे सब जुवतिनि चलत न सक करी—२ । आरज पथ बिसरयौ आतुर ह्वै तनहू की सुधि न करी—३ ।

पद-रिपु पट अँटक्यौ न[1] सम्हारति, उलट न पलट खरी ।
सिव[2] -सुत-बाहन आइ[3] मिले हैं, मन-चित बुद्धि हरी ॥
दुरि गए कीर, कपोत, मधुप, पिक, सारँग सुधि बिसरी ।
उडुपति[4] बिद्रुम, बिंब, खिसाने[5], दामिनि अधिक डरी ॥
मिलिहैं[6] स्यामहिं हंस-सुता-तट, आनँद-उमँग भरी ।
सूर[7] स्याम कौं मिलीं परस्पर, प्रेम-प्रबाह ढरी ॥६५६॥१२७७॥

गोपिका-वचन

* राग सारंग

† हम न भईं बृंदाबन-रेनु ।
जहँ चरननि डोलत नँद-नंदन, नित-प्रति चारत धेनु ॥
हम तैं परम धन्य ये बन, द्रुम, बालक, बच्छऽरु बेनु ।
॥सूर सकल खेलत, हँसि बोलत, सँग मथि[8] पीवत फेनु ॥
॥६६०॥१२७८॥

* राग केदार

‡ मुरली कौन सुकृत-फल पाए ।
अधर-सुधा पीवति मोहन कौ, सबै कलंक गँवाए[9] ॥
मन[10] कठोर तन गाँठि प्रगट ही, छिद्र बिसाल बनाए ।

---

(१) आतुर ज्यौं उलटत पलट मरी—१, ११, १५ । अति आतुर उलटि, जु पलटि खरी—२। (२) सिव-सुत-बाहन-रिपु जु मिले बिच—१६ । (३) रुकि मिल्यौ मनौ बुधि बिधि सब जु हरी —२ । रोकि मिल्यो तब चितवति चकित खरी—६ । (४) बिद्रुम अरु बंधूक बिंब मिलि उडपति लाज करी—२ । (५) लजाने—३, ६ । (६) निरखे स्याम पतग-सुता तट—१,२,११,१५ । (७) सूरदास प्रभु प्रीति परस्पर प्रेम प्रवाह परी—१,११,१५ ।

* (ना) बिहागरौ ।

† यह पद (ल, का, के, पू) में नहीं है ।

॥ (वे, गो, जौ, श्या) में इस पद में दो चरण कुछ पाठांतर से अधिक पाए जाते हैं । उनका पाठ यह है—कहा भयौ या देव जनम तैं ऊँचे पद कियो ऐन। सब जीवन कौ यहै एक फल छिनक मिलैं जु कहैं सैन ॥

(८) पय—२ ।

* (ना) नट । (क) सारग ।

‡ यह पद (ल, का, के, पू) में नहीं है ।

(९) नसाए—३ । (१०) तन कठोर मन गाँठि हियैं ही—१६ ।

अंतर सून्य सदा देखियति हैं, निज[1] कुल बंस सुभाए ॥
लघुता[2] अंग, नहीं कछु करनी, निरखत[3] नैन लगाए ।
||सूरदास-प्रभु-पानि परसि नित, काम-बेलि[4] अधिकाए ॥
॥६६१॥१२७६॥

राग सारंग

† ऐसो गोपाल निरखि, तन[5] -मन-धन वारौं ।
नव किसोर, मधुर मुरति, सोभा उर धारौं ॥
अरुन-तरुन कमल[6] - नैन, मुरली कर राजै ।
ब्रज-जन-मन-हरन बेनु, मधुर-मधुर बाजै ॥
ललित बर त्रिभंग सु तनु, बनमाला सोहै ।
अति[7] सुदेस कुसुम-पाग, उपमा कौं को है ॥
चरन रुनित नूपुर, कटि किंकिनि कल कूजै ।
मकराकृत-कुंडल-छबि, सूर कौन पूजै ॥ ६६२॥१२८०॥

---

① बिहाए—१, ११। ② लघु तन एक—१६। ③ निरखत नहीं निकाई—१४, १६। ④ चली अधिकाई—१४। बली अधिकाई—१६।

|| यह पद (वे, ना, स, शा, वृ, गो, क, जौ, कॉ, रा) में है। (वे, गो, जौ) के पाठ कुछ असगत हैं। (ना) मे ये दो पद दो स्थानों पर हैं, जिनमे से एक स्थान का पाठ (वे, गो, जौ) की ही भाँति है। दूसरे स्थान पर उसका पाठ अधिक शुद्ध (स, क, कॉ, रा) मिलता है तथा उसके पाठों के आधार पर इस सस्करण का पाठ रखा गया है।

† यह पद (वे, स, ल, गो, जौ) मे दो स्थानों में है—एक तो यहीं और दूसरे ग्रीष्म-लीला-वर्णन के प्रसग मे। अतर केवल प्रथम पक्ति मे कुछ शब्दों का है। शेष प्रतियों मे एक ही स्थान पर है। इस सस्करण मे भी वह एक ही स्थान पर यहीं रखा गया है।

⑤ तिल तिल तन वारौं—४, ६, ६, १७, १८। ⑥ कज—३,१४। ⑦ कुटिल केस—१६,१६।

* राग सारंग

† सुंदर मुख की बलि बलि जाउँ ।

लावनि-निधि गुन-निधि सोभा-निधि निरखि निरखि जीवत सब गाउँ ॥
अंग अंग प्रति अमित माधुरी प्रगटति रस रुचि ठावहिँ ठाउँ ।
तामैँ मृदु मुसुक्यानि मनोहर न्याइ कहत कबि मोहन नाउँ ॥
नैन-सैन दै दै जब हेरत ता[1] छबि पर बिनु मोल बिकाउँ ।
सूरदास प्रभु मदनमोहन-छबि सोभा[2] की उपमा नहिँ पाउँ ॥
॥६६३॥१२८१॥

* राग सूही

‡ मैँ बलि जाउँ स्याम-मुख-छबि[3] पर ।

बलि-बलि जाउँ कुटिल कच बिथुरे, बलि भृकुटी लिलाट पर[4] ॥
बलि-बलि जाउँ चारु अवलोकनि, बलि[5] बलि कुंडल-रबि की ।
बलि-बलि जाउँ नासिका सुललित, बलिहारी वा छबि की ॥
बलि-बलि जाउँ अरुन अधरनि की, बिद्रुम-बिंब लजावन ।
मैँ बलि जाउँ दसन चमकनि की, वारौँ तड़ितनि सावन ॥
मैँ बलि जाउँ ललित ठोड़ी पर, बलि मोतिनि की माल ।
सूर निरखि तन-मन बलिहारौँ, बलि बलि जसुमति-लाल ॥
॥६६४॥१२८२॥

---

* (ना) कान्हरो ।
† यह पद (का, रा) मे नही है।
(१) तापर हौं—१,११ । (२) यह सोभा उपमा नहिँ पाउँ—१, ३, ६, ११, १४ ।
* (ना) काफी ।
‡ यह पद (का) मे नही है।
(३) ऊपर—२ । (४) तर—१, ११ । (५) बलिहारी कुडल की—१,२,३, ६,११,१४,१६ ।

* राग कान्हरा

† अलकनि की छबि अलि-कुल गावत ।
खंजन मीन मृगज[1] लज्जित भए, नैननि गतिहिँ न पावत ॥
मुख मुसुक्यानि आनि उर अंतर, अंबुज बुधि उपजावत ।
सकुचत अरु बिगसत वा छबि पर, अनुदिन जनम गँवावत ॥
पूजत नाहिँ सुभग स्यामल तन, जद्यपि जलधर धावत ।
बसन समान होत नहिँ हाटक, अगिनि झाँप[2] दै आवत ॥
मुक्ता-दाम बिलोकि, बिलखि करि, अवलि[3] बलाक बनावत ।
सूरदास प्रभु ललित त्रिभंगी, मनमथ-मनहिँ लजावत ॥
॥६६५॥१२८३॥

* राग धनाश्री

‡ दै री मैया दोहनी, दुहिहौं मैं गैया ।
माखन खाए बल भयौ, करौं नंद-दुहैया ॥
कजरी, धौरी, सेँदुरी, धूमरि मेरी गैया ।
दुहि ल्याऊँ मैं तुरत हीँ, तू करि दै घैया ॥
ग्वालनि की सरि दुहत हौं, बूझहि बल भैया ।
सूर निरखि जननी हँसी, तब लेति बलैया ॥६६६॥१२८४॥

---

* (ना) गौरी। (जौ) सारग। (काँ) कल्यान। (रा) बिलावल।

† यह पद (का) मेँ नहीँ है।

① मृगज लजित भए नैन नचावन गतिहिँ न पावत—१,२,३, ६,११,१४। मृगज नैननि की नाचत गतिहिँ बतावत—१६,१६। ② झपट दै आवत (तावत)—२, १६, १६। ③ अवली नषत न पावत—२, १८। अवली नषत वनावत—१६, १६।

* (क) सूहो।

‡ यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) मेँ नहीँ है।

※ राग सारंग

† बाबा मोकौं दुहन सिखायौ ।
तेरैं मन परतीति न आवै, दुहत अँगुरियनि भाव बतायौ ॥
अँगुरी-भाव देखि जननी तब, हँसिकै स्यामहिं कंठ लगायौ ।
आठ बरष के कुँवर कन्हैया, इतनी बुद्धि कहाँ तैं पायौ ॥
माता लै दोहनि कर दीन्ही, तब हरि हँसत दुहन कौं धायौ ।
सूरस्याम कौं दुहत देखि तब, जननी मन अति हर्ष बढ़ायौ ॥
॥६६७॥१२८५॥

⊛ राग धनाश्री

‡ जननि मथति दधि, दुहत कन्हाई ।
सखा परस्पर कहत स्याम सौं, हमहूँ सौं तुम करत चँड़ाई ॥
दुहन देहु कछु दिन अरु मोकौं, तब करिहौ मो समसरि आई ।
जब लौं एक दुहौगे तब लौं, चारि दुहौंगो[१] नंद दुहाई ॥
झूठहिं करत दुहाई प्रातहिं, देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई ।
सूर स्याम कह्यौ काल्हि दुहैंगे, हमहूँ तुम मिलि होड़ लगाई ॥
॥६६८॥१२८६॥

※ (के, क, पू) बिलावल ।
† यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है ।

⊛ (क) बिलावल ।
‡ यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है ।

(१) दुहौं तौ—१,११,१४ । दुहौं हौं—६,१७ ।

⊙श्रीराधा-कृष्ण मिलाप

* राग बिलावल

दै मैया भौंरा चक डोरी ।

जाइ लेहु आरे पर राख्यौ, काल्हि मोल लै राखे कोरी ॥

लै आए हँसि स्याम तुरतहीं, देखि रहे रँग-रँग बहु डोरी ।

मैया बिना और को राखै[1], बार-बार हरि करत[2] निहोरी ॥

बोलि लिए सब सखा संग के, खेलत कान्ह[3] नंद की पोरी ।

तैसेइ हरि, तैसेइ सब बालक, कर भौंरा-चकरिनि की जोरी ॥

देखति जननि जसोदा यह सुख,[4] बार-बार बिहँसति मुख मोरी ।

सूरदास प्रभु हँसि-हँसि खेलत, ब्रज-बनिता डारतिं तृन तोरी ॥

॥६६६॥१२८७॥

*राग कान्हरौ

मेरैं[5] हिय लागै मनमोहन, लै गए री चित चोरि ।

अबहीं इहिं मारग ह्वै[6] निकसे, छबि निरखत तृन तोरि ॥

⊙ श्री राधिका जी का प्रसग श्रीमद्भागवत में नहीं है। श्री सूरदासजी ने अन्य ग्रंथों के आधार पर यह प्रसग अपनी ओर से बढाया है। हमारे पास सूरसागर की जो प्रतियाँ उपस्थित हैं उनमें से (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में भी कतिपय स्फुट पदों के अतिरिक्त, जो कि भिन्न भिन्न प्रसगों में छिटके हुए हैं, यह प्रसग नहीं मिलता। जिन प्रतियों में यह प्रसग है, उनमें दो स्थानो पर पाया जाता है। एक तो "कालीय-दमन-लीला" के पूर्व और दूसरे "चीर-हरण लीला" के पूर्व। प्रथम स्थान पर -"दै मैया भौंरा चक डोरी" इत्यादि पद से लेकर "सैंतति महरि खिलौना हरि के" इत्यादि पद तक है और दूसरे स्थान पर "उठी प्रातहीं राधिका दोहनि कर लाई" इत्यादि पद से लेकर "हँसि बस कीन्हीं घोप कुमारी" इत्यादि पद तक। हमने इन दोनों खंडों को एकत्र कर देना विशेष संगत समझकर दोनों को "चीर-हरण लीला" के पूर्व रख दिया है।

* (ना) गौरी। (रा) धनाश्री।

(१) ल्यावै—२, ३, ६, १४, १७। (२) कहत—३,११। (३) स्याम—१, ११। (४) छबि—१, ११।

* (ना) सकराभरन।

(५) मेरे हिरदै (हियरे) माँझ लागै मनमोहन लै गए मन चोरि—३,६,११,१४। (६) हैं निकसी—१६।

मोर-मुकुट, स्रवननि मनि-कुंडल, उर बनमाल,[1] पिछोरि।
दसन चमक, अधरनि अरुनाई, देखत परी ठगोरि ॥
ब्रज-लरिकन सँग खेलत डोलत, हाथ लिए[2] चकडोरि।
सूरस्याम चितवत गए मो तन, तन मन[3] लियौ अँजोरि ॥

॥६७०॥१२८८॥

राग टोड़ी

† तब तैं मेरौ ज्यौ न रहि सकत।
जित देखौं तितहीं मृदु मूरत, नैननि मैं नित लागि रहत ॥
ग्वाल-बाल सब संग लगाए, खेलत मैं करि भाव चलत।
अरुझि पर्‌यौ मेरौ मन तब तैं, कर झटकत चक-डोरि हलत ॥
अब मैं कहा करौं री सजनी, सुरति होति तब मदन दहत।
सूर स्याम मेरौ मन हरि लियौ, सकुच छाँड़ि मैं तोहिं कहत ॥

॥६७१।१२८९॥

राग टोड़ी

‡ खेलत हरि निकसे ब्रज-खोरी।
कटि कछनी पीतांबर बाँधे, हाथ लए भौंरा, चक, डोरी ॥
मोर-मुकुट, कुंडल स्रवननि बर, दसन-दमक दामिनि-छबि छोरी[4]।

---

(१) बन माला पीत पिछोरि—१, ११, १६। (२) लिए फेरत चक डोरि—१, ६, ११, १४, १६। (३) मगन भई री तन मन छोरि—१६।

† यह पद (ना, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

‡ यह पद (ना, वृ, कॉ, श्या) में नहीं है।

(४) थोरी—१, ६, ११, १४, १७।

गए स्याम रबि-तनया कैं तट, अंग लसति चंदन की खोरी ॥
औचक ही देखी तहँ राधा, नैन बिसाल भाल दिए रोरी ।
नील बसन फरिया कटि पहिरे, बेनी पीठि रुलति[1] झकझोरी ॥
संग लरिकिनी चलि इत आवति, दिन-थोरी, अति छबि तन-गोरी ।
सूर स्याम देखत हीं रीझे, नैन-नैन मिलि परी ठगोरी ॥

६७२॥१२९०॥

राग टोड़ी

† बूझत स्याम कौन तू गोरी ।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखी नहीं कहूँ ब्रज-खोरी ॥
काहे कौं हम ब्रज-तन आवतिं, खेलति रहतिं आपनी पौरी ।
सुनत रहतिं स्रवननि नँद-ढोटा, करत फिरत माखन-दधि-चोरी ॥
तुम्हरौ कहा चोरि हम लैहैं, खेलन चलौ संग मिलि जोरी ।
सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि, बातनि भुरइ राधिका भोरी ॥

॥६७३॥१२९१॥

राग धनाश्री

‡ प्रथम सनेह दुहुँनि मन जान्यौ ।
नैन[2]-नैन कीन्ही सब बातैं, गुप्त प्रीति[3] प्रगटान्यौ ॥
खेलन कबहुँ हमारैं आवहु, नंद-सदन,[4] ब्रज गाउँ ।
द्वारैं आइ टेरि मोहिं लीजौ, कान्ह हमारौ नाउँ ॥

---

① रुचिर—१,११ ।
† यह पद (ना, वृ, के, क, कौं, पू, श्या) में नहीं है।
‡ यह पद (ना, वृ, कौं, श्या) में नहीं है।
② सैन-सैन—१ । नैन सैन—३ । ③ प्रीति सिसुता प्रगटान्यौ—१, ३, ६, ११, १४ । ④ अवनि—११ ।

जौ कहियै घर दूरि तुम्हारौ, बोलत सुनियै टेरि ।
तुमहिँ सौंह बृषभानु बबा की, प्रात-साँझ इक फेरि ॥
सूधी निपट देखियत तुमकौं, तातैं करियत साथ ।
सूर स्याम नागर, उत नागरि राधा, दोउ[1] मिलि गाथ ॥

॥६७४॥१२६२॥

राग टोड़ी

† ठाढ़ी कुँअरि राधिका लोचन मीचत तहँ हरि आए ।
अति बिसाल चंचल अनियारे हरि-हाथनि न समाए ॥
सुभग आँगुरिनि मध्य बिराजत अति आतुर दरसाए ।
मानौ मनिधर मनि ज्यौं छाँड्यौ फन तर रहत दुराए ॥
गोसुत भयौ जु गाधि गह्यौ बर रच्यौ जु रबि सँग साए । (?)
अपने काम न मिलत हरी जो बिरहा लेत छड़ाए ॥ (?)
अंबुज चारि कुमुद द्वै मिलि कै औ ससि-बैर गँवाए ।
सूरदास अति हरि परसतहीं सकल बिथा बिसराए ॥

॥६७५॥१२६३॥

* राग नट

‡ सैननि नागरी समुझाइ ।
खरिक आवहु दोहनी लै, यहै मिस छल लाइ[2] ॥
गाइ-गनती करन जैहैं, मोहिं लै नँदराइ ।

---

(१) गोकुलनाथ—६,१७ ।
† यह पद केवल (के, पू.) में है।
* (क) धनाश्री ।
‡ यह पद (ना, वृ, कॉ, श्या) में नहीं है।
(२) पाइ—१,११ ।

बोलि बचन प्रमान कीन्हौं, दुहुनि आतुरताइ ॥
कनक बरन सुढार सुंदरि, सकुचि बदन[1] दुराइ ।
स्याम प्यारी-नैन राँचे, अति बिसाल चलाइ ॥
गुप्त प्रीति न[2] प्रगट कीन्ही, हृदय दुहुनि छिपाइ ।
सूर प्रभु के बचन सुनि-सुनि, रही कुँवरि लजाइ ॥

६७६॥१२६४॥

राग सारंग

‡ गई बृषभानु-सुता अपनैं घर ।
संग सखी सौं कहति चली यह, को[3] जैहै इन कैं दर ॥
बड़ी बेर भई जमुना आए, खीझति ह्वै है मैया ।
बचन[4] कहति मुख, हृदय-प्रेम-दुख[5], मन हरि लियौ कन्हैया ॥
माता कहति कहाँ ही[6] प्यारी, कहाँ अबेर लगाई ।
सूरदास तब कहति राधिका, खरिक देखि हौं आई ॥

॥६७७॥१२६५॥

राग रामकली

‡ नागरि मन गई अरुझाइ ।
अति बिरह तनु भई ब्याकुल, घर न नैंकु सुहाइ ॥

---

(१) मुख मुसकाइ—१, ३, ११, १७ । (२) जु—१,९,११ ।
† यह पद (ना, वृ, काँ, श्या) में नहीं है ।
(३) को जैहै खेलन इनके—१, ३, ६, ११, १४ । (४) वचन कहति मधुरे मुख वानी—६, १७ । (५) सुख—१ । (६) हुती—१, ११ । रही—३, १४ ।
‡ यह पद (ना, वृ, कां, श्या) में नहीं है ।

स्याम सुंदर मदन मोहन, मोहिनी सी लाई।
चित्त चंचल कुँवरि राधा, खान-पान भुलाई ॥
कबहुँ बिहँसति, कबहुँ बिलपति, सकुचि रहति[1] लजाइ।
मातु-पितु कौ त्रास मानति, मन बिना भई बाइ ॥
जननि सौं दोहनी माँगति, बेगि दै री माइ।
सूर प्रभु कौं खरिक मिलिहौं, गए मोहिँ बुलाइ ॥
॥६७८॥१२९६॥

राग धनाश्री

† मोहिँ दोहनी दै री मैया।
खरिक माहिँ अबहीँ ह्वै आई, अहिर दुहत[2] सब गैया ॥
ग्वाल दुहत तब गाइ हमारी, जब अपनी दुहि लेत।
घरिक मोहिँ लगिहै[3] खरिका मैँ, तू जनि आवै हेत ॥
सोचति चली कुँवरि घर हीँ तैँ, खरिक गई समुहाइ।
कब देखौं वह मोहन-मूरति, जिन मन लियौ चुराइ ॥
देखे जाइ तहाँ हरि नाहीँ, चकृत भई सुकुमारि।
कबहूँ इत, कबहूँ उत डोलति[4], लागी प्रीति-खँभारि ॥
नंद लिए आवत हरि देखे, तब पायौ बिस्राम।
सूरदास प्रभु अंतरजामी, कीन्हौ पूरन काम ॥६७९॥१२९७॥

---

① बहुरि—१। कुँवरि—११।
† यह पद (ना, वृ, काँ, श्या) मेँ नहीँ है।
② दुहत अपनी सब गैया—१,३,६,११,१४,१७।
③ लागै—६, १४।
④ जोवति—१८।

राग धनाश्री

† नंद गए खरिकहिँ हरि लीन्हे ।
देखी तहाँ राधिका ठाढ़ी, बोलि[1] लिए तिहिँ चीन्हे ॥
महर कह्यौ खेलौ तुम दोऊ, दूरि कहूँ जिनि जैहौ ।
गनती करत ग्वाल गैयनि की, मोहिँ नियरैँ तुम रैहौ ॥
सुनि बेटी बृषभानु महर की, कान्हहिँ लेइ खिलाइ ।
सूर स्याम कौँ देखे रहिहौ, मारै जनि कोउ[2] गाइ ॥
॥६८०॥१२९८॥

राग नट

‡ नंद बबा की बात सुनौ हरि ।
मोहिँ छाँड़ि जौ कहूँ जाहुगे, ल्याउँगी तुमकौँ धरि ॥
भली भई तुम्हैँ सौंपि गए मोहिँ, जान न दैहौँ तुमकौँ ।
बाहँ तुम्हारी नैँकु न छाँड़ौँ, महर खीझिहैँ हमकौँ ॥
मेरी बाहँ छाँड़ि दै राधा, करत उपरफट बातैँ ।
सूर स्याम नागर, नागरि सौँ, करत प्रेम की घातैँ ॥६८१॥१२९९॥

---

† यह पद (ना, वृ, काॅ, श्या) मेँ नहीँ है।
(१) स्याम बुलाइ लई तिहिँ (तहँ) चीन्हैँ—१,३,६,११,१७।
(२) कहुँ—३,६,१४।

‡ यह पद (ना, वृ, काॅ, श्या) मेँ नहीँ है।

राग नट

† नीबी ललित गही जदुराइ ।
जबहिँ सरोज धर्यौ श्रीफल पर, तब जसुमति गई आइ ॥
ततछन रुदन करत मनमोहन, मन मैं बुधि उपजाइ ।
देखौ ढीठि देति नहिँ माता, राख्यौ गेँद चुराइ ॥
तब बृषभानु-सुता हँसि बोली, हम पै नाहिँ कन्हाइ ।
काहे कौं झकझोरत नोखे, चलहु न देउँ बताइ ॥
देखि बिनोद बाल सुत कौ तब, महरि चली मुसुकाइ ।
सूरदास के प्रभु की लीला, को जानै इहिँ भाइ ॥६८२॥१३००॥

* राग धनाश्री

‡ बातनि लई राधा लाइ ।
चलहु जैवे बिपिन बृंदा, कहत स्याम बुझाइ ॥
जब, जहाँ, तन बेष धारौ, तहाँ[1] तुम हित जाइ ।
|| मैं कुहूँ नहिँ करौं अंतर, निगम भेद न पाइ ॥
¶ तुव परस तन-ताप मेटौं, काम-द्वंद गँवाइ[2] ।
चतुर नागरि हँसि रही सुनि, चंद-बदन नवाइ ॥
मदनमोहन भाव जान्यौ, गगन मेघ छवाइ[3] ।
स्याम-स्यामा-गुप्त-लीला, सूर क्यौं कहै गाइ ॥६८३॥१३०१॥

---

† यह पद केवल (वे, ल, शा, गो, जौ, रा) में है ।

* (के, क, पू) नट ।

‡ यह पद (ना, वृ, कॉ, श्या) में नहीं हैं ।

(१) तहाँ तुमही पाइ—३, ६, १४,१७ ।

|| यह चरण (के) में नहीं है । इसके स्थान पर एक यह चरण अंत में विशेष है—सग मिलि दोउ ठाढे परस्पर बातैं करत बनाइ ।

¶ यह चरण (रा) में नहीं है । इसके स्थान पर ७वाँ चरण यह रखा है—घटा कारी धौरि उनई और डोलत बाइ ।

(२) बहाइ—१, ११ । (३) छपाइ—१,११ ।

सुख-विलास

* राग गौड मलार ।

† गगन[1] घहराइ जुरी घटा कारी ।
पवन-झकझोर, चपला-चमक चहुँ ओर, सुवन-तन चितै नँद डरत भारी ॥
कह्यौ बृषभानु की कुँवरि सौं बोलि कै, राधिका कान्ह घर लिए जा री ।
दोउ घर जाहु सँग, गगन भयौ स्याम रँग, कुँवर-कर गह्यौ बृषभानु-बारी ॥
गए बन घन ओर, नवल नंद-किसोर, नवल राधा, नए कुंज भारी ।
अंग पुलकित भए, मदन[2] तिन तन जए, सूर प्रभु स्याम स्यामा बिहारी ॥
६८४॥१३०२॥

राग कामोद

‡ नयौ नेह, नयौ गेह, नयौ रस, नवल कुँवरि बृषभानु-किसोरी ।
नयौ पितांबर, नई चूनरी, नई-नई बूँदनि भीजति गोरी ॥
नये कुंज, अति पुंज नये द्रुम, सुभग जमुन-जल पवन हिलोरी ।
सूरदास प्रभु नव रस बिलसत नवल राधिका जोबन-भोरी[3] ॥
॥६८५॥१३०३॥

---

* (के) मेघ मलार । (क) मलार ।

† यह पद (ना, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है ।

(१) गगन गरजि घहराइ जुरी घटा कारी—१,३,१४,१७ । (२) मदन तिन तन तए—३ । मदन तन सर जए—६,१७ ।

‡ यह पद (ना, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है ।

(३) जोरी—६,१७ ।

* राग कान्हरौ

† नवल गुपाल, नवेली राधा, नये प्रेम-रस पागे।
अंतर[1] बन-बिहार दोउ क्रीड़त, आपु-आपु अनुरागे॥
सोभित सिथिल बसन मनमोहन, सुखवत स्रम के पागे[2]।
मानहुँ बुझी मदन की ज्वाला, बहुरि प्रजारन लागे॥
कबहुँक बैठि अंस भुज धरि कै, पीक कपोलनि पागे।
अति रस-रासि लुटावत लूटत, लालचि[3] लाल सभागे॥
नहिं छूटति[4] रति-रुचिर भामिनी, वा रस मैं दोउ पागे[5]।
मनहुँ सूर कल्पद्रुम की सिधि, लै उतरी फल आगे॥६८६॥१३०४॥

राग मलार

‡ उतारत हैं कंठनि तैं हार।
हरि[6] हिय मिलत होत है अंतर, यह मन[7] कियौ बिचार॥
भुजा बाम पर कर-छबि लागति, उपमा अंत न पार।
मनहुँ कमल-दल नाल[8] मध्य तैं, उयौ अदभुत आकार॥
चुंबत अंग परस्पर जनु जुग, चंद करत हित-चार।
दसननि बसन चाँपि सु चतुर अति, करत रंग बिस्तार॥
गुन-सागर अरु रस-सागर मिलि, मानत सुख ब्यवहार।
|| सूर स्याम स्यामा नव रस रमि, रीझे नंदकुमार॥६८७॥१३०५॥

---

* (क) नट।

† यह पद (ना, कॉ, रा) में नहीं है।

(१) नव तरु—१,११। नित प्रति—१६। (२) बागे—१,३,६,६, ११,१५,१६। (३) लालच लगे—१,११। (४) जूटति—६, १७। खूटति—१४। (५) षागे—६, १४,१७।

‡ यह पद (ना, स, वृ, कॉं, रा, श्या) में नहीं है।

(६) हरि हर—१, १५, १७। हरि गर—१४। (७) हम—६,१७। (८) कमल—१,११,१५,१७।

|| (गो) में इस पद में ये दो पाद अन्यान्य प्रतियों से अधिक हैं—
भुजा बाम मिलि इह छबि, लागत बरनौ उह उनहार।
मानहु चद आपने ससीपते, कियौ पास निरवार॥

राग कान्हरा

† नवल किसोर नवल नागरिया ।
अपनी भुजा स्याम-भुज ऊपर, स्याम-भुजा अपनैं उर धरिया ॥
क्रीड़ा करत तमाल-तरुन-तर स्यामा स्याम उमँगि रस भरिया ।
यौं लपटाइ रहे उर-उर ज्यौं, मरकत मनि कंचन मैं[१] जरिया ॥
उपमा काहि देउँ, को लायक, मन्मथ कोटि वारने करिया ।
सूरदास बलि-बलि जोरी पर, नंद-कुँवर बृषभानु-कुँवरिया ॥
॥६८८॥१३०६॥

राग गौरी

‡ आजु नँद-नंदन रंग भरे ।
बिबि लोचन सु बिसाल दुहुँनि के, चितवत चित्त हरे ॥
भामिनि मिले परम सुख[२] पायौ, मंगल प्रथम करे ।
कर सौं कर जु कर्‌यौ कंचन ज्यौं, अंबुज उरज धरे ॥
आलिंगन दै अधर पान करि, खंजन कंज[३] लरे ।
|| हठ करि मान कियौ जब[४] भामिनि, तब गहि पाइ परे ॥
पुहुप मंजरी मुक्तनि माला, अँग अनुरागि धरे[५] ।
रचना सूर रची बृंदाबन, आनँद-काज करे ॥६८९॥१३०७॥

---

† यह पद (ना, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है ।

(१) मनि—३, १७ ।

‡ यह पद (ना, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है ।

(२) सचु—६, १४, १७ ।

(३) खज—१ ।

|| (वे, गो) में इस चरण के पश्चात् ये दो प्रक्षिप्त चरण मिलते हैं—लै गए पुलिन मध्य कालिंदी, रस बस अनँग अरे । सुरति नाद मुख बेनु सुधा सुनि, तपियनि तप जु टरे ॥

(४) नव—१, ६, ११, १७ ।

(५) भरे—१, ११, १४ ।

राग नट

† हरि हँसि भामिनी उर लाइ ।
सुरति[1] अंत गोपाल रीझे, जानि अति सुखदाइ ॥
हरषि प्यारी अंक भरि, पिय रही कंठ लगाइ ।
हाव भाव, कटाच्छ लोचन, कोक-कला सुभाइ ॥
देखि बाला अतिहिँ कोमल, मुख निरखि मुसुकाइ ।
सूर प्रभु रति-पति के नायक, राधिका समुहाइ[2] ॥

॥६६०॥१३०८॥

राग गौड़ मलार

‡ नवल नेह नव पिया नयो-नयो दरस,
बिवि तन मिले पिय अधर धरो री ।
प्रीति की रीति प्रान चंचल करत लखि,
नागरो नैन सौं चिबुक मोरी ॥
काम की केलि कमनीय चंद्रक चकोर,
स्वाति कौ बूँद चातक परौ री ।
सूरदास रसरासि रस बरसि कै चली,
जनौ हर-तिलक कुहू उग्यौ री ॥

॥६६१॥१३०९॥

---

† यह पद (ना, त्रृ, कां, रा, श्या) में नहीं है ।

(१) सुरतिवंत—१,११ । (२) समुझाइ—१,१४ ।

‡ यह पद (ना, स, का, के, कों, पू, रा, श्या) में नहीं है । जिन प्रतियों में यह मिलता है उनमें इसका पाठ अत्यधिक विकृत हो गया है । छंद तथा अर्थ दोनों ही अस्पष्ट हो गए हैं । सब प्रतियों की सहायता से कुछ सुधार की चेष्टा की गई है ।

गृह-गमन

राग गौरी

† तुरत गए नँद-सदन कन्हाई ।
अंकम दै राधा घर पठई, बादर जहँ-तहँ दिए उड़ाई ॥
प्यारी की सारी आपुन लै, पीतांबर राधा उर लाई ।
जो देखै जसुमति हरि ओढ़े, मन यह कहति कहाँ धौं पाई ॥
जननी-नैन तुरत लखि लीन्हौ, तबहिँ स्याम इक बुद्धि उपाई ।
सूरदास जसुमति सुत सौं कहै, पति ओढ़नी कहाँ गँवाई ॥
॥६६२॥१३१०॥

राग सारंग

‡ पीत उढ़नियाँ[1] कहाँ बिसारी ।
यह तौ लाल ढिगनि की ओरै, है काहू की सारी ॥
हौं गोधन लै गयौ जमुन-तट, तहाँ हुतीँ पनिहारी ।
भीर भई सुरभी सब बिडरीँ, मुरली भली सम्हारी ॥
हौं लै भज्यौ ओर काहू की, सो लै गई हमारी ।
सूरदास प्रभु भली बनाई, बलि जसुमति महतारी ॥
॥६६३॥१३११॥

---

† यह पद (ना, वृ, कॉं, रा, श्या) में नहीं है।

‡ यह पद (ना, वृ, कॉं, रा, श्या) में नहीं है।

(१) पिछौरी—३ ।

* राग धनाश्री

† मैया री मैं जानत[1] वाकौं ।
पीत उढ़नियाँ जो मेरी लै गई, लै आनौ धरि ताकौं ॥
हरि की माया कोउ न जानै, आँखि धूरि सी दीन्हो ।
लाल ढिगनि की सारो ताकौं, पोत उढ़नियाँ कीन्ही ॥
पीतांबर लै जननि दिखायौ, लै आन्यौ तिहिं पास ।
सूर मनहिं मन कहति जसोदा, तरुनि पढ़ावति गाँस ॥
॥६६४॥१३१२॥

* राग धनाश्री

‡ स्यामहिं देखि महरि मुसक्यानी ।
पोतांबर काकैं घर बिसरयौ, लाल[2] ढिगनि की सारी आनी ॥
ओढ़नि आनि दिखाई मोकौं, तरुनिनि की सिखई बुधि ठानी ।
घर लै-लै मेरौ सुत भुरवतिं, ये ऐसी सब दिन की जानी ॥
हरि अंतरजामी रति-नागर जानि, लई जननी पहिचानी ।
सूर निरखि मुख सकुचि भगाने, या लीला की यहै सयानी ॥
॥६६५॥१३१३॥

---

* (जौ) नट ।
† यह पद (ना, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है ।
(१) जान न—१ ।
* (क) सोरठ ।
‡ यह पद (ना, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है ।
(२) काहू की ढिग—३,६,१७

राग कल्यान

† सुंदरि गई गृह समुहाइ।
दोहनी कर दूध लीन्हे, जननि टेरी बुलाइ॥
प्रेम पीत निचोल हरि कौ, कहूँ धर्‌यौ छिपाइ।
और की औरै कहति कछु, मातु मनहिँ डराइ॥
कुँवरि कौं कहुँ दीठि लागी, निरखि कै पछिताइ।
सूर तब वृषभानु-घरनी, राधिका उर लाइ॥६६६॥१३१४॥

राग कान्हरौ

‡ जननी कहति कहा भयौ प्यारी।
अबहीँ खरिक गई तू नीकैँ, आवत हीँ भई कौन बिथा री॥
एक बिटिनियाँ सँग मेरे ही, कारैँ खाई ताहि तहाँ री।
मो देखत वह परी धरनि गिरि, मैँ डरपी अपनैँ जिय भारी॥
स्याम बरन इक ढोटा आयौ, यह नहिँ जानति रहत कहाँ री।
कहत सुन्यौ नँद कौ यह बारौ, कछु पढ़ि कै तुरतहिँ उहिँ झारी॥
मेरौ मन भरि गयौ त्रास तैँ, अब नीकौ मोहिँ लागत ना री[1]।
सूरदास अति चतुर राधिका, यह कहि समुझाई महतारी॥
॥६६७॥१३१५॥

---

† यह पद (ना, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

‡ यह पद (ना, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

(१) मा री—१,३,६,१७।

राग गौड़ मलार

† कुँवरि सौं कहति बृषभानु-घरनी ।
नैंकु नहिं घर रहति, तोहिं कितनौ कहति,
रिसनि मोहिं दहति, बन भई हरनी ॥
लरिकिनी सबनि घर, तोसी नहिं कोउ निडर,
चलति नभ चितै नहिं[1] तकति धरनी ।
बड़ी करबर टरी, साँप सौं ऊबरी, बात
कैं कहत तोहिं लगति जरनी ॥
लिखी मेटै कौन, करै करता जौन,
सोइ ह्वैहै जु होनहारि करनी ।
सुता लई उर लाइ, तनु निरखि पछिताइ,
डरनि गई कुम्हिलाइ सूर बरनी ॥६६८॥१३१६॥

* राग गौड़ मलार

‡ महर बृषभानु की यह कुमारी ।
देवधामी करत, द्वार द्वारैं परत,
पुत्र द्वै, तीसरैं यहै बारी ॥
भई बरष सात की, सुभ घरी जात की,
प्यारी दोउ भ्रात की, बची भारी ।

---

† यह पद (ना, वृ, कॉ, रा, श्या) मे नहीं है ।
(१) जो तकै—१, ६, ११ । यौ तकै—३ ।
* (के, क) गौड़ ।
‡ यह पद (ना, वृ, कॉ, रा, श्या) मे नहीं है ।

कुँवरि दई अन्हवाइ, गई तन-मुरझाइ,
बसन पहिराइ, कछु कहति खा री ॥
जाहि जनि खरिक-तन, खेलि अपनैं सदन,
यह सुनति हँसति मन स्याम-नारो ।
सूर प्रभु-ध्यान धरि, हरषि आनंद भरि,
गाँव घर खेलिहौं कहति का री[1] ! ॥६९९॥१३१७॥

राधिका जी का यशोदा-गृहागमन — राग आसावरी

† खेलन कैं मिस कुँवरि राधिका, नंद-महरि[2] कैं आई (हो) ।
सकुच सहित मधुरे करि[3] बोली, घर हौ कुँवर कन्हाई (हो) ॥
सुनत स्याम कोकिल सम[4] बानी, निकसे अति अतुराई (हो) ।
माता सौं कछु करत कलह हे[5] , रिस डारी बिसराई (हो) ॥
मैया री तू इनकौं चीन्हति, बारंबार बताई (हो) ।
जमुना-तीर काल्हि मैं भूल्यौ, बाहँ पकरि लै आई (हो) ॥
आवति इहाँ तोहिं सकुचति है, मैं दै सौंह बुलाई (हो) ।
सूर स्याम ऐसे गुन-आगर, नागरि बहुत रिझाई (हो) ॥
॥७००॥१३१८॥

---

(१) प्यारी—६, १७ ।
† यह पद (ना, वृ, रा, श्या) में नहीं है ।
(२) महर घर—६, १७ । (३) सुर—३,१६ । (४) धुनि —३,६, १४,१७ । (५) हरि सौं—१,११ ।

राग आसावरी

† को जानै हरि की चतुराई ।
नैन-सैन संभाषन कीन्हौ, प्यारी की उर-तपनि मिटाई[1] ॥
मनहीँ मन दोउ रीझि मगन भए, अति आनँद उर मैँ न समाई ।
कर पल्लव हरि भाव बतावत, एक प्रान द्वै देह बनाई ॥
जननी-हृदय प्रेम उपजायौ, कहति कान्ह सौँ लेहु बुलाई ।
सूर स्याम गहि बाँह राधिका, ल्याये महरि बिहँसि[2] बैठाई ॥
॥७०१॥१३१६॥

राग सूहं

‡ देखि, महरि मनहीँ जु सिहानी ।
बोलि लई, बूझति नँदरानी[3] कहि मधुरे मधु बानी ॥
ब्रज मैँ तोहिँ कहूँ नहिँ देखी, कौन गाउँ है तेरौ ।
भली काल्हि[4] कान्हहिँ गहि ल्याई, भूल्यौ तौ[5] सुत मेरौ ॥
नैन बिसाल, बदन अति सुंदर, देखत नीकी, छोटी ।
सूर महरि सबिता सौँ, बिनवति, भली स्याम की जोटी ॥
॥७०२।१३२०॥

---

† यह पद (ना, वृ, काँ, रा, श्या) मेँ नहीँ है।
① बुझाई—१, ११, १५ ।
② निकट—१,११,१५ ।

‡ यह पद (ना, वृ, काँ, रा, श्या) मेँ नहीँ है।
③ नँदरानी कुँवरि कहति मधुरे मधु बानी—१,३,११,१४ । जसुदा जो कुँवरि कहति मधुरे मधु बानी—६ ।
④ करी—१, ११, १५
⑤ हो—११ ।

† नाम कहा तेरौ री प्यारी ।
बेटी कौन महर की है तू, को तेरी महतारी ॥
धन्य कोख जिहिँ तोकौँ राख्यौ, धनि घरि जिहिँ अवतारी ।
धन्य पिता माता तेरे, छबि निरखति हरि-महतारी ॥
मैँ बेटी बृषभानु महर की, मैया तुमकौँ जानतिँ ।
जमुना-तट बहु बार मिलन भयौ, तुम नाहिँन पहिचानतिँ ॥
ऐसी कहि, वाकौँ मैँ जानति, वह तौ बड़ी छिनारि ।
महर बड़ौ लंगर सब दिन कौ, हँसति देति मुख गारि ॥
राधा बोलि उठी, बाबा कछु, तुमसौँ ढीठौ कीन्हौ ।
ऐसे समरथ कब मैँ देखे, हँसि प्यारिहिँ उर लीन्हौ ॥
महरि कुँवरि सौँ यह कहि भाषति, आउ करौँ तेरी चोटी ।
सूरदास हरषित नँदरानी, कहति महरि हम जोटी ॥७०२॥१३२१॥

राग गौरी

‡ जसुमति राधा कुँवरि सँवारति ।
बड़े बार सीमंत सीस के, प्रेम सहित[1] निरुवारति ॥
माँग पारि बेनी[2] जु सँवारति, गूँथी सुंदर भाँति ।
गोरैँ भाल बिंदु बंदन, मनु, इंदु प्रात-रबि काँति ॥
सारी चीरि[3] नई फरिया लै, अपने हाथ बनाइ ।
अंचल सौँ मुख पोँछि अंग सब, आपुहि लै पहिराइ ॥

---

† यह पद (ना, वृ, रा, श्या) में नहीं है।

‡ यह पद (ना, वृ, रा, श्या) में नहीं है।

① सहित लै लै—१, ३, ६, ११, १४। ② बेनी सँवारि कै—११। ③ चीर—१,३। वीनि—६, १७।

तिल चाँवरी, बतासे, मेवा, दियौ कुँवरि की गोद ।
सूर स्याम-राधा-तनु चितवत, जसुमति मन-मन मोद ॥७०४॥
॥१३२२॥

राग कल्यान

† खेलौ जाइ स्याम सँग राधा ।
यह सुनि कुँवरि हरष मन कीन्हौं, मिटि[1] गई अंतर-बाधा ॥
जननी निरखि चकित[2] रही[3] ठाढ़ी, दंपति रूप-अगाधा ।
देखति भाव दुहुँनि कौ सोई, जो चित करि अवराधा ॥
सँग खेलत दोउ झगरन लागे, सोभा बढ़ी अबाधा[4] ।
मनहुँ तड़ित घन, इंदु तरनि, ह्वै बाल करत रस-साधा ॥
निरखत बिधि भ्रमि भूलि पर्‌यौ तब, मन मन करत समाधा ।
सूरदास प्रभु और रच्यौ बिधि, सोच भयौ तन दाधा ॥७०५॥१३२३॥

* राग केदारौ

‡ बिधि कैं आन बिधि कौ सोच ।
निरखि छबि बृषभानु-तनया, सकल मम कृत पोच ॥
रमा, गौरी, उर्बसी, रति, इंद्र[5]-बधू समेत ।
तूल दिन-मनि कहा सारँग, नाहिं उपमा देत ॥
चरन निरखि, निहारि नख-छबि, अजित देख्यौ[6] तोकि । (?)
चित्त गुनि महिमा न जानत, धीर राखत रोकि ॥

---

† यह पद (ना, वृ, कॉं, रा) में नहीं है।
(१) मिटी जु—१,११। (२) हरषि—३। (३) भई—१,६।
(४) उपाधा—३,६,१४।
* (के, क) बिहागरा।
‡ यह पद (ना, वृ, कॉं, रा, श्या) में नहीं है।
(५) इंदिरा बिभौ—१। इंद्र बिभव (बिभौ)—३,६,११,१४।
(६) देखै—१,६,११,१४।

सूर आन बिरंचि बिरच्यौ, भक्ति-निज-अवतार ।
अबल के बल सबल देखि[1], अधीन सकल सिँगार ॥७०६॥
॥१३२४॥

राधा-गृह-गमन

* राग नट

† राधे महरि सौं कहि चली ।
आनि खेलत[2] रह्यौ प्यारी, स्याम तुम हिलिमिली ॥
बोलि उठे गुपाल राधा, सकुच जिय कत करति ।
मैं बुलाऊँ नाहिँ आवति, जननि कौं कत डरति ॥
माइ जसुदा देखि तोकौं, करति कितनौ छोह ।
सुनत हरि की बात प्यारी, रही मुख-तन जोह ॥
हँसि चली बृषभानु-तनया, भई बहुत अबार ।
सूर-प्रभु चित तैं टरत नहिँ, गई घर कैं द्वार ॥७०७॥१३२५॥

* राग बिहागरौ

‡ बूझति जननि कहाँ हुती प्यारी ।
किन तेरे भाल तिलक रचि कीनौ, किहिँ कच गूँदि माँग सिर पारी ॥
खेलति रही नंद कैं आँगन, जसुमति कही कुँवरि ह्याँ आरी ।

---

(१) दिखिअति तन सकल सिगार—६ ।
* (के) नट नारायन ।
† यह पद (ना, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है ।
(२) खेलौ रहसि—१,११ ।
* (काँ) रामकली ।
‡ यह पद (ना) में नहीं है ।

मेरौ नाउँ बूझि बाबा कौ, तेरौ[1] बूझि दई हँसि गारी ॥
तिल चाँवरी गोद[2] करि दीनी फरिया दई फारि नव सारी।
मो-तन चितै, चितै ढोटा-तन, कछु सबिता सौं[3] गोद पसारो ॥
यह सुनि कै बृषभानु मुदित चित, हँसि-हँसि बूझत बात दुलारी।
सूर सुनत रस-सिंधु बढ़्यौ अति, दंपति एकै[4] बात बिचारी ॥
॥७०८। १३२६॥

* राग गौरी

† मेरे आगैं महरि जसोदा, तोकौं[5] गारो दीन्ही।
वाकी घात[6] सबै मैं जानति, वै जैसी[7] मैं चीन्ही ॥
तोकौं कहि पुनि कह्यौ बबा कौं, बड़ौ धूत बृषभान।
तब मैं कह्यौ ठग्यौ कब तुमकौं, हँसि लागी लपटान ॥
भली कही तू मेरी बेटी, लयौ आपनौ दाउ।
जो मोहिं कह्यौ सबै गुन उनके, हँसि-हँसि कहति सु भाउ ॥
फेरि-फेरि बूझति राधा सौं, सुनत हँसतिं सब नारि।
सूरदास बृषभानु-घरनि, जसुमति कौं गावति गारि ॥७०९॥१३२७॥

* राग गौरी

कहत कान्ह जननी समुझाइ।
जहँ-तहँ डारे रहत खिलौना, राधा जनि लै जाइ चुराइ ॥

---

(१) तेरौ नाम बूझि दई गारी—३,९। (२) गोद दिखरावति—३, ६, १४, १७। (३) तन—९,१४,१७। (४) मन-मन यहै विचारी—१, ३, ६,६,११,१५, १७, १८।

* (के) बिलावल। (क) बिहागरौ। (कॉ) आसावरी।

† यह पद (ना, बृ, श्या) में नहीं है।

(५) मैया री तोहि—१, ३, ६, ११,१४,१७। (६) बात—१,११। (७) जैसी तैसी—१, ३, ६, ११, १४,१७।

* (ना) धनाश्री।

साँझ सवारैं आवन लागी, चितै रहति मुरली-तन आइ ।
इनहीं मैं मेरे प्रान बसत हैं, तेरे भाऐं नैंकु न माइ ॥
राखि छपाइ, कह्यौ करि मेरौ, बलदाऊ कौं जनि पतिआइ ।
सूरदास यह कहति जसोदा, को लैहै मोहिं लगौ बलाइ ॥७१०॥
॥१३२८॥

राग आसावरी

† मेरे लाल के प्रेम[1] खिलौना, ऐसौ को लै जैहै री ।
नैंकु सुनत जो पैहौं ताकौं, सो कैसैं ब्रज रैहै री ॥
बिनु देखैं तू कहा करैगी, सो कैसैं प्रगटैहै री ।
अजहुँ उठाइ राखि री मैया, माँगे[2] तैं कह दैहै री ॥
आवतहीं लै जैहै राधा, पुनि पाछैं पछितैहै री ।
सूरदास तब कहति जसोदा, बहुरि स्याम बिरुझैहै री ॥७११॥
॥१३२९॥

* राग नट

सैंतति महरि खिलौना हरि के ।
जानति टेव आपने सुत की, रोवत हैं पुनि लरिकै ॥
धरि चौगान, बेत[3], मुरली धरि, अरु भौंरा चकडोरी ।
प्रेम सहित लै-लै धरि राखति, यह सब मेरे कोरी ॥
स्रवननि सुनत अधिक रुचि लागति, हरि की बतियाँ भोरी ।
सूर स्याम सौं कहति जसोदा, दूध पियहु बलि तोरी ॥७१२॥१३३०॥

---

† यह पद (का) में नहीं है ।
(1) प्रान—१, १५ । (2) माँगे फिरि कहँ पैहै री—३ । (3) वेनु—१,३ । वेष—१४ ।
* (ना) बिलावल ।

राधिका का पुनरागमन   राग बिलावल

† उठी प्रातहीँ राधिका, दोहनि कर लाई।
महरि सुता सौँ तब कह्यौ, कहाँ चली अतुराई[1] ॥
खरिक दुहावन जाति हौँ, तुम्हरी सेवकाई।
तुम ठकुराइनि घर रहौ, मोहिँ चेरी पाई ॥
रीती देखी दोहनी, कत खीझति धाई।
काल्हि गई अवसेरि[2] कै, ह्वाँ[3] उठे रिसाई ॥
गाइ गईँ सब प्याइ कै, प्रातहिँ नहिँ आई।
ता कारन मैँ जाति हौँ, अति करति चँड़ाई ॥
यह कहि जननी सौँ चली, ब्रज कौँ समुहाई।
सूर स्याम गृह-द्वारहीँ, गो करत[4] दुहाई ॥७१३॥१३३१॥

राग बिलावल

‡ सुता महर बृषभानु की, नँद-सदनहिँ आई।
गृह-द्वारैँ ही अजिर मैँ, गो दुहत कन्हाई ॥
स्याम चितै मुख-राधिका, मन हरष बढ़ाई।
राधा हरि-मुख देखि कै, तन-सुरति भुलाई ॥
महरि देखि कीरति-सुता, तिहिँ लियौ बुलाई।
दंपति कौ सुख देखि कै, सूरज बलि जाई ॥७१४॥१३३२॥

---

† यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) मेँ नहीँ है।
(१) चतुराई—१४। (२) बासर चढ़े—१७। (३) ह्याँ—१, ३, ६, १७। (४) दुहत कन्हाई—१७।

‡ यह पद (ना, का, वृ, काँ, पू, रा, श्या) मेँ नहीँ है।

राग बिलावल

† आजु राधिका भोरहीं जसुमति कैं आई ।
महरि मुदित हँसि यौं कह्यौ, मथि मान-दुहाई ॥
आयसु लै ठाढ़ी भई, कर नेति सुहाई ।
रीतै माठ बिलोवई, चित जहाँ कन्हाई ॥
उनके मन की कह कहौं, ज्यौं दृष्टि लगाई ।
लैया[१] नोई बृषभ सौं, गैया बिसराई ॥
नैननि मैं जसुमति लखी, दुहुँ की चतुराई ।
सूरदास दंपति-दसा, कापै[२] कहि जाई ॥७१५॥१३३३॥

राग बिलावल

‡ महरि कह्यौ री लाड़िली, किन मथन सिखायौ !
कहँ मथनी, कहँ माठ है, चित कहाँ लगायौ ॥
॥अपनैं घर यौंहीं मथै, करि[३] प्रगट दिखायौ ।
कै मेरैं घर आइ कै, तैं सब बिसरायौ ?
मथन नहीं मोहिं आवई, तुम सौंह दिवायौ ।
तिहिं कारन मैं आइ कै, तुव बोल रखायौ ॥
नंद-घरनि तब मथि दह्यौ, इहिं भाँति बतायौ ।
सूर निरखि मुख स्याम कौ, तहँ ध्यान लगायौ ॥७१६॥१३३४॥

---

† यह पद (ना, का, वृ, कॉ, पू, रा, श्या) में नहीं है।

① लै आनौ इक—१। ② वरनी नहिं—१,३,११।

‡ यह पद (ना, का, वृ, कॉ, पू, रा, श्या) में नहीं है।

|| यह चरण (क) में नहीं है। इसके स्थान पर उसमें यह चरण है—हँसि बोली तब राधिका कह्यौ अब मोहिं आयौ।

③ कहि—१,३,६।

राग सूहौ

† दुहत स्याम गैया बिसराई।
नोई लै पग बाँधि बृषभ कैं, दोहनि माँगत कुँवर कन्हाई॥
ग्वाल एक दोहनि लै दीन्ही, दुहौ स्याम अति करौ चँड़ाई।
हँसत परस्पर तारी दै दै, आजु कहाँ तुम रहे भुलाई॥
कहत सखा, हरि सुनत नहीं से, प्यारी सौं रहे चित अरुझाई।
सूर स्याम राधा-तन चितवत, बड़े चतुर की गई चतुराई॥७१७॥
॥१३३५॥

राग रामकली

‡ राधा ये ढँग हैं री तेरे।
वैसे हाल मथत दधि कीन्हे, हरि मनु लिखे चितेरे॥
तेरौ मुख देखत ससि लाजै, और कहौ क्यौं बाँचै।
नैना तेरे जलज-जीत हैं, खंजन तैं अति नाचैं॥
चपला तैं चमकति अति प्यारी, कहा करैगी स्यामहिं।
सुनहु सूर ऐसेहिं दिन खोवति, काज नहीं तेरे धामहिं?।७१८॥१३३६॥

राग गूजरी

§ मेरौ कह्यौ नाहिंन सुनति।
तबहिं तैं इकटक रही है, कहा धौं मन गुनति॥

---

† यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।
‡ यह पद (ना, का, वृ, कॉं, रा, श्या) में नहीं।
§ यह पद (ना, शा, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

अबहिँ तैँ तू करति ये ढँग, तोहिँ अबहीँ होन।
स्याम कौँ तू ऐसैँ ठगि लियौ, कछु न जाने जौन॥
सुता है बृषभानु की री, बड़ौ उनकौ नाउँ।
सूर प्रभु नँद[1] -सुवन निरखत, जननि कहति सुभाउ॥७१९॥१३३७॥

राग सूहा

† प्रगटी प्रीति, न रही छपाई।
परी दृष्टि बृषभानु-सुता की, दोउ अरुझे, निरवारि न जाई॥
बछरा छोरि खरिक कौँ दीन्हौ, आपु कान्ह तन-सुधि बिसराई।
नोवत बृषभ निकसि गैयाँ गईँ, हँसत सखा कह दुहत कन्हाई॥
चारौँ नैन भए इक ठाहर, मनहीँ मन दुहुँ रुचि उपजाई।
सूरदास स्वामी रति-नागर, नागरि देखि गई नगराई॥७२०॥१३३८॥

राग सारंग

‡ चितैबौ छाँड़ि दै री राधा।
हिलि-मिलि खेलि स्यामसुंदर सौँ, करति काम कौ बाधा॥
कै बैठो रहि भवन आपनैँ, काहे कौँ बनि आवै।
मृग-नैनी हरि कौ मन मोहति, जब तू देखि दुहावै॥
कबहुँक कर तैँ गिरति दोहिनी, कबहुँक बिसरति नोई।

---

(1) नँदनदन—१।

† यह पद (ना, का, ना/२, काँ, रा, श्या) मेँ नही है।

‡ यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) मेँ नही है।

कबहुँक बृषभ दुहत है मोहन, ना जानौं का होई ॥
कौन मंत्र जानति तू प्यारी, पढ़ि डारति हरि-गात ।
सूर स्याम कौं धेनु दुहन दै, कहति जसोदा मात ॥७२१॥१३३६॥

राग धनाश्री

† धेनु दुहन दै मेरे स्यामहिं ।
जौ आवै तौ सहज रूप सौं, बनि आवति बेकामहिं ॥
सूधैं आइ स्याम सँग खेलै, बोलै, बैठै, धामहिं ।
ऐसौ ढंग मोहिं नहिं भावै, लेइ[१] न ताके नामहिं ॥
घर अपनैं तू जाहि राधिका, कहति महरि मन तामहिं ।
सूर आइ तू करति अचगरी,को बकिहै निसि-जामहिं ॥७२२॥१३४०॥

* राग जैतश्री

‡ बार बार तू जनि ह्याँ आवै ।
मैं कह करौं, सुतहिं नहिं बरजति, घर तैं मोहिं बुलावै ॥
मोसौं कहत तोहिं बिनु देखैं, रहत न मेरौ प्रान ।
छोह लगति मोकौं सुनि बानी, महरि तुम्हारी आन ॥
मुँह पावति तबहीं लौं आवति, औरै लावति मोहिं ।
सूर समुझि जसुमति उर लाई, हँसति कहति हौं तोहिं ॥७२३॥
॥१३४१॥

---

† यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है ।
① लेउ—१, ३, १७ । लेउँ—११ ।
* (गो) धनाश्री ।
‡ यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है ।

※ राग गौरी

† हँसत कह्यौ मैं तोसौं प्यारी।
मन मैं कछू बिलग जनि मानै, मैं तेरी महतारी॥
बहुतैं दिवस आजु तू आई, राधा मेरैं धाम।
महरि बड़ी मैं सुघरि[1] सुनी है, कछु सिखयौ गृह-काम ?
मैया जब मोहिं टहल कहति कछु, खिझत बबा बृषभान।
सूर महरि सौं कहति राधिका, मानौ अतिहिं अजान॥७२४॥१३४२॥

राग रामकली

‡ दूध-दोहनी लै री मैया।
दाऊ टेरत सुनि मैं आऊँ तब लौं करि बिधि घैया॥
मुरली-मुकुट-पितांबर दै मोहिं, लै आई महतारी।
मुकुट धर्‌यौ सिर, कटि पीतांबर, मुरली कर लियौ धारी॥
राधा-राधा कहि मुरली मैं खरिकहिं लई बुलाइ।
सूरदास प्रभु चतुर-सिरोमनि, ऐसी बुद्धि उपाइ॥७२५॥१३४३॥

राग रामकली

§ कुँवरि कह्यौ, मैं जाति महरि, घर।
प्रातहिं आई खरिक दुहावन, कहति दोहनी लै कर॥

※ (के, पू) जैतश्री।
† यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है।

(१) चतुर—३।
‡ यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है।

§ यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है।

तब खरिकहिँ कोउ ग्वाल गए नहिँ, तिन कारन ब्रज आई।
जौ देखौं तौ अजिरहिँ बैठे, गैया दुहत कन्हाई॥
कनक-दोहनी तनक दुहत, मोहिँ देखि अधिक रुचि लागी।
तनक राधिका तनक सूर-प्रभु, देखि महरि अनुरागी॥७२६॥१३४४॥

राग गूजरी

† या घर प्यारी आवति रहियौ।
महरि हमारी बात चलावत? मिलन हमारौ कहियौ॥
एक दिवस मैं गई जमुन-तट, तहँ उन देखी आइ।
मोकौं देखि बहुत सुख पायौ, मिली अंकम लपटाइ॥
यह सुनि कै चली कुँवरि राधिका, मोकौं भई अबार।
सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हौ, मोहन नंद-कुमार॥७२७॥१३४५॥

* राग गूजरी

‡ सैन दै प्यारी लई बुलाइ।
खेलन कौं मिस करि कै निकसे, खरिकहिँ गए कन्हाइ॥
जसुमति कौं कहि प्यारी निकसी, घर कौ नाउँ सुनाइ।
कर दोहनी लिए तहँ आई, जहँ हलधर के भाइ॥
तहाँ मिलीँ सब संग-सहेली, कुँवरि कहाँ तू आई?
प्रातहिँ धेनु दुहावन आई, अहिर तहाँ नहिँ पाई॥
तबहिँ गई मैं ब्रज उतावली, आई[1] ग्वाल बुलाइ।
सूर स्याम दुहि देन कह्यौ, सुनि राधा गई मुसुकाइ॥७२८॥१३४६॥

---

† यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है।
* (के, पू) बिलावल।

‡ यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है।
① ल्याई—१, ३, ११, १५, १७।

* राग धनाश्री

† धेनु दुहन जब स्याम बुलाई।
स्रवन सुनत तहँ गई राधिका, मन हरि लियौ कन्हाई॥
सखी संग की कहति परस्पर, कहँ यह प्रीति लगाई।
यह[1] बृषभानु-पुरा, ये ब्रज मैं, कहाँ दुहावन[2] आई॥
मुख देखत हरि कौ चक्रित भई, तन की सुधि बिसराई।
सूरदास प्रभु कैं रसबस भई, काम करी कठिनाई॥७२६॥१३४७॥

* राग गूजरी

‡ गाउँ बसत एते दिवसनि मैं, आजु कान्ह मैं देखे।
जे दिन गए बिना हरि[3]-दरसन ते[4] सब बृथा अलेखे॥
कहियै जो[5] कछु होइ सखी[6] री, कहिबे[7] के अनुमानैं।
सुंदर[8] स्याम निकाई कौ सुख, नैना ही पै जानैं॥
तब तैं रूप ठगौरी लागी, जुग समान पल बितवत।
तजि[9] कुल-लाज सूर के प्रभु के मुख-तन फिरि-फिरि चितवत॥७३०॥
॥१३४८॥

---

* (के, पू) बिलावल।
† यह पद (ना, का, वृ, कॉ, श्या) में नहीं है।
(1) यह बृषभानपुरे की—। (2) दुहुनि बनि आई—१७।
* (ना) कान्हरौ। (कॉ) श्री। (श्या) गौरी।
‡ यह पद (का, रा) में नहीं भिन्न-भिन्न प्रतियों में यह भिन्न-भिन्न स्थानों पर पाया जाता है। पर (वे, के, गो, जौ, पू) में यह इसी स्थान पर मिलता है। अतः यह इस सस्करण में यही रखा गया है।
(3) ब्रजनाथहिँ—१, ६, ११ १५, १७। (4) तेई बृथा करि लेखे—१, ११, १५, १७। ते सब लिखे अलेखे—३, १६। ते सब गए अलेखे—१६। (5) तौ जो होइ—१६। (6) सयानी कहिबे को अनुमानै—१, ११, १५। सयानी कहिबे को सुख मानै—६, १७। (7) कै कहिबे—१६। (8) नदकुमार—२, १६, १६। (9) कुल-मरजाद गँवाइ सूर प्रभु फिरि फिरि—२ १६, १६।

राग सारंग

† बलि जाऊँ गैया दुहि दीजै ।
बूँद परत रँग ह्वै है फीकौ, सुरँग चूनरी भीजै ॥
मीठौ दूध गाइ धूमरि कौ, कछु दीजै कछु पीजै ।
सूर स्याम-दरसन कैं कारन, अधिक[१] निहोरौ कीजै ॥७३१॥१३४६॥

राग देवगंधार

‡ मोहनि[२]-कर तैं दोहनि लीन्ही, गो-पद बछरा जोरे ।
हाथ धेनु-थन, बदन तिया-तन, छीर[३] छींटि छल छोरे ॥
आनन रही ललित पय छींटैं, छाजति छबि तृन तोरे ।
मनौ निकसे[४] निकलंक कला-निधि, दुग्ध-सिंधु मधि बोरे[५] ॥
दै घूँघट पट ओट नील, हँसि, कुँवरि मुदित मुख मोरे ।
मनहुँ सरद-ससि कौं मिलि दामिनि, घेरि लियौ घन घोरे ॥
इहिँ बिधि रहसत-बिलसत दंपति, हेत हियैं नहिँ थोरे ।
सूर उमँगि आनंद-सुधा-निधि, मनु बेला बल फोरे ॥७३२॥१३५०॥

राग रामकली

§ हरि सौं धेनु दुहावति प्यारी ।
करति मनोरथ पूरन मन[६], बृषभानु महर की बारी ॥

---

† यह पद केवल (स, वृ, श्या) में है। (स) में यह पद "प्रात गई नीकैं उठि घर तैं" इत्यादि पद के पश्चात् रखा हुआ है। पर वह स्थान इसके लिये उपयुक्त नहीं है। अतः यह यहाँ रखा जाता है।

(१) कान्ह—१६।

‡ यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

(२) मोहन—१, ३, ११, १७। (३) छीर छाछ—१, ३, १५। छीट छाछि—६, १७। (४) निकसि—१, ३, ११, १५, १७। (५) खोरे—३, ५, १७।

§ यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

(६) सब विधि मन वृषभानु की बारी।

दूध-धार मुख पर छबि लागति, सो उपमा अति भारी।
मानौ चंद कलंकहिँ धोवत, जहँ-तहँ बूँद सुधा री॥
हाव-भाव रस-मगन भए दोउ, छबि निरखति ललिता री।
गो-दोहन-सुख करत सूर-प्रभु, तीनिहुँ भुवन कहा री॥७३३॥
॥१३५१॥

राग सूहौ

† तुम पै कौन दुहावै गैया।
लिए रहत हो कनक-दोहनी, बैठत हो अधपैया॥
अति रस काम की प्रीति जानि कै, आवत ग्वरिक दुहैया।
इत चितवत, उत धार चलावत, यहै सिखायौ मैया?
गुप्त प्रीति तासौँ करि मोहन, जो है तेरी दैया।
सूरदास प्रभु झगरौ सीख्यौ[१], ज्यौँ घर खसम गुसैँया॥७३४॥
॥१३५२॥

राग धनाश्री

‡ करि न्यारी हरि आपुनि गैयाँ।
नाहिँन[२] बसति लाल कछु तुम्हरैँ, तुमसे सबै ग्वाल इक ठैयाँ॥
नहिँ आधीन तेरे बाबा के, नहिँ तुम हमरे नाथ-गुसैयाँ।
हम तुम जाति-पाँति के एकै, कहा भयौ अधिकी[३] द्वै गैयाँ?

---

† यह पद केवल (वे, ल, शा, गो, जौ) में है।
(१) माड्यौ—११।

‡ यह पद केवल (वे, शा, गो) में है।
(२) नहिँन बसात लाल कछु तुमसौँ—१, ११। (३) अधिकै द्वै मैया—१।

जा दिन तैं सचरे गोपिनि मैं, ताही दिन तैं करत लँगरैयाँ।
मानी हार सूर के प्रभु तब[१], बहुरि न करिहौं नंद दुहैयाँ ॥७३५॥
॥१३५३॥

राग सूहा

† धेनु दुहत अतिहीं रति बाढ़ी।
एक धार दोहनि पहुँचावत, एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी॥
मोहन-कर तैं धार चलति, परि मोहनि-मुख अतिहीं छबि गाढ़ी।
मनु जलधर जलधार वृष्टि-लघु, पुनि-पुनि प्रेम चंद पर बाढ़ी[२]॥
सखी संग की निरखतिं यह छबि, भईं ब्याकुल मन्मथ की डाढ़ी।
सूरदास प्रभु के रस[३] -बस सब, भवन-काज तैं भईं उचाढ़ी ॥७३६॥
॥१३५४॥

राग बिलावल

‡ दुहि दीन्ही राधा की गाइ[४]।
दोहनि नहीं देत कर तैं हरि, हा[५] हा करि परै पाइ॥
ज्यौं ज्यौं प्यारी हा हा बोलति, त्यौं त्यौं हँसत कन्हाइ।
बहुरि करौ प्यारी तुम हा हा, दैहौं नंद-दुहाइ॥

---

(१) सों—१, ११।
† यह पद (ना, वृ, कॉ, श्या) मे नही है।
(२) चाढी—३, १७। (३) बस भईं सब—१, ३, ११, १५।
‡ यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) मे नही है।
(४) गैयॉ, इसी प्रकार अन्य चरणों मे पैयॉ, कन्हैया, दुहैया, करैया, पठैया—सर्व। (५) हा हा करति परति है पैयॉ—१, ३, ६, ११, १४, १५, १७।

तब दीन्ही प्यारो-कर दोहनि, हा हा बहुरि कराइ ।
सूर स्याम रस हाव-भाव करि, दीन्ही कुँवरि पठाइ ॥७३७॥१३५५॥

राग बिलावल

† चलन चहति पग चलै न घर कौं ।
छाँडत बनत नहीं कैसे हूँ, मोहन सुंदर बर कौं ॥
अंतर नैंकु करौं नहिं कबहूँ, सकुचति हौं पुर-नर कौं ।
कछु दिन जैसैं तैसैं खोऊँ, दूरि करौं पुनि डर कौं ॥
मन मैं यह बिचार करि सुंदरि, चली आपने पुर कौं ।
सूरदास प्रभु कह्यौ जाहु घर, घात कर्‌यौ[१] नख उर कौं ॥७३८॥
॥१३५६॥

* राग मलार

‡ मुरि-मुरि चितवति नंद-गली ।
डग न परत ब्रजनाथ-साथ बिनु, बिरह-बिथा मैं जाति चली ॥
बार-बार मोहन-मुख-कारन, आवति फिरि-फिरि संग अली ।
चली पीठि दै दृष्टि फिरावति, अंग-अंग आनंद रली ॥
॥ कीर-कपोत-मीन-पिक-सारँग-केहरि-कदली-छबि बिदली ।
सूरदास प्रभु पास दुहावति, धनि-धनि श्री वृषभानु-लली ॥७३९॥

राग बिलावल

† सिर दोहनी चली लै प्यारी ।
फिरि चितवत हरि हँसे निरखि मुख, मोहन मोहनि डारी ॥
ब्याकुल भई, गई सखियनि लौं, ब्रज कौं गए कन्हाई ।
और अहिर सब कहाँ तुम्हारे, हरि सौं धेनु दुहाई ?
यह सुनि कै चकित भई प्यारी, धरनि परी मुरझाइ ।
सूरदास सब सखियनि उर भरि, लीन्ही कुँवरि उठाइ ॥७४०॥१३५८॥

* राग रामकली

‡ क्यौं री कुँवरि गिरी मुरझाई ?
यह बानी कही सखियनि आगैं, मोकौं कारैं खाई ॥
चलीं लिवाइ सुता-बृषभानुहिं, घरहीं तन समुहाई ।
डारि दियौ भरो दूध-दुहनियाँ, अबहीं नीकैं आई ॥
यह कारौ सुत नंदमहर कौ, सब हम फूँक लगाई ।
सूर सखिनि मुख सुनि यह बानी, तब यह बात सुनाई ॥७४१॥
॥१३५९॥

राग सारंग

§ मोहि लई नैननि की सैन ।
श्रवन सुनत सुधि-बुधि सब बिसरी, हौं लुबधी मोहन-मुख-बैन ॥

---

† यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) मे नहीं है ।

* (रा) धनाश्री ।

‡ यह पद (ना, वृ, कॉ, श्या) मे नहीं है ।

§ यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) मे नहीं है ।

आवत हुते कुमार खरिक तैं, तब अनुमान कियो सखि मैन ।
निरखत अंग अधिक रुचि उपजी, नख-सिख सुंदरता को ऐन ॥
मृदु मुसुक्यानि हर्‌यौ मन को मनि,तब तैं तिल न रहति चित चैन।
सूर स्याम यह बचन सुनायौ, मेरी धेनु कही दुहि दैन ॥७४२॥
॥१३६०॥

राग धनाश्री

† सखियनि मिलि राधा घर लाईं ।
देखहु महरि सुता अपनी कौं, कहुँ इहिं कारैं खाई ॥
हम आगैं आवति, यह पाछैं, धरनि परी भहराई ।
सिर तैं गइ दोहनी ढरिकै, आपु रही मुरझाई ॥
स्याम-भुअंग डस्यौ हम देखत, ल्यावहु गुनी बुलाई ।
रोवति जननि कंठ लपटानी, सूर स्याम गुन राइ ॥७४३॥१३६१॥

राग सारंग

‡ प्रात गइ नीकैं उठि घर तैं ।
मैं बरजी कहँ जाति री प्यारी, तब खीझी रिस-झर तैं ॥
सीतल-अंग स्वेद सौं बूड़ो, सोच पर्‌यौ मन डर तैं ।
अतिहिं हठीली कह्यौ न मानति, करति आपने बर तैं ॥
औरै दसा भइ छिन भीतर, बोले गुनी नगर तैं ।
सूर गारुड़ी गुन करि थाके, मंत्र न लागत थर तैं ॥७४४॥१३६२॥

† यह पद (ना, ल, का, वृ, कौं, रा, श्या) में नहीं है।

‡ यह पद (ना, का, वृ, कौं, रा, श्या) में नहीं है।

राग नट नारायन

† चले सब गारुड़ी पछिताइ।

नैँकुहूँ नहिँ मंत्र लागत, समुझि काहु न जाइ॥

बात बूझत संग सखियनि, कहौ हमहिँ बुझाइ।

कहा कहि राधा सुनायौ, तुम सबनि सौं आइ?

महा बिषधर स्याम अहिबर, देखि सबहीँ धाइ।

फूँक-ज्वाला हमहुँ लागी, कुँवरि उर पर खाइ॥

गिरी धरनी मुरछि तबहीँ, लई तुरत उठाइ।

सूर-प्रभु कौं बेगि ल्यावहु, बड़ौ[1] गारुड़ि राइ॥७४५॥१३६३॥

राग आसावरी

‡ नंद-सुवन गारुड़ी बुलावहु।

कह्यौ हमारौ सुनत न कोऊ, तुरत जाहु, लै[2] आवहु॥

ऐसौ गुनी नहीँ त्रिभुवन कहुँ, हम जानतिँ हैँ नीकैँ।

आइ जाइ तौ तुरत जियावहि, नैँकु छुवत उठै जी कै॥

देखौ धौं यह बात हमारी, एकहि मंत्र जिवावै।

नंद महर कौ सुत सूरज जो, कैसेहुँ ह्याँ लौं आवै॥

७४६॥१३६४॥

* राग आसावरी

§ डसी री स्याम भुअंगम कारे।

मोहन-मुख-मुसुक्यानि मनहुँ, बिष, जात मैर सौं मारे॥

---

† यह पद (ना, शा, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है।

① गोप—११।

‡ यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है।

②अब लै ब्रज—१,११। ब्रज लै अब—३। उनको लै–१७।

* (का) मलार।

§ यह पद (वे, स, ल, क, जौ, काँ) में दो स्थानों पर है। एक यहाँ और दूसरे उद्धव-प्रसंग में। दूसरे स्थान पर इस पद में

फुरै न मंत्र, जंत्र, गद[1] नाहीं, चले गुनी गुन डारे।
प्रेम प्रीति बिष[2] हिरदै लाग्यौ, डारत है तनु जारे॥
निर्बिष होत नहीं कैसैंहूँ, बहुत गुनी पचि हारे।
सूर स्याम गारुड़ी बिना को, जो सिर गाढ़[3] उतारे? ॥७४७॥१३६५॥

* राग धनाश्री

† बेगि चलौ पिय कुँवर कन्हाई।
जा-कारन तुम यह बन सेयौ, सो तिय मदन-भुअंगम खाई॥
नैन सिथिल, सीतल नासा-पुट, अंग तपति कछु सुधि न रहाई[4]।
सकसकात तन भीजि पसीना, उलटि पलटि तन तोरि जम्हाई॥
अनजानत[5] मूरनि कौं जित-तित, उठि दौरीं जिनि जहाँ बताई।
ताहि कछू उपचार न लागत, कर मीडैं सहचरि पछिताई॥
तुम[6] दरसन इक बार मनोहर, यह औषधि इक सखी लखाई।
जौ सूरज प्रभु ज्यायौ चाहत, तो ताकौं अब देहु दिखाई ॥७४८॥
॥१३६६॥

* राग नट

‡ सुनत तिहारी बातैं मोहन च्वै चले दोऊ नैन।
छुटि गई लोक-लाज आतुर ह्वै, रहि न सकत चित चैन॥

ये दो चरण ऊपर से जोड़े हुए मिलते हैं—
भली भई तुम आए ऊधव,
बँद दै चले हमारे।
आनहु वेगि गारुड़ी गोविंदहिं,
जो इहिं विषहिं उतारै॥
किंतु प्रस्तुत संस्करण में यह इसी स्थान पर रखा जाता है। और उक्त दोनों प्रक्षिप्त चरण पाद-टिप्पणी में दे दिए जाते हैं।

(१) दई—१। गड़ै—६। (२) विषहर दौ—३, ११, १५। मुख हरि दौ—६। विपहा दव—६,१७। (३) गाढ़—१,३,१७। गारुड़—११।

* (के, पू) सारग।

† यह पद (ना, स, कॉ, रा) में नहीं है।

(४) पराई—१६। (५) बिन देखे मूरति को जित कित —१, ११, १५। (६) बार बार बूझति हैं ऐसे कमलनैन की सुंदरताई—१, ११, १५। तुम अस्वनीकुमार मनोहर —६, १७।

* (के, पू) सारंग।

‡ यह पद (ना, स, का, वृ, क, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

उर काँप्यौ, तन पुलकि पसीज्यौ, बिसरि गए मुख-बैन ।
ठाढ़ी ही जैसैं-तैसैं झुकि, परी धरनि तिहि ऐन ॥
कोउ सित[1], कोऊ कमल, कुंकुमा, कोउ धाई जल लैन ।
ताहि कछू उपचार न लागत, डसी कठिन अहि-मैन ॥
हौं पठई इक सखी सयानी, अनबोली[2] दै सैन ।
सूर स्याम राधिका मिलैं बिनु, कहा लगे दुख दैन ॥७४९॥१३६७॥

राग सारंग

† तनु बिष रह्यौ है छहरि ।
नंद-सुवन गारुड़ी कहत हैं पठवे धौं सु महरि ॥
गए अवसान, भीर नहिं भावै, भावै नहीं चहरि ।
ल्यावौ गुनी जाइ गोविंद कौं, बाढ़ी अतिहिं लहरि ॥
देखी उरहिं बीचहीं खाई, माती भई जहरि ।
सूर स्याम-बिषधर कहुँ खाई, यह कहि चली डहरि ॥७५०॥
॥१३६८॥

राग सुघरई

‡ बृषभानु की घरनि जसोमति पुकार्‌यौ ।
पठै सुत काज कौं कहति हौं लाज तजि, पाइ परिकै महरि करति आर्‌यौ ॥
प्रात खरिकहिं गई, आइ बिहवल भई, राधिका कुँवरि कहुँ डस्यौ कारौ ।
सुनी यह बात, मैं आई अतुरात, ह्याँ, गारुड़ी बड़ौ है सुत तुम्हारौ ॥

---

(१) सिर गहि—१,११,१५ । सीत—१७ । (२) अब बोली दै सैन—१, ११, १५ । अनबोली उह दैन—६, १७ ।

† यह पद (ना, का, दृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है ।

‡ यह पद (ना, का, दृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है ।

यह वड़ौ धरम नँद-घरनि तुम पाइहौ, नैंकु काहैं न सुत कौं हँकारौ ।
सूर सुनि महरि यह कहि उठी सहजहीं, कहा तुम कहतिं, मेरौ अतिहिं बारौ !
॥७५१॥१३६९॥

राग सुघरई

† कान्हहिं पठै, महरि कौं कहति है पाइनि परि ।
आजु कहूँ कारैं उहिं, खाई है काम-कुँवरि ॥
सब दिन आवै सुजाइ, जहाँ-तहाँ फेरि फिरि ।
अबहीं खरिक गई आइ रही है जिय बिसरि ॥
निसि के उनींदे नैन, तैसे रहे ढरि ढरि ।
कीधौं कहुँ प्यारी कौं, लागी टटकी नजरि ॥
तेरौ सुत गारुड़ो, सुन्यौ है बात री महरि ।
सूरदास देखैं प्रभु, जैहै री गरद झरि ॥७५२॥१३७०॥

राग आसावरी

‡ जंत्र-मंत्र कह जानै मेरौ ?
यह तुम जाइ गुनिनि कौं बूझौ, इहाँ[1] करति कत झेरौ ॥
आठ बरस कौ कुँवर कन्हैया, कहा कहति तुम ताहि ?
किनि बहकाइ दई है तुमकौं, ताहि पकरि लै जाहि ॥
मैं तौ चकित भई हौं सुनि कै, अति अचरज यह बात ।
सूर स्याम गारुड़ी कहाँ कौ, कहँ आई बितताता ॥७५३॥१३७१॥

---

† यह पद (ना, का, इ, कां, श्या) में नहीं है। इसका पाठ बहुत कुछ अस्त-व्यस्त पाया जाता है। सब प्रतियों से सहायता लेकर इस संस्करण में शुद्ध पाठ रखने की चेष्टा की गई है।

‡ यह पद (ना, का, इ, कां, रा, श्या) में नहीं है।

(1) बिन कारन कत करति हौ—१,३,११,१५,१७।

राग टोड़ी

† महरि, गारुड़ी कुँवर कन्हाई।
एक बिटिनियाँ कारैं खाई, ताकौं स्याम तुरतहीं ज्याई॥
बोलि लेहु अपने ढोटा कौं, तुम कहि कै देउ नैंकु पठाई।
कुँवरि राधिका प्रात खरिक गई तहाँ कहूँ धौं कारैं खाई॥
यह सुनि महरि मनहिं मुसुक्यानी, अबहिं रही मेरैं गृह आइ।
सूर स्याम राधहिं कछु कारन, जसुमति समुझि रही अरगाइ॥
॥७५४॥१३७२॥

राग आसावरी

‡ तब हरि कौं टेरति नँदरानी।
भली भई सुत भयौ[१] गारुड़ी, आजु सुनी[२] यह बानी॥
जननी-टेर सुनत हरि आए, कहा कहति री मैया?।
कीरति महरि बुलावन आई, जाहु न कुँवर कन्हैया॥
कहूँ राधिका कारैं खाई, जाहु न आवौ झारि।
जंत्र-मंत्र कछु जानत हौ तुम, सूर स्याम बनवारि।७५५॥१३७३॥

राग गूजरी

§ मैया एक मंत्र मोहिं आवै।
बिषहर खाइ मरै जो कोऊ, मोसौं मरन न पावै॥

---

† यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

‡ यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है। ① बड़े—३। ② सुनी स्रवननि यह—१,३,११,१५,१७।

§ यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

एक दिवस राधा-सँग आई, खरिक बिटिनियाँ और।
तहाँ ताहि बिषहर नैं खाई, गिरी धरनि उहिं ठौर॥
यह बानी बृषभानु-घरनि कही तब जसुमति पतियाई।
सूर स्याम मेरे बड़ौ गारुड़ी, राधा ज्यावहु जाई॥७५६॥१३७४॥

राग सुघरई

† जसुमति कह्यौ सुत, जाहु कन्हाई। कुँवरि जिवायैं अतिहिं भलाई॥
आजुहिं मो गृह खेलन आई। जात कहूँ कारैं तिहिं खाई॥
कीरति महरि लिवावन आई। जाहु न स्याम, करहु अतुराई॥
सूर स्याम कौं चली लिवाई। गई बृषभानु-पुरहिं समुहाई॥७५७॥१३७५॥

राग देवगंधार

‡ हरि गारुड़ी तहाँ तब आए।
यह बानी बृषभानुसुता सुनि, मन-मन हरष बढ़ाए॥
धन्य-धन्य आपुन कौं कीन्हौ अतिहिं गई मुरझाइ[१]।
तनु पुलकित रोमांच प्रगट भए आनँद-अस्रु बहाइ॥
बिह्वल देखि जननि भई ब्याकुल अँग बिष गयौ समाइ।
सूर स्याम-प्यारी दोउ जानत अंतरगत कौ भाइ॥७५८॥१३७६॥

राग रामकली

§ रोवति महरि फिरति बिततानी।
बार-बार लै कंठ लगावति, अतिहिं सिथिल भई पानी॥

---

† यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

‡ यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

(१) समुझाई—३।

§ यह पद (ना, का, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है।

नंद-सुवन कैं पाइ परी लै, दौरि महरि तब आइ।
ब्याकुल भई लाड़िली मेरी, मोहन देहु जिवाइ॥
कछु पढ़ि-पढ़ि कर, अंग परस करि, बिष अपनौ लियौ झारि।
सूरदास-प्रभु बड़े गारुड़ी, सिर पर गाड़ू डारि॥७५९॥१३७७॥

* राग रामकली

† लोचन दए कुँवरि उघारि।
कुँवर देख्यौ नंद कौ तब सकुची अंग सम्हारि॥
बात बूझति जननि सौं री कहा है यह आज।
मरत तैं तू बची प्यारी करति है कह लाज॥
तब कहति तोहिं[1] कारैं खाई कछु न रहि सुधि गात।
सूर प्रभु तोहिं ज्याइ लीन्ही कही[2] कुँवरि सौं मात[3]॥७६०॥
॥१३७८॥

राग सारंग

‡ बड़ौ मंत्र कियौ कुँवर कन्हाई।
बार-बार लै कंठ लगायौ, मुख चूम्यौ दियौ घरहिं पठाई॥
धन्य कोषि वह महरि जसोमति, जहाँ अवतरयौ यह सुत आई।
ऐसौ चरित तुरतहीं कीन्हौं, कुँवरि हमारी मरी जिवाई॥
मनहीं मन अनुमान कियौ यह, बिधिना जोरी भली बनाई।
सूरदास-प्रभु बड़े गारुड़ी, ब्रज-घर-घर यह घैरु चलाई॥७६१॥१३७९॥

---

* (का) सूहो। (रा) धनाश्री।
† यह पद (ना, का, द्व, काँ, रा) में नहीं है।

(१) मोहिं—१, ११। (२) की कुँवरि सौं नात—१। (३) वात—१८।

‡ यह पद (ना, का, द्व, काँ, रा, श्या) में नहीं है।

राग सुघरई

† भले कान्ह हो बिषहिँ उतारचो । नाम गारुड़ी प्रगटचौ तिहारो ।
जननि कहति मेरो सुत बारो । युवति कहतिँ हम तन धौं[1] निहारो ।
अब को निकरे साँझ सबारो । जान्यौ ब्रजहिँ बसत ऐसौ कारो ।
यह निज मंत्र न हिय तैं बिसारो । बहुरि कारो कहुँ करै पसारो ।
सूरदास-प्रभु सबहिन प्यारो । ताहि डसन जाकौ हियौ उजारो ॥७६२॥
॥१३८०॥

राग रामकली

‡ नीकैँ बिषहिँ उतारचौ स्याम ।
बड़े गारुड़ी अब हम जाने, संगहिँ रहत सु काम ॥
ऐसौ मंत्र कहाँ तुम पायौ, बहुत कियौ यह काम ।
मरी आनि राधिका जिवाई, टेरत एकहि नाम ॥
हम समझीँ यह बात तुम्हारी, जाहु आपनैँ धाम ।
सूर स्याम मनमोहन नागर, हँसि बस कीन्हीँ बाम ॥७६३॥
॥१३८१॥

राग रामकली

§ हँसि बस कीन्ही घोष-कुमारि ।
बिवस भईँ तन की सुधि बिसरी, मन हरि लियौ मुरारि ॥

---

† यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है। जिन प्रतियों में यह प्राप्त है उनमें इसका पाठ बहुत कुछ विकृत हो गया है। सब प्रतियों को मिलाकर इस संस्करण में शुद्ध पाठ रखने की चेष्टा की गई है।

(१) धन—११।

‡ यह पद (ना, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है।

§ यह पद (ना, काँ, रा,) में नहीं है।

गए स्याम ब्रज-धाम आपनैं, जुवति मदन-सर मारि।
लहर उतारि राधिका-सिर तैं, दई तरुनिनि पै डारि॥
करतिं बिचार सुंदरी सब मिलि, अब सेवहु त्रिपुरारि।
माँगहु यहै देहु पति हमकौं, सूर-सरन बनवारि॥७६४॥१३८२॥

चीर-हरन लीला　　　　राग जैतश्री

† भवन रवन सबही बिसरायौ।
नंद-नँदन जब तैं मन हरि लियौ, बिरथा[1] जनम गँवायौ॥
जप, तप, ब्रत, संजम, साधन तैं, द्रवित[2] होत पाषान।
जैसैं मिलै स्याम सुंदर बर, सोइ कीजै, नहिं आन॥
यहै मंत्र दृढ़ कियौ सबनि मिलि, यातैं होइ सुहोइ।
बृथा जनम जग मैं जिनि खोवहु, ह्याँ अपनौ नहिं कोइ॥
तब प्रतीत सबहिनि कौं आइ, कीन्हौ दृढ़ बिस्वास।
सूर स्यामसुंदर पति पावैं, यहै हमारी आस॥७६५॥१३८३॥

राग आसावरी

‡ गौरी-पति पूजतिं ब्रजनारि।
नेम धर्म सौं रहति क्रिया-जुत[3], बहुत करतिं मनुहारि॥
यहै कहतिं पति देहु उमापति गिरिधर नंद-कुमार।
सरन राखि लीजै सिव संकर तनहिं त्रसावत मार॥

---

† यह पद (ना, का) में नहीं है।
(१) कहत बृथा यह जनम गँवायौ—सर्व। (२) प्रगट होत—सर्व।
‡ यह पद (ना, स, का, रा) में नहीं है।
(३) जित—१, ११, १७।

कमल-पुहुप मालूर-पत्र-फल नाना सुमन सुवास ।
महादेव पूजति मन बच करि[1] सूर स्याम की आस ॥७६६॥१३८४॥

राग रामकली

† सिव सौं बिनय करतिँ कुमारि ।
जोरि कर, मुख करतिँ अस्तुति, बड़े प्रभु त्रिपुरारि ॥
सीत भीत न करतिँ सुंदरि, कृस भईँ सुकुमारि ।
छहौं रितु तप करतिँ नीकैँ, गेह-नेह बिसारि ॥
ध्यान धरि, कर जोरि, लोचन मूँदि, इक-इक जाम ।
बिनय अंचल छोरि रबि सौं, करतिँ हैँ सब बाम ॥
हमहिँ होहु दयाल दिन-मनि, तुम बिदित संसार ।
काम अति तनु दहत दीजै, सूर हरि भरतार ॥७६७॥१३८५॥

राग नटनारायन

‡ रबि सौँ बिनय करतिँ कर जोरे ।
प्रभु अंतरजामी, यह जानी, हम[2] कारन जल खोरे ॥
प्रगट भए प्रभु जलही भीतर, देखि सबनि कौ प्रेम ।
मीजत पीठि सबनि के पाछैँ, पूरन कीन्हौ नेम ॥
फिरि देखैँ तौ कुँवर कन्हाई, मीजत रुचि सौँ पीठि ।
सूर निरखि सकुचीँ ब्रज-जुवतीँ, परी स्याम-तन दीठि ॥७६८॥
॥१३८६॥

---

(१) क्रम—१, ११ ।
† यह पद (ना, का, रा) मेँ नहीँ है ।
‡ यह पद (ना, का, रा) मेँ नहीँ है ।
(२) हम कारन जप तप जल खोरे—१, ३, ६, ११, १५, १७ ।

राग देवगंधार

† अति तप देखि कृपा हरि कीन्हौ।
तन की जरनि दूरि भई सबकी, मिलि तरुनिनि सुख दीन्हौ॥
नवल किसोर ध्यान जुवतिनि मन, वहै प्रगट दरसायौ।
सकुचि गईँ अँग-बसन सम्हारतिँ, भयौ सबनि मनभायौ॥
मन-मन कहति भयौ तप पूरन, आनँद उर न समाई।
सूरदास-प्रभु लाज न आवति, जुवतिनि माँझ कन्हाई॥७६९॥१३८७॥

राग सारंग

‡ हँसत स्याम ब्रज-घर कौं भागे।
लोगनि[१] कहतिँ सुनावतिँ, मोहन करन लँगरई लागे॥
हम अस्नान करतिँ जल-भीतर, मीँडत पीठि कन्हाई।
कहा भयौ जौ नंद महर-सुत हमसौं, करत ढिठाई॥
लरिकाई तबहीँ लौं नीकी चारि बरष के पाँच।
सूर जाइ कहिहौं जसुमति सौं, स्याम करत ये नाच॥७७०॥१३८८॥

राग सारंग

§ प्रेम बिबस सब ग्वालि भईँ।
उरहन देन चली जसुमति कौं, मनमोहन के रूप रईँ॥
पुलक अंग अँगिया उर दरकी, हार तोरि कर आपु लईँ।
अंचल चीरि, घात उर नख करि, यह मिस करि नँद-सदन गईँ॥

---

† यह पद (ना, का, रा) में नहीं है।

‡ यह पद (ना, का, रा) में नहीं है।

(१) लोगनि कौं यह कहतिँ सुनावति—१, ३, ११, १५, १७।

§ यह पद (ना, का, रा) में नहीं है।

जसुमति माइ कहा सुत सिखयौ, हमकौं जैसे हाल किए।
चोली फारि हार गहि तोरे, देखौ उर नख-घात दिए॥
अंचल चीरि अभूषन तोरे, घेरि धरत उठि भागि गए।
सूर महरि मन कहति स्याम धौं, ऐसे लायक कबहिं भए॥७७१॥
॥१३८६॥

राग गौरी

† महरि स्याम कौं बरजति काहैं न।
जैसे हाल किए हरि हमकौं, भए कहूँ जग आहैं न॥
और बात इक सुनौ स्याम की, अतिहिं भए हैं ढीठ।
बसन बिना अस्नान करति हम, आपुन मींड़त पीठ॥
आपु कहति मेरौ सुत बारौ, हियौ उघारि दिखाऊँ।
सुनतहु लाज कहत नहिं आवै तुमकौं कहा लजाऊँ॥
यह बानी जुवतिनि मुख सुनि कै, हँसि बोली नँदरानी।
सूर स्याम तुम लायक नाहीं, बात तुम्हारी जानी॥७७२॥१३९०॥

राग गौरी

‡ बात कहौ जो लहै बहै री।
बिना भीति तुम चित्र लिखति हौ, सो कैसैं निबहै री॥
तुम चाहति हौ गगन-तरैयाँ, माँगैं कैसैं पावहु।
आवत हीं मैं तुम लखि लीन्ही, कहि मोहिं कहा सुनावहु॥
चोरी रही, छिनारौ अब भयौ, जान्यौ ज्ञान तुम्हारौ।
औरै गोप-सुतनि नहिं देखौ, सूर स्याम है बारौ॥७७३॥१३९१॥

---

† यह पद (ना, का, रा) में नहीं है।

‡ यह पद (ना, का, रा) में नहीं है।

राग मलार

† ग्वालिनि हैँ घरहीँ की बाढ़ो ।

निसि अरु दिन प्रति देखति हौं, अपनैँ हीँ आँगन ठाढ़ी ॥
कबहिँ गुपाल कंचुकी फारी, कब भए ऐसे जोग ।
अबहिँ नैँकु खेलन सीखे हैँ, यह जानत सब लोग ॥
नितहीँ झगरत हैँ मनमोहन, देखि प्रेम-रस-चाखी ।
सूरदास-प्रभु अटक न मानत, ग्वाल सबै हैँ साखी ॥७७४॥१३९२॥

राग गौरी

‡ इहिँ अंतर हरि आइ गए ।

मोर-मुकुट पीतांबर काछे, कोमल[1] अंग भए ॥
जननि बुलाइ बाहँ गहि लीन्हौ, देखहु री मदमाती ।
इनहीँ कौं अपराध लगावति, कहा फिरति इतराती ॥
सुनिहैँ लोग भ्रष्ट अबहूँ करि, तुमहिँ कहाँ की लाज ।
सूर स्याम मेरौ माखन-भोगी, तुम आवतिँ बेकाज ॥७७५॥१३९३॥

* राग केदारौ

§ अबहीँ देखे नवल किसोर ।

घर आवत हीँ तनक भए हैं, ऐसे तन के चोर ॥
कछु दिन करि दधि-माखन-चोरी, अब चोरत मन मोर ।
बिबस भई, तन-सुधि न सम्हारति, कहति बात भई भोर ॥

---

† यह पद केवल (वे, ना, गो, जौ) मेँ है ।

‡ यह पद (ना, का, रा) मेँ नहीँ है ।

(१) अति कोमल छबि (तन) अग भए—१,३,११,१५,१७,१६ ।

* (के, कॉ, पू) देवगधार ।

§ यह पद (ना, का, रा) मेँ नहीँ है ।

यह बानी कहतहीँ लजानी, समुझ्झि भई जिय-ओर ।
सूर स्याम-मुख निरखि चली घर, आँद लोचन लोर[1] ॥७७६॥१३६४॥

राग नटनारायन

† ब्रज घर गईं गोप-कुमारि ।
नैँकहूँ कहुँ मन न लागत, काम धाम बिसारि ॥
मात-पितु कौ डर न मानतिँ, सुनतिँ नाहिँन गारि ।
हठ करतिँ, बिरुझातिँ, तब जिय जननि जानतिँ बारि ॥
प्रातहीँ उठि चलीँ सब मिलि, जमुन-तट सुकुमारि ।
सूर-प्रभु ब्रत देखि इनकौ, नहिँन परत सम्हारि ॥७७७॥१३६५॥

राग गौरी

‡ जमुना-तट देखे नँद-नंदन ।
मोर-मुकुट, मकराकृत-कुंडल, पीत-बसन, तन चंदन ॥
लोचन तृप्त भए दरसन तैँ उर की तपति बुझानी ।
प्रेम-मगन तब भई सुंदरी, उर गदगद, मुख-बानी ॥
कमल-नयन तट पर हैँ ठाढ़े, सकुचहिँ मिलि ब्रज-नारी ।
सूरदास-प्रभु अंतरजामी, ब्रत-पूरन पगधारी ॥७७८॥१३६६॥

* राग नट

§ बनत नहीँ जमुना कौ ऐबौ ।
सुंदर स्याम घाट पर ठाढ़े, कहौ कौन बिधि जैबौ ॥

---

(१) कोर—६, १७ ।

† यह पद (ना, का, रा) मेँ नहीँ है ।

‡ यह पद (ना, का, रा) मेँ नहीँ है ।

* (रा) धनाश्री ।

§ यह पद (ना, का, काँ) मेँ नहीँ है ।

कैसैं बसन उतारि धरैं हम, कैसैं जलहिं समैबौ।
नंद-नंदन हमकौं देखैंगे, कैसैं करि जु अन्हैबौ॥
चोली, चीर, हार लै भाजत, सो कैसैं करि पैबौ।
अंकम भरि-भरि लेत सूर-प्रभु, काल्हि न इहिं पथ ऐबौ॥७७९॥
॥१३९७॥

राग रामकली

† कैसैं बनै जमुना-न्हान।
नंद कौ सुत तीर बैठौ, बड़ौ चतुर सुजान॥
हार तोरै, चीर फारै, नैन चलै चुराइ।
काल्हि धोखैं कान्ह मेरी, पीठि मींजी आइ॥
कहति जुवती बात, सुनि सब, थकित भईं ब्रज-नारि।
सूर-प्रभु कौ ध्यान धरि मन, रबिहिं[१] बाहँ पसारि॥७८०॥१३९८॥

राग गूजरी

‡ अति तप करति घोष-कुमारि।
कृष्न पति हम तुरत पावैं, काम-आतुर नारि॥
नैन मूँदतिं दरस-कारन, स्रवन सब्द बिचारि।
भुजा जोरतिं अंक भरि हरि, ध्यान उर अँकवारि॥
सरद ग्रीषम डरति नाहीं, करतिं तप तनु गारि।
सूर-प्रभु, सर्बज्ञ स्वामी, देखि रीझे भारि॥७८१॥१३९९॥

---

† यह पद (ना, का, रा) में नहीं है।

(१) लेहिं—१६।

‡ यह पद (ना, का, रा) में नहीं है।

* राग धनाश्री

† ब्रज-[1] बनिता रबि कौं कर जोरैं ।
सीत-भीति नहिँ करतिँ छहौं रितु, त्रिबिध[2] काल जल खोरैं ॥
गौरी-पति पूजतिँ, तप साधतिँ, करत रहतिँ नित नेम ।
भोग-रहित निसि जागि चतुर्दसि, जसुमति-सुत कैँ प्रेम ॥
हमकौं देहु कृष्न पति ईस्वर, और नहीँ मन आन ।
मनसा बाचा कर्म हमारैँ, सूर स्याम कौ ध्यान ॥७८२॥१४००॥

राग रामकली

‡ नीकैँ तप कियौ तनु गारि ।
आपु देखत कदम पर चढ़ि, मानि लियौ मुरारि ॥
बर्ष भर ब्रत-नेम-संजम, स्रम कियौ मोहिँ काज ।
कैसे हूँ मोहिँ भजै कोऊ, मोहिँ बिरद की लाज ॥
धन्य ब्रत इन कियौ पूरन, सीत तपति निवारि ।
काम-आतुर भजीँ मोकौं, नव तरुनि ब्रज-नारि ॥
कृपा-नाथ कृपाल भए तब, जानि जन की पीर ।
सूर-प्रभु अनुमान कीन्हौ, हरौं इनके चीर ॥७८३॥१४०१

राग बिलावल

§ बसन हरे सब कदम चढ़ाए ।
सोरह सहस गोप-कन्यनि के, अंग-अभूषन स-हित चुराए ॥

---

* (के, पू) रामकली ।
† यह पद (ना, का, रा) में नहीँ है ।
(1) ब्रज-ललना—६, १७ ।
(2) त्रिबिध काल जमुना जल खोरे—१, ३, ११, १५, १७, १६ ।
‡ यह पद (ना, का, रा) मे नहीँ है ।
§ यह पद (ना, का, रा) में नहीँ है ।

नीलांबर, पाटंबर, सारी, सेत पीत चुनरी, अरुनाए।
अति बिस्तार नीप तरु तामैं, लै-लै जहाँ-तहाँ लटकाए॥
मनि-आभरन डार डारनि प्रति, देखत छबि मनहीँ अँटकाए।
सूर, स्याम जुवतिनि ब्रत पूरन, कौ फल डारनि कदम फराए॥७८४॥
॥१४०२॥

* राग सूहौ

† आपु कदम चढ़ि देखत स्याम।
बसन अभूषन सब हरि लीन्हे, बिना बसन जल-भीतर बाम॥
मूँदत नैन ध्यान धरि हरि कौ, अंतरजामी लीन्ही जान।
बार-बार सविता सौं माँगति, हम पावैँ पति स्याम सुजान॥
जल तैँ निकसि आइ तट देख्यौ, भूषन चीर तहाँ कछु नाहिँ।
इत-उत देखि चकित भईँ सुंदरि, सकुचि गईँ फिरि जल ही माहिँ॥
नाभि प्रजंत नीर मैँ ठाढ़ी, थर-थर अँग काँपतिँ सुकुमारि।
को लै गयौ बसन आभूषन, सूर स्याम उर प्रीति बिचारि॥७८५॥
॥१४०३॥

* राग रामकली

‡ आवहु निकसि घोष-कुमारि।
कदम पर तैँ दरस दीन्हौ, गिरिधरन बनवारि॥
नैन भरि ब्रत फलहिँ देखौ, फरयौ है द्रुम डार।
ब्रत तुम्हारौ भयौ पूरन, कह्यौ नंद-कुमार॥

---

* (रा) विलावल।
† यह पद (ना) मेँ नहीँ है।
* (कॉ) गौरी।
‡ यह पद (ना, का, रा) मेँ नहीँ है।

सलिल तैं सब निकसि आवहु, बृथा सहतिँ तुषार।
देत हौँ किन लेहु मोसौँ, चीर, चोली, हार॥
बाहँ[१] टेकि बिनै करौ मोहिँ, कहत बारंबार।
सूर-प्रभु के[२] आइ आगैं, करहु सब सिंगार॥७८६॥१४०४॥

* राग रामकली

† ग्वालिनि अपने चीरहिँ लै री।
जल तैं निकसि-निकसि[३] तट, दोउ कर जोरि सीस दै-दै री॥
कत हौ सीत सहति ब्रज-सुंदरि, ब्रत पूरन सब भै री।
मेरे कहैं आइ पहिरौ पट, कृस[४] तन हेम जरै री॥
हौँ अंतरजामी जानत सब, अति[५] यह पैज करै री।
करिहौँ पूरन काम तुम्हारौ, रास[६] सरद-निसि ठै री॥
संतत सूर स्वभाव हमारौ, कत[७] भै-काम डरै री।
कौनेहुँ भाव भजै कोउ हमकौँ, तिन तन-ताप हरै री॥७८७॥१४०५॥

राग रामकली

‡ हमारे अंबर देहु मुरारी।
|| लै सब चीर कदम चढ़ि[८] बैठे, हम जल-माँझ उघारी॥

---

(१) हाथ जोरि—१६। (२) कह्यौ मेरे आगैं आनि करहु सिँगार—१, ३, ११, १७।
* (कों) धनाश्री।
† यह पद (ना, का, रा) मैँ नहीं है।
(३) निहारि निकट ह्वै मम आयसु यह सीस दै—१६। (४) अपने-अपने अग चढ़ै—१६।
(५) कहा दुरावत लाज कै—१९।
(६) सरद समै रस रास ठै—१६।
(७) कत डरपत हौ काम मै—१६।
‡ यह पद (ना) मे नही हैं।
|| (वे, गो, जौ) में इस चरण के उपरात ये प्रक्षिप्त चरण मिलते हैं—
तुम तौ कहावत हौ नँद-नदन,
हम वृषभानु - दुलारी।
तुम्हारौ अंबर जबहीं दैहैं,
जल तैं होहु सब न्यारी॥
(८) पर—१६।

तट पर बिना बसन क्यौं आवैं, लाज लगति है भारी।
चोली हार तुमहिँ कौं दीन्हौं, चीर, हमहिँ द्यौ डारी॥
तुम यह बात अचंभौ भाषत, नाँगी आवहु नारी।
सूर स्याम कछु छोह करौ जू, सीत गई तनु मारी॥७८८॥१४०६॥

* राग आसावरी

† हा हा करतिँ घोष-कुमारि।
सीत तैँ तन कँपत थर-थर, बसन देहु मुरारि॥
जो पुरुष तिय-अंग देखै, कहत दूषन भारि।
नैँकु नहिँ तुम छोह आनत, गईँ हिम सब मारि॥
मनहिँ मन अतिहीँ भयौ सुख, देखिकै गिरिधारि।
सूर-प्रभु अतिहीँ निठुर भए, नंद-सुत बनवारि॥७८९॥१४०७॥

राग बिलावल

‡ लाज ओट यह दूरि करौ।
जोइ मैँ कहौँ करौ तुम सोई, सकुच बापुरिहिँ कहा करौ॥
जल तैँ तीर आइ कर जोरहु, मैँ देखौँ तुम बिनय करौ।
पूरन ब्रत अब भयौ तुम्हारौ, गुरुजन-संका दूरि करौ॥
अब अंतर मोसौँ जनि राखहु, बार-बार हठ बृथा करौ।
सूर स्याम कहैँ चीर देत हौँ, मो आगैँ सिंगार करौ॥७९०॥१४०८॥

---

* (रा) मलार।
† यह पद (ना) मेँ नहीँ है।
‡ यह पद (ना, का, रा) मेँ नहीँ है। इसके सब तुकांतों मेँ "करौ" शब्द आया है और उसके पूर्व के शब्दों की मात्राएँ भी नहीँ मिलतीँ।

राग गूजरी

† जल तैं निकसि तीर सब आवहु ।
जैसैं सविता सौं कर जोरे, तैसेहिं जोरि दिखावहु ॥
नव बाला हम, तरुन कान्ह तुम, कैसैं अंग दिखावैं ।
जलही मैं सब बाहँ टेकि कै, देखहु स्याम रिझावैं ॥
ऐसैं नहिं रीझौं मैं तुम सौं, तटहीं बाहँ उठावहु ।
सूरदास-प्रभु कहत[१] सबनि सौं बस्त्र हार तब पावहु ॥७६१॥
॥१४०९॥

राग बिलावल

‡ हमारे देहु मनोहर चीर ।
काँपति[२], सीत तनहिं अति ब्यापत, हिम सम जमुना-नीर ॥
मानहिंगी उपकार रावरौ, करौ कृपा बलबीर ।
अतिहीं दुखित प्रान, बपु परसत प्रबल प्रचंड समीर ॥
हम दासी, तुम नाथ हमारे, चितवतिं जल मैं ठाढ़ी ।
मानहु बिकच[३] कुमुदिनी ससि सौं, अधिक प्रीति उर बाढ़ी ॥
जौ तुम हमैं नाथ कै जान्यौ, यह हम माँगैं देहु ।
जल तैं निकसि आइ बाहिर ह्वै, बसन आपने लेहु ॥
कर धरि सीस गईं हरि-सन्मुख, मन मैं करि आनंद ।
ह्वै कृपाल सूरज-प्रभु अंबर दीन्हे परमानंद ॥७६२॥१४१०॥

---

† यह पद (ना, का, रा) में नहीं है ।
(१) भाषत श्रीमुख—१६ ।

‡ यह पद (ना, स, का, वृ, कॉं, रा, श्या) में नहीं है ।
(२) कॉंपत सीतन ब्याकुल हम सब या जमुना के नीर—६,१७ ।
(३) बिकसि—१, ११, १७ ।

राग जैतश्री

† तरुनीं निकसि-निकसि तट आईं ।
पुनि-पुनि कहत लेहु पट-भूषन, जुवती स्याम बुलाईं ॥
जल तैं निकसि भईं सब ठाढ़ी, कर अँग उर पर दीन्हे ।
बसन देहु आभूषन राखहु, हा-हा पुनि-पुनि कीन्हे ॥
ऐसैं कहा बतावति हौ मोहिं, बाहँ उठाइ निहारौ ।
कर सौं कहा अंग उर मूँदौ, मेरे कहैं उघारौ ॥
सूर स्याम सोइ-सोइ हम करिहैं, जोइ-जोइ तुम सब कैहौ ।
लैहैं दाउँ कबहुँ हम तुमसौं, बहुरि कहाँ तुम जैहौ ॥७६३॥१४११॥

*राग रामकली

‡ ललन तुम ऐसे लाड़ लड़ाए ।
लै करि चीर कदम पर बैठे, किन ऐसैं ढँग लाए ॥
हा हा करतिं, कंचुकी माँगतिं, अंबर दिए मन भाए ।
कीन्ही प्रीति प्रगट मिलिबे कौं, सबके[1] सकुच गँवाए ॥
दुख अरु हाँसी सुनौ सखी री, कान्ह अचानक आए ।
सूर स्याम[2] कौ मिलन सखी अब, कैसैं दुरत दुराए ॥७६४॥१४१२

राग नट

§ सोरह सहस घोष-कुमारि ।
देखि सबकौं स्याम रीझे, रहीं भुजा पसारि ॥

---

† यह पद (ना, का, रा) में नहीं है ।

* (कॉ) नट ।

‡ यह पद (ना, का, के, क, पू, रा) में नहीं है ।

① अँखियन सरम—१, ३, ११, १५, १६ । ② दास के प्रभु को मिलबौ (मिलिबौ)—१, ११, १६ ।

§ यह पद (ना, का, रा) में नहीं है ।

बोलि लीन्ही कदम कैं तर, इहाँ आवहु नारि।
प्रगट भए तहँ सबनि कौं हरि, काम-दंद निवारि॥
बसन भूषन सबनि पहिरे, हरष भईं सुकुमारि।
सूर-प्रभु गुन भले हैं सब, ऐसे तुम बनवारि॥७६५॥१४१३॥

राग नट

† दृढ़ ब्रत कियौ मेरैं हेत।
धन्य धनि कह्यौ नंद-नंदन, जाहु सबै निकेत॥
करौं पूरन काम तुम्हरौ, सरद-रास रमाइ।
हरष भईं यह सुनत गोपी, रहीं सीस नवाइ॥
सबनि कौं अँग परसि, कीन्हौ सुफल[1] ब्रत ब्यवहार।
सूर-प्रभु सुख दियौ मिलि कै, ब्रज चल्यौ सुकुमार॥७६६॥१४१४॥

राग सूहा

‡ ब्रत पूरन कियौ नंद-कुमार। जुवतिनि के मेटे जंजार॥
जप तप करि तनु अब जनि गारौ। तुम घरनी मैं कंत तुम्हारौ॥
अंतर सोच दूरि करि डारौ। मेरौ कह्यौ सत्य उर धारौ॥
सरद-रास तुम आस पुराऊँ। अंकम[2] भरि सबकौं उर लाऊँ॥
यह सुनि सब मन हरष बढ़ायौ। मन-मन कह्यौ कृष्न पति पायौ॥
जाहु सबै घर[3] घोष-कुमारी। सरद-रास दैहौं सुख भारी॥
सूर स्याम प्रगटे गिरिधारी। आनंद सहित गईं घर नारी॥७६७॥
॥१४१५॥

---

† यह पद (ना, का, रा) में नहीं है।

[1] ब्रत कियौ तनु गारि—१, ३, ६, ११, १५, १७।

‡ यह पद (ना, का, रा) में नहीं है।

[2] हिलिमिलि करि आनद बढ़ाऊँ—१७। [3] घर कौ सुकुमारी—३, ६, १६, १७, १६।

राग आसावरी

† सिव संकर हमकौं फल दीन्हौ।
पुहुप, पान, नाना फल, मेवा, षट्-रस अर्पन कीन्हौ॥
पाइ परीं जुवतीं सब यह कहि, धन्य-धन्य त्रिपुरारी।
तुरतहिं फल पूरन हम पायौ, नंदसुवन गिरिधारी॥
विनय[1] करतिं सविता, तुम सरि को, पय अंजलि, कर जोरी।
सूर[2] स्याम पति तुम तैं पायौ, यह कहि घरहिं बहोरी॥७९८॥
॥१४१६॥

दूसरी चीर-हरन-लीला

* राग सूहौ

नंद-नँदन बर गिरिवरधारी। देखत रीझी घोष-कुमारी॥
मोर मुकुट पीतांबर काछे। आवत देखे गाइनि पाछे॥
कोटि इंदु-छबि बदन बिराजै। निरखि अंग प्रति मन्मथ लाजै[3]॥
स्रुति कुंडल छबि रबि नहिं तूलै। दसन-दमक-दुति दामिनि भूलै॥
नैन-कमल मृग-सावक मोहैं। सुक[4]-नासा पटतर कौं को है॥
अधर-बिंब-फल पटतर नाहीं। विद्रुम अरु बंधूक लजाहीं॥
देखत रीझि रहीं ब्रजनारी। देह गेह की सुरति बिसारी॥
यह मन मैं अनुमान कियौ तब। जप-तप-संजम-नेम करैं अब॥
बार-बार सविताहिं मनावैं[5]। नंद-नँदन पति देहु सुनावैं[6]॥
नेम-धर्म-तप-साधन कीजै। सिव सौं माँगि कृष्न पति लीजै॥

---

† यह पद (ना, का, रा) में नहीं है।
(१) विनय करति सब तुमते पायो यह कहि घरहि बहोरि—१६।
(२) सूर स्याम मन हरत सबन के लोचन परी ठगोरि—१६।
* (ना) रामकली। (का) बिलावल।
(३) राजै—१७। (४) इंद्र-धनुष भौंहैं जुग सोहैं—१६। (५) मनावत—१६। (६) सुभावत—१६।

बर्ष दिवस कौ नेम लेइ सब। रुद्रहिँ सेवहु मन-बच-क्रम अब॥
दृढ़ बिस्वास बरत कौं कीन्हौ। गौरी-पति-पूजन मन दीन्हौ॥
षट-दस-सहस जुरीँ सुकुमारी। ब्रत साधतिँ नीकैँ तन गारी॥
प्रात उठैँ जमुना-जल खोरैँ। सीत उष्न कहुँ अंग न मोरैँ॥
पति कैँ हेत नेम तप साधैँ। संकर सौं यह कहि अवराधैँ॥
कमल-पत्र मालूर चढ़ावैँ। नैन मूँदि यह ध्यान लगावैँ॥
हमकौं पति दीजै गिरिधारी। बड़े देव तुम हौ त्रिपुरारी॥
और कछू नहिँ तुमसौं माँगैँ। कृष्न-हेत यह कहि पालागैँ॥
ऐसैहिँ करत बहुत दिन बीते। प्रभु अंतरजामी मन चीते॥
एक दिवस आपुन आए तहँ। नव तरुनी अस्नान करतिँ जहँ॥
बसन धरे जल-तीर उतारी। आपुन जल पैठीँ सुकुमारी॥
कृष्न-हेत अस्नान करैँ जहँ। सबके[1] पाछैँ आपुन ह्वै तहँ॥
मीँजत पीठि प्रीति अति बाढ़ी। चकृत भईँ जुवतीँ सब ठाढ़ी॥
देखे नँद-नंदन गिरिधारी। ब्रत-फल प्रगट भए बनवारी॥
सकुचि अंग जल पैठि लुकावैँ। बार-बार हरि अंकम लावैँ॥
लाज नहीँ आवति है तुमकौं। देखत बसन बिना सब हमकौं॥
हँसत चले तब नंद-कुमार। लोगनि सुनवतिँ करतिँ पुकार॥
हार चीर लै चले पराई। हाँक दई कहि नंद-दुहाई॥
डारि बसन भूषन तब भागे। स्याम करन अब ढीठौ लागे॥
भागैँ कहाँ बचौगे मोहन। पाछैँ आइ गईँ तुव गोहन॥

---

(१) आपु गए सबके पाछे तहँ—२, ६, १६, १८, १६।

तन की सुधि-सम्हार कछु नाहीँ । बसन अभूषन पहिरति जाहीँ ॥
चीर फटे कंचुकि-बँद छूटे । लेत न बनत हार-लर टूटे ॥
प्रेम-सहित मुख खीझति जाहीँ । झूठहिँ बार-बार पछिताहीँ ॥
गईँ सबै तिय नंद महर-घर । जसुमति पास गईँ सब दर-दर[1] ॥
देखौ महरि स्याम के ये गुन । ऐसे हाल करे सबके उन ॥
चोली, चीर, हार बिखराए[2] । आपुन भागि इतहिँ कौँ आए ॥
जमुना-तट कोउ जान न पावै । संग सखा लिए पाछैँ धावै ॥
तुम सुत कौँ बरजहु नँदरानी । गिरिधर भली[3] करत नहिँ बानी ॥
लाज लगति इक बात सुनावत । अंचल छोरि हियौ दिखरावत ॥
यह देखत हँसि उठीँ जसोदा । कछु रिस, कछु मन मैँ करि मोदा ॥
आइ गए तिहिँ समय कन्हाई । बाहँ गही लै तुरत दिखाई ॥
तनक-तनक कर, तनक अँगुरियाँ । तुम जोबन भरीँ नवल बहुरियाँ ॥
जाहु घरहिँ तुमकौँ मैँ चीन्ही । तुम्हरी जाति जानि मैँ लीन्ही ॥
तुम चाहतिँ सो इहाँ न पैहौ । और बहुत ब्रज-भीतर लैहौ ॥
बार बार कहि कहा सुनावति । इन बातनि कछु लाज न आवति ॥
देखहु री ये भाव कन्हाई । कहाँ गई तब की तरुनाई ॥
महरि तुमहिँ कछु दूषन नाहीँ । हमकौँ देखि-देखि मुसुकाहीँ ॥
इनके[4] गुन कैसैँ कोउ जानै । औरै करत और धरि बानै[5] ॥
देन उरहनौ तुमकौँ आईँ । नीकी पहिरावनि हम पाईँ ॥
चलीँ सबै जुवती घर-घर कौँ । मन मैँ ध्यान करति हैँ हरि कौँ ॥

---

(१) दुरि दुरि—२ । डर-डर—६, १८ । अपडर डर—१६ । (२) दिखराए—१, २, ३, ११, १७, १६ । (३) करत नहीँ कछु कानी—१६ । (४) इनकौ मिस-१६ । (५) ठानै—१, २, ३, ११, १७ ।

बरष दिवस तप पूरन कीन्हे। नंद-सुवन कौं तन-मन दीन्हे ॥
प्रात होत जमुना फिरि आईं। प्रथम रहे चढ़ि कदम कन्हाई ॥
तीर आइ जुवती भईं ठाढ़ी। उर-अंतर हरि सौं रति बाढ़ी ॥
कह्यौ चलौ जमुना-जल खोरैं। अंग अंग आभूषन छोरैं ॥
चोली छोरैं हार उतारैं। कर सौं सिथिल केस निरवारैं ॥
इत-उत चितवति लोग निहारैं। कह्यौ सबनि अब चीर उतारैं ॥
बसन अभूषन धरे उतारी। जल-भीतर सब गईं कुमारी ॥
माघ-सीत कौ भीत न मानैं। षट ऋतु के गुन सम करि जानैं
बार-बार बूड़ैं जल माहीं। नैं कहुँ जल कौं डरपति नाहीं ॥
प्रातहिं तैं इक जाम नहाहीं। नेम धर्म हीं मैं दिन जाहीं ॥
इतनौ कष्ट करैं सुकुमारी। पति कैं हेत गुबर्धन-धारी ॥
अति तप करतिं देखि गोपाला। मन मैं कह्यौ धन्य ब्रज-बाला ॥
हरि अंतर्जामी सब जानी। छिन-छिन की बहु सेवा मानी ॥
ब्रत-फल इनहिं प्रगट दिखरावौं। बसन हरौं लै कदम चढ़ावौं ॥
तन साधन तप कियौ कुमारी। भज्यौ मोहिं कामातुर नारी ॥
सोरह सहस गोप-सुकुमारी। सबके बसन हरे बनवारी ॥
हरत बसन कछु बार न लागी। जल-भीतर जुवती सब नाँगी ॥
भूषन बसन सबै हरि ल्याए। कदम-डार जहँ-तहँ लटकाए ॥
ऐसौ नीप-बृच्छ बिस्तारा। चीर हार धौं कितक हजारा ॥
सबै समाने तरुवर डारा। यह लीला रची नंद-कुमारा ॥
हार चोर मान्यौ तरु फूल्यौ। निरखि स्याम आपुन अनुकूल्यौ ॥
नेम सहित जुवती सब न्हाईं। मन-मन सबिता बिनय सुनाई ॥

मूँदे नैन ध्यान उर धारे। नंद-नँदन पति होहिँ हमारे ॥
रबि करि विनय सिवहिँ मन लीन्हौ। हृदय माँझ अवलोकन कीन्हौं ॥
त्रिपुर-सदन त्रिपुरारि त्रिलोचन। गौरीपति पशुपति अघ-मोचन ॥
गरल-असन, अहि-भूषन-धारी। जटा धरन, सिर गंगा प्यारी ॥
करति बिनय यह माँगतिँ तुम सौँ। करहु कृपा हँसि कै आपुन सौँ ॥
हम पावैँ सुत-जसुमति कौ पति। यहै देहु करि कृपा देव, रति ॥
नित्य नेम करि चलीँ कुमारी। एक जाम तन कौँ हिम गारी ॥
ब्रज-ललना कह्यौ नीर जुड़ाईँ। अति आतुर ह्वै तट कौँ धाईँ ॥
जल तैँ निकसि तरुनि सब आईँ। चीर अभूषन तहाँ न पाईँ ॥
सकुचि गईँ जल-भीतर धाईं। देखि हँसत तरु चढ़े कन्हाईं ॥
बार-बार जुवती पछिताहीँ। सबके बसन अभूषन नाहीँ ॥
ऐसौ कौन सबनि लै भाग्यौ। लेतहु ताहि बिलंब न लाग्यौ ॥
माघ-तुषार जुवति अकुलाहीँ। ह्याँ कहुँ नंद-सुवन तौ नाहीँ ॥
हम जानी यह बात बनाई। अंबर हरि लै गए कन्हाई ॥
हौ कहुँ स्याम विनय सुनि लीजै। अंबर देहु कृपा करि जीजै ॥
थर-थर अंग कँपतिँ सुकुमारी। देखि स्याम नहिँ सके सम्हारी ॥
इहिँ अंतर प्रभु वचन सुनायौ। व्रत कौ फल दरसन सब पायौ ॥
कहा कहतिँ मोसौँ ब्रज-बाला। माघ-सीत कत होतिँ विहाला ॥
अंबर जहाँ बताऊँ तुमकौँ। तौ तुम कहा देहुगी हमकौँ ॥
तन मन अर्पन तुमकौँ कीन्हौ। जौ कछु हुतौ सु तुमकौँ दीन्हौ ॥
और कहा लैहौ जू हमसौँ। हम माँगतिँ हैँ अंबर तुमसौँ ॥
यह सुनि हँसे दयाल मुरारी। मेरौ कह्यौ करौ सुकुमारी ॥

जल तैं निकसि सबै तट आवहु । तबहिं भलैं अंबर तुम पावहु ॥
भुजा पसारि दीन ह्वै भाषहु । दोउ कर जोरि-जोरि तुम राखहु ॥
सुनहु स्याम इक बात हमारी । नगन कहूँ देखियै न नारी ॥
यह मति आपु कहाँ धौं पाई । आजु सुनी यह बात नवाई ॥
ऐसी साध मनहिँ मैं राखहु । यह बानी मुख तैं जनि भाषहु ॥
हम तरुनी तुम तरुन कन्हाई । बिना बसन क्यौं देहिँ दिखाई ॥
पुरुष जाति तुम यह कह जानौ । हा हा यह मुख मैं जनि आनौ ॥
तौ तुम बैठि रहौ जलहीं सब । बसन अभूषन नहिँ चाहतिँ अब ॥
तबहिँ देहुँ जल बाहर आवहु । बाँह उठाइ अंग दिखरावहु ॥
कत हौ सीत सहति सुकुमारी । सकुचि देहु जलही मैं डारी ॥
फरयौ कदम ब्रत फरनि तुम्हारैं । अब कह लज्जा करतिँ हमारैं ॥
लेहु न आइ आपुने ब्रत कौं । मैं जानत या ब्रत के घत कौं ॥
नीकैं ब्रत कीन्हौ तनु गारी । ब्रत ल्यायौ धरि मैं गिरिधारी ॥
तुम मन-कामनि पूरन करिहौं । रास-रंग रचि-रचि सुख भरिहौं ॥
यह सुनि कै मन हर्ष बढ़ायौ । ब्रत कौ पूरन फल हम पायौ ॥
छाँड़हु तुम यह टेक कन्हाई । नीर माहिँ हम गईं जड़ाई ॥
आभूषन सब आपुहिँ लेहू । चीर कृपा करि हमकौं देहू ॥
हा हा लागैं पाइ तिहारैं । पाप होत है जाड़नि मारैं ॥
आजुहिँ तैं हम दासी तुम्हारी । कैसैं दिखावैं अंग उघारी ॥
अंग दिखाएहिँ अंबर पैहौ । नातरु ऐसेहिँ दिवस गँवैहौ ॥
मेरे कहैं निकसि सब आवहु । थोरैंहिँ हमकौ भलौ मनावहु ॥
मुहाँचही तरुनी मुसुकानी । यह आपुन थोरी करि जानी ॥

जोइ-जोइ कह्यौ सु तुमकौं सोहै। आज तुम्हारी पटतर को है॥
हमरी पति सब तुम्हरैं हाथा। तुमहिं कहौ ऐसी ब्रजनाथा॥
तप तनु गारि कियौ जिहिं कारन। सो फल लग्यौ नीप-तरु-डारन॥
आवहु निकसि लेहु पट भूषन। यह लागै हमकौं सब दूषन॥
अब अंतर कत राखतिं हमसौं। बारंबार कहत हौं तुमसौं॥
गोपिनि मिलि यह बात बिचारी। अब तौ टेक परे बनवारी॥
चलहु न जाइ चीर अब लेहीं[1]। लाज छाँड़ि उनकौं सुख देहीं[2]॥
जल तैं निकसि तीर सब आईं। बार-बार हरि हरषि बुलाईं॥
बैठि गईं तरुनी सकुचानी। देहु स्याम हम अतिहिं लजानी॥
छाँड़ि देहु यह बात सयानी। वैसेहिं करौ कही जो बानी॥
कर कुच अंग ढाँकि भईं ठाढ़ी। बदन नवाइ लाज अति बाढ़ी॥
देहु स्याम अंबर अब डारी। हा हा दासी सबै तुम्हारी॥
ऐसैं नहीं बसन तुम पावहु। बाहँ उठाइ अंग दिखरावहु॥
कह्यौ मानि जुवतिनि कर जोरे। पुनि-पुनि जुवती करतिं निहोरे॥
धन्य-धन्य कहि श्री गोपाला। निहचै ब्रत कीन्हौ ब्रज-बाला॥
आवहु निकट लेहु सब अंबर। चोली हार सुरँग पाटंबर॥
निकट गईं सुनि कै यह बानी। तरुनी नगन-अंग अकुलानी॥
भूषन बसन सबनि कौं दीन्हौ। तिनकैं हेत कृपा हरि कीन्हौ॥
चीर अभूषन पहिरे नारी। कह्यौ तबहिं ऐसे बनवारी॥
तब हँसि बोले कृष्न मुरारी। मैं पति तुम मेरी सब प्यारी॥

---

(१) लीजै—१७, १६। (२) दीजै—१७, १६।

तुमहिँ हेत यह बपु ब्रज धार्‍यौ। तुम कारन बैकुंठ बिसार्‍यौ॥
अब ब्रत करि तुम तनुहिँ न गारौ। मैं तुमतैं कहुँ होत न न्यारौ॥
मोहिँ कारन तुम अति तप साध्यौ। तन मन करि मोकौं आराध्यौ॥
जाहु सदन अब सब ब्रज-बाला। अंग परसि मेटे जंजाला॥
जुवतिनि बिदा दई गिरिधारी। गईं घरनि सब घोष-कुमारी॥
बस्त्र-हरन-लीला प्रभु कीन्हौ। ब्रज-तरुनिनि ब्रत कौ फल दीन्हौ॥
यह लीला स्त्रवननि सुनि भावै। औरनि सिखवै आपुन गावै॥
सूर स्याम जन के सुखदाई। दृढ़ताई मैं प्रगट कन्हाई॥
॥७९६॥१४१७॥

यज्ञ-पत्नी-लीला

* राग बिलावल

† इक दिन हरि हलधर-सँग ग्वारन। गए बन-भीतर गोधन चारन॥
सकल ग्वाल मिलि हरि पैं आए। भूख लगी कहि बचन सुनाए॥
हरि कह्यौ जज्ञ करत तहँ बाम्हन। जाहु उनहिँ ढिग भोजन माँगन॥
ग्वाल तुरत तिनकैं ढिग आए। हरि हलधर के बचन सुनाए॥
भोजन देहु भए वै[1] भूखे। यह सुनि कै वे ह्वै गए रूखे॥
जज्ञ-हेत हम करी रसोई। ग्वालनि पहिलैं देहिँ न सोई॥
ग्वाल सकल हरि पैं चलि आए। हरि सौं तिनके बचन सुनाए॥
हरि हलधर सौं हँसि कही बानी। अबिगत की गति उन नहिँ जानी॥
तब ग्वालनि सौं कह्यौ बुझाई। तियनि पास तुम माँगहु जाई॥

---

* (ना) भैरो।
† यह पद (ल, का, के, क, पू) में नहीं है।
[1] हम—१८।

उनकैं हिय[1] दृढ़ भक्ति हमारी । मानि लेहिं वै बात तुम्हारी ॥
ग्वाल-बाल तीयनि पैं आए । हाथ जोरि कै सीस नवाए ॥
हरि भोजन माँग्यौ है तुमसौं । आज्ञा देहु कहैं सो उनसौं ॥
तिन धनि भाग आपनौ मान्यौ । जीवन जन्म सफल करि जान्यौ ॥
भोजन बहु प्रकार तिनि दीन्हौ । काहूँ अपनैं सिर धरि लीन्हौ ॥
ग्वालनि संग तुरत वै धाईं । अपने मन मैं हर्ष बढ़ाई ॥
काहूँ पुरुष निवारयौ आइ । कहाँ जाति है री अतुराइ ॥
तिन तौ कह्यौ न कीन्हौ कानी । तन तजि चली बिरह अकुलानी ॥
धन्य-धन्य वै परम सभागी । मिलीं जाइ सबहिनि तैं आगी ॥
तब हरि तिनसौं कहि समुझाई । सुनौ तिया तुम काहैं आई ॥
नारी पतिब्रत मानै जोई । चारि पदारथ पावै सोई ॥
तियनि कह्यौ जग झूठ सगाई । हम तौ हैं तुम्हरी सरनाई ॥
प्रभु कह्यौ पतिब्रत करौ सदाई । तुमकौं यहै धर्म सुखदाई ॥
प्रभु-आज्ञा तैं घरकौं आईं । पुरुष करत तिनि की बड़ियाईं ॥
धनि-धनि तुम हरि-दरसन पायौ । हम पढ़ि-गुनि कै सब बिसरायौ ॥
ब्रह्मादिक खोजत नित जिनकौं । साच्छात देख्यौ तुम तिनकौं ॥
वे हैं सकल जगत के स्वामी । और सबनि के अंतरजामी ॥
अब हम चरन सरन हैं आए । तब हरि उनके दोष छमाए ॥
ग्वालनि मिलि हरि भोजन कीन्हौ । भाव तियनि कौ मन धरि[2] लीन्हौ ॥
भक्ति भाव सौं जो हरि ध्यावै । सो नर नारि अभय-पद पावै ॥
यह लीला सुनि गावै जोई । हरि की भक्ति सूर तिहिं[3] होई ॥
॥८००॥१४१८॥

---

(१) मन है—१६ । (२) हरि —२ । (३) लहै—१६ ।

यज्ञ-पत्नी-बचन

* राग बिलावल

† जान देहु गोपाल बुलाई ।

उर की प्रीति प्रान कैं लालच, नाहिँन परति दुराई ॥
राखौ रोकि बाँधि दृढ़ बंधन, कैसैं हूँ करि त्रास ।
यह हठ अब कैसैं छूटत है, जब लगि है उर स्वास ॥
साँच कहौं मन बचन कर्म करि, अपने मन की बात ।
तन[1] तजि जाइ मिलौंगी हरि सौं, कत रोकत तहँ[2] जात ॥
अवसर गएँ बहुरि सुनि सूरज, कह कीजैगी[3] देह ।
बिछुरत[4] हंस बिरह कैं सूलनि, झूठे[5] सबै सनेह ॥८०१॥१४१९॥

* राग सारंग

‡ देखन दै पिय मदन गुपालहिँ ।

हा हा हो पिय पाइ लगति हौं, जाइ सुनन दै बेनु-रसालहिँ ॥
लकुट लिए काहैं तन त्रासत, पति बिनु-मति बिरहिनि बेहालहिँ ।
अति आतुर आरूढ़-अधिक-छबि, ताहि कहा उर है जम कालहिँ ॥
मन तौ पिय पहिलैं हीं पहुँच्यौ, प्रान तहीं चाहत चित चालहिँ ।
कहि धौं तू अपने स्वारथ कौं, रोकि कहा करिहै खल खालहिँ ॥
लेहि सम्हारि सु खेह[6] देह की, को राखै इतने जंजालहिँ ।
सूर सकल सखियनि तैं आगैं, अबहीं[7] मूढ़ मिलति नँद-लालहिँ ॥
॥८०२॥१४२०॥

---

* (ना) नट। (कॉ) सारग। (रा) धनाश्री, मलार।
† यह पद (के, पू) में नहीं है।
(१) देह छाँड़ि मिलहिं अबहीं छिन तोहिँ कैसी उतलात—१, ११, १५। (२) बन—२। पति—१६। (३) कीजियै—२। (४) बिछुरति सहति—१,११,१५। (५) छूटै—२,३,१८।

* (ना) काफी। (कॉ) धनाश्री।
‡ यह पद (का) में नहीं है। यह (के, पू, श्या) में रास-लीला के प्रसग में लिखा हुआ है। पर अन्यान्य उपस्थित प्रतियों में यज्ञ-पत्नी ही के वचन में मिलता है। अतः यहाँ इसी प्रसग में रखा जाता है।
(६) देह गहे की—३, १६, १९। (७) देखि (तैं) मूढ—२, ३,१६। देखि मूढ़ मिलिहौं—१९।

राग सारंग

† देखन दै बृंदाबन-चंदहिँ ।

हा हा कंत मानि बिनती यह, कुल-अभिमान छाँड़ि मति-मंदहिँ ॥
कहि क्यौं भूलि धरत जिय औरै, जानत नहिँ पावन नँद-नंदहिँ ।
दरसन पाइ आइहौं अबहीँ, करन सकल तेरे दुख-दंदहिँ ॥
सठ समुझाएहुँ समुझत नाहीँ, खोलत नहीँ कपट के फंदहिँ ।
देह छाँड़ि प्राननि भई प्रापत, सूर सु प्रभु-आनँद-निधि-कंदहिँ ॥

॥८०३॥१४२१॥

राग कल्यान

‡ रति बाढ़ी गोपाल सौँ ।

हा हा हरि लौँ जान देहु प्रभु, पद परसति हौँ भाल सौँ ॥
सँग की सखी स्याम-सन्मुख भईँ, मोहि परीँ पसु-पाल सौँ ।
पर-बस देह, नेह अंतरगत, क्यौँ मिलौँ नैन-बिसाल सौँ ॥
सठ हठ करि तूही पछितैहै, यहै भेँट तोहिँ[१] बाल सौँ ।
सूरदास गोपी तनु तजिकै, तन्मय भई नँद-लाल सौँ ॥

॥८०४॥१४२२॥

* राग सारंग

§ पिय जनि रोकहि जान दै ।

|| हौँ हरि-बिरह-जरी जाँचति हौँ, इती बात मोहिँ दान दै ॥

---

† यह पद केवल (वे, गो, जौ) है।

‡ यह पद केवल (वे, गो,) मे है।

(१) है—११। मोहिँ—१५।

* (ना) कल्यान। (के, पू) केदारा। (काँ) धनाश्री।

§ यह पद (के, पू) मेँ रास-लीला-प्रसंग मेँ पाया जाता है। पर अन्यान्य उपस्थित प्रतियोँ मेँ यह यज्ञ-पत्नी ही के वचनों मेँ मिलता है; अतः यह इसी प्रसग मेँ रखा गया है।

|| यह चरण (के, पू) मेँ नहीँ है।

बैन[1] सुनौं, बिहरत बन देखौं, इहिँ सुख हृदय सिरान दै ।
पाछैँ जो भावै सोइ कीजो, साँच कहति हौं आन दै ॥
जो कछु कपट किए[2] जाँचति हौं, सुनहु कथा यह कान दै ।
मन क्रम बचन सूर अपनो प्रन, राखौंगी तन-प्रान दै ॥८०५॥१४२३॥

* राग बिलावल

† हरि देखन की साध भरी ।
जान न दई स्याम सुंदर पै सुनि साँई[3] तैँ पोच करी ॥
कुल-अभिमान हटकि हठि राखी, तैँ जिय मैँ कछु और धरी ।
जज्ञ-पुरुष तजि करत जज्ञ-बिधि, तातैँ कहि कह चाढ़ सरी ? ॥
कहँ लगि समुझाऊँ सूरज सुनि, जाति मिलन की औधि टरी ।
लेहु सम्हारि देह पिय अपनी, बिनु प्राननि सब[4] सौंज धरी ॥८०६॥
॥१४२४॥

* राग बिलावल

‡ हरिहिँ मिलत काहे कौं घेरी[5] ।
दरस[6] देखि आवौं श्रीपति कौ, जान देहु हौं होति हौं चेरी ॥
पालागौं[7] छाँड़हु अब अंचल, बार-बार बिनती करौं तेरी ।
तिरछौ करम भयौ पूरब कौ, प्रीतम भयौ पाइ की बेरी ॥
यह लै देह मारु सिर अपनैँ, जासौं कहत कंत तुम मेरी ।
सूरदास सो गई अगमनै, सब सखियनि सौं हरि-मुख हेरी ॥८०७॥
॥१४२५॥

---

(१) बेनु सुने देखे मन बिहरत यह सुख हूँ सु जुड़ान दै—६, १७ । (२) करौ पिय हमसौं—६, १७ ।
* (ना) गौरी ।
† यह पद (का, के, पू) मेँ नहीँ है ।
(३) सोई—१, ११ । (४) यह सत्रै परी—१६ ।
* (ना) गूजरी ।
‡ यह पद (का, के, पू) मेँ नहीँ है ।
(५) फेरी—१,११,१५ । (६) देखौं वदन जाइ—१, ११, १५ । (७) हा हा कंत कहति पा लागति—१६ ।

* राग सारंग

† जान दै स्यामसुँदर लौं आजु ।
सुनि हो कंत लोक-लज्जा तैं, बिगरत है सब काजु ॥
राखौ रोकि पाइ बंधन कै, अरु रोकौ जल नाजु ।
हौं तौ तुरत मिलौंगी हरि कौं, तू घर बैठौ गाजु ॥
चितवति हुती झरोखैं ठाढ़ी, किये मिलन कौ साजु ।
सूरदास तनु त्यागि छिनकु मैं, तज्यौ कंत कौ राजु ॥८०८॥१४२६॥

राग कान्हरौ

‡ आजु दीपति दिव्य दीपमालिका ।
मनहु कोटि रबि चंद्र कोटि छबि मिटि जो गई निशि कालिका ॥
गोकुल सकल विचित्र मणि मंडित सोभित झाक झब झालिका ।
गज-मोतिन के चौक पुराय बिच बिच लाल प्रबालिका ॥
बर शृंगार बिरचि राधा जू चली सकल ब्रज बालिका ।
झलमल दीप समीप सौंज भरि लेकर कंचन थालिका ॥
करि प्रगट मदन मोहन पिय थकित बिलोकि बिसालिका ।
गावत हँसत गवाय हँसावत पटकि पटकि करतालिका ॥
नंद-द्वार आनंद बढ़्यौ अति देखियत परम रसालिका ।
सूरदास कुसुमनि सुर बरषत कर संपुट करि मालिका ॥
॥८०९॥१४२७॥

* (के, पू) नट ।
† यह पद केवल (वे, के, गो, जौ, पू) मे हैं ।
‡ यह पद केवल (गो, क) मे हैं ।

राग कान्हरौ

† सुरभी कान्ह जगाय खरिकहि बल मोहन बैठे हैं हठ री।
पिस्ता दाख बदाम छुहारा खुरमा खाझा गूँझा मटरी॥
घर-घर तैं नर-नारि मुदित मन गोपी ग्वाल जुरे बहु ठट री।
टेरि टेरि जब देति सबनि कौं, लै लै नाम बुलाइ निकट री॥
देतिं असीस सकल ब्रजभामिनि यसुमति देति हरषि बहु पटरी।
सूर रसिक गिरिधर चिरजीवौ नंद महर कौ नागर नट री॥८१०॥१४२८॥

गोबर्धन-पूजा तथा गोबर्धन-धारण

* राग बिलावल

‡ नंद[1] महर सौं कहति जसोदा, सुरपति की पूजा बिसराई।
जाकी कृपा बसत ब्रज-भीतर, जाकी दीन्ही भई[2] बड़ाई॥
जाकी कृपा दूध-दधि-पूरन, सहस मथानी मथति सदाई।
जाकी कृपा अन्न-धन मेरैं, जाकी कृपा नवौ निधि आई॥
जाकी कृपा पुत्र भए मेरैं, कुसल रहौ बलराम कन्हाई।
सूर नंद सौं कहति जसोदा, दिन[3] आए अब करहु चँड़ाई॥८११॥१४२९॥

राग गौरी

§ येई हैं कुलदेव हमारे।
काहूँ नहीं और मैं जानति, ब्रज गोधन रखवारे॥
दीपमालिका के दिन पाँचक[4] गोपनि कहौ बुलाई।
बलि[5] सामग्री करैं चँड़ाई, अबहीं कहौ सुनाई॥

---

† यह पद केवल (गो, क) मे है।

* इस सस्करण मे गोबर्धन पूजा तथा गोवर्धन-धारण के प्रसग एक ही मे मिलाकर रखे गए है। गोप-गोपियों की बातचीत के पद अलग रख दिए गए हैं। इसी प्रकार देवस्तुति के पद भी अलग कर दिए गए है। इस विभाग के करने मे पदों का क्रम अन्य प्रतियों से कुछ भिन्न करना पड़ा है।

‡ यह पद (श्या) मे नही है।

(१) नद राइ—२। (२) भली—२। (३) पूजा दिन आयौ नियराई—२।

§ यह पद (ना, ल. का, वृ, काँ, रा, श्या) मे नही है।

(४) आए—६। (५) भली समग्री करहि ..—६।

लईं बुलाइ महरि महरानी, सुनतहिं आईं धाई।
नंद-घरनि तब कहति सखिनि सौं, कत हौ रही भुलाई॥
भूलीं कहा, कहौ सो हमसौं, कहति कहा डरपाई।
सूरदास सुरपति की पूजा, तुम सबहिनि बिसराई॥८१२॥१४३०॥

राग गौरी

† चौंकि परीं सब गोकुल-नारी।
भली कही सबही सुधि भूलीं, तुमहिं करी सुधि भारी॥
कह्यौ महरि सौं करौ चँड़ाई, हम अपनैं घर जाति।
तुमहूँ करौ भोग सामग्री, कुल-देवता अमाति॥
जसुमति कह्यौ अकेली हौं मैं तुमहु संग मोहिं दीजौ।
सूर हँसतिं ब्रज-नारि महरि सौं, ऐहैं साँच[1] पतीजौ॥८१३॥१४३१॥

राग कल्यान

‡ कहि मोहिं भली कीन्ही महरि।
राज-काजहिं रहौं डोलत, लोभ ही की लहरि॥
छमा कीजौ मोहिं, हौ प्रभु तुमहिं गयौ भुलाइ।
ग्वाल सौं कहि तुरत पठयौ, ल्याउ महर बुलाइ॥
नंद कह्यौ उपनंद ब्रज के, अरु महर बृषभानु।
अबहिं जाइ बुलाइ आनौ, करत दिन अनुमान॥
आइ गए दिन अबहिं नेरैं, करत मन यह ज्ञान।
सूर नंद बिनै करत, कर जोरि सुरपति-ध्यान॥८१४॥१४३२॥

---

† यह पद (ना, ल, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है।

(1) साँझ—६, १७।

‡ यह पद (ना, ल, का, वृ, काँ, रा, श्या) में नहीं है।